

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_180771

UNIVERSAL
LIBRARY

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. **H 82/P 646** Accession No. **G. H. 3378**

Author **पिल्लाई, मेक्कोल्ल परमेश्वरन्.**

Title **गीतानन्द गुरु-पू. पी. जी. वासुदेव**

This book should be returned on or before the date
last marked below.

1962

“शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार की ओर से भेंट”

गीतानन्द

(पाँच अंकों का एक मंचीय नाटक)

लेखक

मेक्कोल्ला परमेश्वरन पिल्ललाई

अनुवादक

पी० जी० बासुदेव

संपादक, केरलपत्रिका तिरुवनन्तपुरम-१

प्रकाशक

रामनारायणलाल बेनी प्रसाद

प्रकाशक तथा पुस्तक-विक्रेता

इलाहाबाद - २

मूल्य दो रुपये

प्रथम संस्करण

यह पुस्तक सर्वप्रथम १९६० ई. में प्रकाशित तथा श्री रामबाबू धनपाल द्वारा १९६० ई. में पुनः प्रकाशित हुई।

दो शब्द

‘गीतानन्द’ नाटक के शिल्पी श्री सेक्कोल्ला परमेश्वरन मिल्ललाई कैरली भाषा के सर्वश्रेष्ठ लेखकों में से हैं। आपने कई नाटक, विबन्ध अप्रति लिखकर कैरली के कलेवर को सजाया है। हाल ही में कुन्दन बय्यार के ह्रास पर आपने एक थीसिस लिखी जिस पर केरल विश्वविद्यालय ने आपको एम० लिट् की उपाधि प्रदान की है।

भारत में रागात्मक समन्वय के आधार पर आपने प्रस्तुत नाटक की रचना प्रभावशाली ढंग से की है। अनुवादक, केरल पत्रिका के संपादक श्री बी० जी० वासुदेव हैं जिन्होंने कई रचनाएँ हिन्दी तथा मसमालम् में लिख कर मुद्रयस्ति प्राप्त की है। इस सुन्दर रचना को हिन्दी-जमझ के सामने प्रस्तुत करते में मुझे बड़ी खुशी है। आशा है सहृदय सज्जन इसका स्वागत करेंगे।

के० भास्करन नायर

भूमिका

India's Quest for Unity—इस विषय को ध्यान में रखते हुए यह नाटक लिखा गया है ।

भारत की आज की भावात्मक स्थिति पर विचार करने पर एक ऐसी जनता का चित्र भावना में खिच गया, जो धर्म और जाति के कांटे चुभने से पीड़ित—धनमद और स्वार्थ की मुट्ठी में जर्जरित—अधिकार दुर्मोही तथा कथित नेताओं की प्रवचनाओं में पड़ कर यथार्थ जनतंत्र की महत्ता को समझने में असमर्थ और जिसका राष्ट्रीय ज्ञान और देशप्रेम मुरझाया हुआ है—और इस तरह अपनी शांति और एकता का विनाश करके विकल हो रही है ।

यह विचार भी मेरे मन में उठा कि यथार्थ प्रेम को—अत्यन्त उत्कृष्ट मनुष्य स्नेह को—भाग्य करके जो राष्ट्रीय आयोजन किया जायेगा उसी में उक्त अस्वस्थता के निवारण का मार्ग दिखाई देगा ।

इन विचारों का सम्मिलन ही 'गीतानन्द' के इतिवृत्त का आधार है ।

तिरुवनन्तपुरम
३-७-६२

}

लेखक

A WORD MORE

I am extremely grateful to Dr. K. Bhaskaran Nair, professor of Hindi, University college, Trivandrum, for the goodness with which he has made arrangements for the translation of this play into Hind by an efficient writer like Mr. Vasudev and also for effecting the publication of the translation by one of the most celebrated publishers in India, Messers Ram Narain Lal Beni Prasad of Allahabad.

Dr. Nair has also been good enough to go through the translation and to introduce me and my book to the Hindi Reading Public. I express my heart-felt thanks to him.

I also thank Mr. Vasudev for undertaking the translation within such a brief period and in such praiseworthy manner.

'Gitanand' is my seventh published work in the field of Drama. After the publication of my 'Navina Nātakadarśam' in 1940, which has been prescribed as a standing text-book for the M. A. Degree Exam. of the Kerala University for the last 20 years. I have been making attempts at writing different kinds of plays to illustrate the various types of dramas mentioned in the book, and 'Gitanand' is one among the lot. My humble attempts have met with the kind approval and encouragement of scholars in Kerala; and I pray that the same encouragement and approval may come from the Hindi Reading Public also.

10/12/62 }
Trivandrum }

THE AUTHOR

कथा-पात्र

पुरुष	कुमार मेनोन पुरुषोत्तमन तंपी पाञ्चुनायर पुष्पांगद डाक्टर अलीहुसैन स्वामी गीतानन्द
स्त्रियाँ	श्री कुमारी अम्मा पार्वती अम्मा डाक्टर नेबीसा बिमला देवी रमा देवी
काल	आधुनिक (१९६२)
स्थान	तिरुवनंतपुरम
समय	पहला अंक : एक दिन शाम के ५॥ बजे से दूसरा अंक : उसी दिन शाम के ७॥ बजे से तीसरा अंक : दूसरे दिन सबेरे ७ बजे से चौथा अंक : उसी दिन शाम के समय पाँचवा अंक : चौथे अंक के बाद—

पहला अंक

काल : आधुनिक—१९६२]

[स्थान : तिरुवनन्तपुरम्]

[तिरुवनन्तपुरम् नगरी के एक मुख्य मुहल्ले में बना 'कुमार मन्दिर' का भवन । दो विंगों और तीन तल्लों का सुन्दर बैठकोंवाला नया महल । धनपुष्टि से प्राप्त सभी सुख-सुपासाएँ और भंगिमाएँ अपनाये ।

कुमार मन्दिर की बायीं विंग का विशाल कक्ष । एक ओर हट कर एक बड़ा कैबिनेट मेज । मेज पर पुस्तकें, दवात और कलम जैसी पढ़ाई की चीजें । मेज के चारों ओर तीन-चार कुर्सियाँ । दीवार पर एक घड़ी; दो-एक नक्शे । पढ़ाई का कमरा है ।]

मेज के लंबे पार्श्व पर रमादेवी और चौड़े पार्श्व पर पुष्पांगद बैठे हैं । उनके पीछे एक दरवाजा और उसके पास ही एक खिड़की है जिनके किवाड़ लगे हैं । यह दरवाजा अन्दर की तरफ़ खुलता है । दूसरी तरफ़ भी एक दरवाजा और उसके पास एक खिड़की है । यह दरवाजा बाहर की तरफ़ खुलता है ।

रमादेवी कुमार मेनोन की ज्येष्ठ पुत्री हैं । सत्रह साल की कालेज में पढ़ने वाली लड़की । शरीर बहुत ही हृष्ट-पुष्ट; बीस-बाईस साल की लगती है । चेहरे पर कौमार्य और यौवन का संघर्ष स्पष्ट दिखाई दे रहा है । रंगीन, रक्त झलका देने वाला भोला-भाला गोल चेहरा । घने, लंबे बाल ढंग से पीछे बांध रखे हैं । लंबी, खूबसूरत आँखों से और घनी भौहों से कुल-मर्यादा और ऊपर उठी टेढ़ी नाक से और लाल रंग के पतले ओठों से अलहड़पन, साहस और गर्व प्रगट हो रहे हैं । लहंगा, ग्लाउज और हाफ़साड़ी पहने हैं । तमतमाता फूला हुआ चेहरा । आँखें लाल-लाल । रुंधा हुआ गला । वह रो रही थी ।

पुष्पांगद २८ साल का सुन्दर युवक । ऊँचा कद । आकर्षक ललाट और चमकती हुई आँखें, वह अच्छा बुद्धिमान है । घुंघुराले बाल बिना सँवारे बिखरे

पड़े हैं। साफ़ खुली आवाज़ ; साफ़ उच्चारण, बातें करने का ढंग आकर्षक; मधुर हँसी। एच० एम० कालेज के एकनामिक्स के प्रोफ़ेसर और रमादेवी के होमट्यूटर हैं। खहर की घोती और खहर का कुर्ता पहने। लगता है कि कपड़े पहनने में भी लापरवाह हैं।]

पुष्पांगद यह चेहरा कैसा फूल कर लाल हो गया ! रोओ मत ! मम्मी या डैडी आकर देख लें तो क्या समझेंगे ?

रमादेवी (भरी आवाज़ में) समझेंगे कि मैं रो रही हूँ, और क्या ?

पुष्पांगद रोना-हँसना छोड़कर काम चला लेना उसी में होशियारी है। बड़े-बड़े काम निकालने का यही ढंग है !

रमादेवी आज ही मैं मम्मी से सारी बातें बता देती हूँ।

पुष्पांगद तुम सोचती हो कि वे उसे समझ सकेंगी ? संभव है कि इससे अधिक अनर्थ और कष्ट ही हो।

रमादेवी लेकिन इधर कुछ दिनों से एक गीतानन्द स्वामी के कारण मम्मी में जाने कैसा परिवर्तन आ गया है !

पुष्पांगद इतना तो मैं जानता हूँ कि वे प्रतिदिन गीतानन्दाश्रम में जाया करती हैं।

रमादेवी रोज़ सबेरे चार बजे के पहले उठ कर स्नान करती हैं। दो घंटे के करीब जप-ध्यान में बिताती हैं। प्रायः चिन्ता में निमग्न रहती हैं। रंग-ढंग में बड़ा परिवर्तन आ गया है। इसीलिए तो मैं इतना साहस दिखा रही हूँ।

पुष्पांगद जो हो, जल्दी में कुछ कर न डालना।

रमादेवी (डुली होकर) ज़रा सोच लीजिए, कैसी विकट परिस्थिति है !

पुष्पांगद यह बात नहीं कि मैं समझ नहीं रहा हूँ।

रमादेवी फैक्टरी की इस हड़ताल और इलेक्शन के इस हो हल्ले में बड़े मामा ने चाल चलने की ठानी है। अभी आ धमकेंगे

ब्याह का दिन तय करने । उसे पक्का करके ही वे आगे बढ़ना चाहते हैं । सारी जायदाद का अलग-गोला करने और मेरा हिस्सा बाँट कर अलग करने की वे जल्दी कर रहे हैं । ऐसा लगता है कि पिताजी जीभ न हिलायेंगे ।

पुष्पांगद बड़ी पुत्री के भविष्य को सुरक्षित करने में विरोध की क्या बात है ?

रमादेवी अगर यही इरादा होता तो मुझसे कुछ पूछ-ताछ न करते ?

पुष्पांगद कोठी खड़ी करके पुत्री से कहेंगे कि इसमें आकर रह लो ।

रमादेवी ऐसे ही जाकर रहने वाली लड़कियाँ भी और होंगी ।

पुष्पांगद खानदानी औरतें यही किया करती हैं ।

रमादेवी (उत्तेजित होकर) लेकिन उनको जल्दी ही यह ज्ञात हो जायेगा कि इस पीढ़ी की जीवटवाली लड़कियाँ उस तंग चहारदीवारी के अन्दर सिमटी नहीं रहेंगी ।

पुष्पांगद अच्छा, मैं इस मनोभाव को पसन्द करता हूँ ।

रमादेवी यह कोई नहीं कहेगा कि इस स्वतंत्र भारत में किसी युवती को उसके हृदयेश्वर के साथ रह कर जीवन बिताने की स्वतंत्रता नहीं है ।

(विमलादेवी पीछे के दरवाजे पर आकर रुक जाती हैं । रमा और पुष्पांगद उन्हें नहीं देख पाते)

[विमलादेवी कुमार मेनोन की सबसे छोटी बहन हैं । २२ साल की अवस्था । सुन्दर, सुडौल शरीर । बड़ी-बड़ी लंबी आँखों से और रक्तिम अशरों के कोनों से भोली शरारत का लक्षण प्रगट हो रहा है । बिल्कुल लापरवाह । बड़ी बातूनी और चतुर । साईकालजी विज्ञान के एम० ए० फाइनल में पढ़ रही हैं । मामूली सूती साड़ी और ब्लाउज पहने हैं जो उस पर अच्छी फबती है । हाथ में एक कापी और पेंसिल लिये हैं ।]

- पुष्पांगद** विपरीत परिस्थिति में बड़े-बड़े महान आदर्शवादी सारो शक्ति लगा कर लड़ेंगे ।
- रमादेवी** (उत्तेजित होकर) लेकिन साहस के साथ काम करने पर कोई क्या खाक करेगा ? पिताजी के प्रति सरसम्मा बुआ का रुख जानते ही हैं न ?
- पुष्पांगद** न-न-न ! धीरे से बोलो । यह सब मैंने सुना है ।
- रमादेवी** दिल्ली में मेडिकल कालेज के एक मुसलमान डमांस्ट्रेटर से शादी करके आज वे सुख से जीवन बिता रही हैं । अब उनके एक बच्चा भी है ।
- पुष्पांगद** समाज के कीचड़ लगे हाथों से बुरी तरह मार खायी होगी । अब और खानी पड़ेगी, जरूर । अपने सगे भाई भी छोड़ देंगे, है न ?
- रमादेवी** इन सब बातों की उपेक्षा करने का साहस भी तो हो !
- पुष्पांगद** कमी तो उसी की है ।
- रमादेवी** यह कैसे ताड़ गये कि उसकी कमी है ?
- पुष्पांगद** यह रोना-धोना देख कर; और कैसे ?
- रमादेवी** आप तो अभी बड़े मामा और पिताजी को पहचान नहीं पाये । कोई उपाय ढूँढ़ने में कुछ जल्दी न करना । मैं उसके बारे में सोच भी नहीं सकती । (बिकार के अधीन होती है)
- पुष्पांगद** रमादेवी, उत्तेजित न हो । यह तो सोच लेने की बात है ।
- रमादेवी** सोचने के लिए शांति भी तो चाहिए । और मुझे शांति मिले भी कैसे ? (नाक छिनकती और आंसू पोंछती है)
- पुष्पांगद** छिः ! कितनी जल्दी भाव बदल जाते हैं । हम सोच-समझ कर कुछ करेंगे । धीरज रखो ।
- बिमलादेवी** (आगे बढ़ कर) यहाँ यह क्या हो रहा ? (दोनों चौक

कर मुड़ पड़ते हैं) गुरु और शिष्या मिलकर जैसे किसी नाटक का रिहर्सल कर रहे हों ।

रमादेवी ओह ! यह तो छोटी बुआ हैं । हम तो घबड़ा गये ।

विमलादेवी ऊफ् ! यह क्या ? तुम्हारा चेहरा तो डूबता हुआ सूर्य-बिंब-सा लगता है । (पुष्पांगद की ओर देखती है)

रमादेवी (सिसक-सिसक कर रोती है) मैं, हम, मास्टरजी—

पुष्पांगद (बिना किसी संकोच के उसे मदद पहुँचाने के लिए) मैं तो ग्रीक इतिहास पढ़ा रहा था ।

विमलादेवी (आश्चर्य के साथ) ग्रीक इतिहास ! तो ?

पुष्पांगद मैं उस प्रसंग का सविस्तार वर्णन कर रहा था जिसमें आइफ्र-जनिया की बलि चढ़ाने को उसका पिता आगमनन उपक्रम कर रहा था । यह सुनकर बेचारी रो पड़ी ।

रमादेवी (धीरज धर कर) इतना दुःख हुआ कि मैं सम्हाल न सकी । (दुःखपूर्ण स्वर में) एक पिता को अपनी लाड़ली पुत्री की बलि चढ़ाने की कैसे सूझी ?

विमलादेवी (दुःख का बहाना करके) ऊफ् ! कैसे सूझी ? (मुस्कराती हुई) कैसा नाजुक प्रसंग रहा होगा ! लाचार लड़कियों को रलाने के लिए, यही न मास्टर ?

[श्रीकुमारी अम्मा आती हैं । कुमार मेनॉन की स्त्री हैं । ३३ साल की रूपवती । २५ से ज्यादा नहीं लगतीं । किसी को यह सन्देह भी नहीं होगा कि सत्रह और चौदह वर्ष की दो लड़कियों की यह माता हैं । अच्छा गोरा रंग । संपुष्ट शरीर । ऊँचा कद । अलकों की माला सुन्दर ललाट पर लहरा उठती है । नागिन जैसे लंबे घने बाल ढंग से सँवार कर पीछे बाँध रखे हैं जिसमें चमेली की माला खोस दी है । चमकती कजरारी आँखों में बड़ा सलोनापन है । लंबी नाक और गाढ़े लाल-लाल अधर और मूँछों व परिचिकुर की जगह गाढ़ी

काली छाया देने वाले रोशनों के अकुर सहज प्रभुता का गर्व बढ़ा देते हैं । कीमती रेशम की साड़ी और ब्लाउज पहने हैं । ललाट पर सुन्दर चन्दन का तिलक और उसके बीचोंबीच सिन्दूर की बिन्दी मुख के सौन्दर्य और आकर्षण को बढ़ा रहे हैं । पैरों में जरीदार चप्पलें, हाथ में कीमती प्लास्टिक बैग जिसका साड़ी का-सा रंग है । कहीं जाने के लिए तैयार हैं ।]

श्रीकुमारी अम्मा क्यों ! यहाँ यह क्या हो रहा है ? विमला क्या यहाँ भी पहुँच गयी ? मैं सदा कहती हूँ न कि इस कमरे में जहाँ बच्चों को पढ़ाया जाता है, न जाना ।

विमलादेवी और मैं सदा उसे मानती भी तो हूँ !

.। अम्मा तो अब ?

विमलादेवी इधर से निकल रही थी तो मैंने रमा को बैठ कर रोते देखा । यह जान लेने के लिए कि बात क्या है, मैं इधर चली आयी !

श्रीकुमारी अम्मा रमा क्या रो रही थीं ? (रमा की ओर देख कर) ऊफ् ! इसकी पलकें कैसे फूल गयीं ? तुम क्यों रो रही थीं ?

रमादेवी (सधीर) मास्टर जी इतिहास पढ़ा रहे थे !

श्रीकुमारी अम्मा (मतलब न समझ कर) क्या चीज ?

रमादेवी रूमी इतिहास ! उसमें—

पुष्पांगद ग्रीक इतिहास !

रमादेवी हाँ, हाँ, ग्रीक इतिहास, मुझसे भूल हुई !

(विमलादेवी हँस पड़ती हैं)

श्रीकुमारी अम्मा (गंभीर होकर) ग्रीक हो या माइक, कुछ भी हो, लेकिन तुम रोयीं क्यों ?

रमादेवी (भरे हुए गले से) यह सुन लेने पर कि दुष्ट माता-पिता के कारण उनकी लाड़ली पुत्री को जो दुःख और कष्ट सहन करने पड़े—(रोती हुई) यह सोच कर कि मेरा भी यही हाल है,

मैं अनजाने में ही रो पड़ी । (सिसक-सिसक कर रोती है ।
विमलादेवी पुष्पांगद की ओर देखकर दुःख का बहाना
करके अधर फुलाकर, नाक छिनक कर रोती हैं । श्रीकुमारी
अम्मा दो-एक निमेष तक बेखबर गहरी चिंता में
डूबी रहती हैं और फिर सहसा ठहाका मार
कर हँस पड़ती हैं तथा रमादेवी से सफरणा बातें
करती हैं ।)

श्रीकुमारी अम्मा बुद्धू कहीं को, रोओ मत । तुम्हारी स्थिति उसकी तरह
कभी नहीं होगी । यह सब तुम्हारे सिवाय और किसके
लिए है ? (पुष्पांगद से) अभी आपके जाने का समय हुआ ?

विमलादेवी (सहज रीति से) करीब-करीब !

श्रीकुमारी अम्मा (गुस्से में आकर) मैंने तुमसे नहीं, मास्टर से पूछा है
पुष्पांगद विमलादेवी की बात सही है ।

विमलादेवी अब तो साढ़े पाँच बजे हैं, इसीलिए मैंने कहा ।

पुष्पांगद ओह ! मैं तो भूल गया । छः बजे एक स्पेशल क्लास रखा
है । (घबड़ा कर उठ खड़े होते हैं)

श्रीकुमारी अम्मा मैं गीतानन्दाश्रम तक जा रही हूँ ।

पुष्पांगद तो एक लिफ्ट मिलेगी ?

रमादेवी क्या मास्टर अभी जा रहे हैं ?

पुष्पांगद आज स्पेशल क्लास के अतिरिक्त और भी कुछ जरूरी काम
है । अभी याद आयी । (रमादेवी से) सन्देह हो तो नोट कर
के रखना । कल सबेरे आ जाऊँगा ।

श्रीकुमारी अम्मा कल सबेरे मास्टर के आने की जरूरत नहीं है ।

रमादेवी यह क्यों ?

पुष्पांगद कल ?

श्रीकुमारी अम्मा कल सबेरे स्वामीजी इधर पधार रहे हैं ।

पुष्पांगद ओह !

रमादेवी (गुस्ते में आकर) इसलिए ?

पुष्पांगद (रमादेवी के सवाल पर परदा करते हुए) सुना है कि वे यहाँ से परसों जा रहे हैं ।

श्रीकुमारी अम्मा हाँ, दो महीने के लिए तीर्थयात्रा पर ।

पुष्पांगद यह भी सुना है कि भक्तजनों की एक मंडली भी—स्त्रियों और पुरुषों की—साथ जा रही है ।

श्रीकुमारी अम्मा उनकी महत्ता का क्या कहना है ! इतनी महत्ता न जाने उन्हें कैसे प्राप्त हुई ! इस नगर के सभी लोगों को वे एक तरह से नहीं तो दूसरी तरह से बदलते जा रहे हैं ।

विमलादेवी 'नगर के सभी लोगों को' ऐसा कहना कहाँ तक ठीक है, भाभी ?

श्रीकुमारी अम्मा (तिरस्कार के साथ) सामान्य विवेक रखने वाले सभी लोगों को—हाँ, विमलादेवी जैसी एकाध साईकलाजी एम० ए० वालियों को छोड़कर ! क्यों मास्टर ?

पुष्पांगद संस्कृत के वे बड़े विद्वान हैं ।

श्रीकुमारी अम्मा वे तो संस्कृत में महामहोपाध्याय परीक्षा में—(अचानक-रुक जाती हैं)

पुष्पांगद परीक्षा की कोई बात सुनने में नहीं आयी । लेकिन विज्ञान संबंधी सभी आधुनिक विषयों के वे अच्छे जानकार हैं । जो चर्चा-समितियाँ आश्रम में होती हैं सब मनोरंजक और लोगों के हित की होती हैं ।

विमलादेवी उनकी कड़ी आलोचना करते हुए बहुत से लोगों को मैंने सुना है । कहते हैं, उनके दो स्त्रियाँ थीं और एक घोर हत्या करने के बाद अब वेष बदल कर—

श्रीकुमारी अम्मा (गुस्ते में आकर बीच में) देखो, अगर तुम कुछ कहना चाहो तो मुझे कहो; गालियाँ सुनाना चाहो तो मुझे सुनाओ; चाहो तो थप्पड़ भी लगा दो । लेकिन वे मेरे गुरुदेव हैं, उनके खिलाफ एक शब्द भी मैं सुन नहीं सकूंगी । (पुष्पांगद से) मैं यही बता रही थी कि कल यहाँ सुदर्शन पूजा आदि होगी, स्वामी जी ने कृपा करके यहाँ पधारने की सहमति दी है, आपको कल आने की जरूरत नहीं है ।

पुष्पांगद जैसी मरजी ।

रमादेवी (चिढ़ कर) स्वामी की सुदर्शनपूजा और मास्टर के आने में क्या संबंध है ? खूब कहा ! अभी बहुत पोशन शेष रह गया है । और कहती हो कि मास्टर के आने की जरूरत नहीं है । (बूढ़ स्वर में) मास्टर जरूर आयेंगे । डैडी ने तो यही कहा है कि मास्टर दोनों बार आया करें और किसी तरह मुझे फर्स्ट डिवीजन में पास कराने का यत्न करें ।

श्रीकुमारी अम्मा नहीं आने को कहा तो नहीं आना; बस !

बिमलादेवी भाभी, परीक्षा सिर पर आ गयी है ।

श्रीकुमारी अम्मा (बड़े निर्दय स्वर में) अगर मैं उसे कोई परीक्षावाली बनाना नहीं चाहती तो ?

रमादेवी छोटी बुआ ने मतलब की बात बतायी । इस पर इतनी बिगड़ती क्यों हो ?

बिमलादेवी (जैसे आप ही आप) नापसन्द की बातें नाकिस लगती हैं !

श्रीकुमारी अम्मा परीक्षावालिओं की खूबियाँ हम देख तो रहे हैं । पोनकुन्नुम्मेल खानदान की स्त्रियाँ परीक्षावालियाँ बनने की अपेक्षा—

पुष्पांगद (बीच में) ऐसी बेकार बातों में क्यों फँसें ? हम चलें !

रमादेवी (दुढ़ स्वर में) सो तो ठीक है, लेकिन कल सबेरे सात बजे तक मास्टर इधर न आ जायें तो खुद रमादेवी मास्टर के यहाँ पहुँच जायेंगी ।

श्रीकुमारी अम्मा (गुस्से में आकर) अच्छा, और ? (जैसे ऐसा होने नहीं-देंगी)

रमादेवी (अनसुनी करके) मास्टर जी का घर तो छोटा है । लेकिन पढ़ने-पढ़ाने की अच्छी सुविधा है । और मास्टर जी की छोटी बहन आनन्दवल्ली कितनी उदार हैं ! मास्टरजी के बाप और माँ दोनों भी बड़े अच्छे हैं । मैं खुद उधर ही आ जाऊँगी । सुना न मास्टरजी ? जरूर मैं वहाँ पहुँच जाऊँगी ।

पुष्पांगद (हँसते हुए) आ जाना । न मुझे कोई आपत्ति है, न घर पर कुछ असुविधा ही ।

श्रीकुमारी अम्मा (बाहर जाने के लिए आगे बढ़ती हुई) यह सब रमा अपनी तरफ से नहीं बोल रही है । शिक्षा का नतीजा है । इस घर में उलटी गंगा बह रही है । सारी चीजें उलट-पुलट पड़ी हैं ।

पुष्पांगद (जान-बूझ कर) विमलादेवी तो हँसी में कुछ बता रही थी ! मेरा ख्याल है कि वह बड़ी समझदार और अकलमंद है ।

श्रीकुमारी अम्मा आप भी कुछ जानते हैं ? वह तो चालाकी का सार है । चुहिया की तरह सेंध लगा-लगा कर धूमती है । तीन बहनें हैं, एक दूसरी से बढ़ कर । स्वर्ग को नरक बना देने में इनको कुछ संकोच नहीं होता । रमा के पिता के लिए बहनें दूध और शहद के समान हैं । हर एक से प्राप्त 'पुरस्कार' अपनी जेब में दबाये वे खुशी मनाते हैं । इस घर के अन्दर जरा भी चैन नहीं है । आश्रम में जाकर स्वामीजी की सेवा में

दो-एक घंटे बैठने से ज़रा शांति मिलती है । (श्रीकुमारी अम्मा पुष्पांगद को साथ लेकर चली जाती हैं । निमेष भर का अवकाश । विमलादेवी रमादेवी की ओर देखती हुई खड़ी रहती हैं)

रमादेवी बुआ, आप इस तरह क्यों घूर कर देख रही हैं ? सारी बातें सुन लीं न ?

विमलादेवी (गंभीरता के साथ) सब कुछ मैं सुन भी लेती हूँ और देख भी लेती हूँ ।

रमादेवी आपका हृदय बड़ा विशाल है, यह मैं जानती हूँ ।

विमलादेवी तुम्हारी प्रशंसा के लिए हार्दिक धन्यवाद !

रमादेवी मैंने बहुत कुछ सोचा, लेकिन मुझे ऐसा लगता है कि मैं कुछ गलती कर रही हूँ । छोटी बुआ, आप यह क्या सोच रही हैं ?

विमलादेवी रमा, सरसा जीजी का हाल तुमसे थोड़े ही छिपा है ।

रमादेवी खूब अच्छी तरह जानती हूँ । इधर कुछ दिनों से मैं रोज़ उनका स्वप्न देखा करती हूँ ।

विमलादेवी (बड़ी उत्सुकता के साथ) ऐसा ? कुछ मुझे भी सुनाती क्यों नहीं ?

रमादेवी आज बड़े तड़के मुझे लगा कि सरसा बुआ ने आकर मुझे गले से लगाकर अपनी गोद में समेट लिया । चौक कर मैं उठ बैठी !

विमलादेवी आश्चर्य !

रमादेवी क्यों ?

विमलादेवी जीजी तो इधर ही आ रही हैं ।

रमादेवी इधर ? इधर आ रही हैं ? कब ?

विमलादेवी हाँ, इधर ही । दो-एक दिन में आ जायेंगी ।

- रमादेवी** यह बुआ को कैसे मालूम हुआ ?
- बिमलादेवी** मैंने लिखा था कि आइए, आना ही चाहिए ।
- रमादेवी** (साश्चर्य) तब क्या आप सरसा बुआ को चिट्ठी भी लिखा करती हैं ?
- बिमलादेवी** ऐसा नहीं । यह पहली बार लिखा था । यह देखना चाहती थी कि लिखने का क्या नतीजा होगा ।
- रमादेवी** यह क्यों ?
- बिमलादेवी** कुछ विशेष कारण है; पीछे बता दूंगी । अब रहने दो । क्या तुम जानती हो कि भैया का सरसा जीजी के प्रति कितना प्रेम था ?
- रमादेवी** अच्छी तरह जानती हूँ ।
- बिमलादेवी** बल्कि सरसा जीजी ने जो गलती की सो भी तुम जानती हो ?
- रमादेवी** वह भी जानती हूँ ।
- बिमलादेवी** मास्टर पुष्पांगद की सारी बातें भी तुम जानती हो न ?
- रमादेवी** छोटी बुआ, मास्टरजी कितने योग्य और महान व्यक्ति हैं ! ऐसे व्यक्ति को एकाध तंग सामाजिक व्यवस्थाओं के नाम पर दूर हटा देना बड़ी मूर्खता है न ?
- बिमलादेवी** इस बात का निर्णय न तो यह छोटी बुआ कर सकती हैं, न बुआ की यह नन्हीं-सी भतीजी ।
- रमादेवी** जो हो, यह बात निश्चित है कि उन लोगों के विरुद्ध जो अन्यायपूर्वक कुछ निर्णय कर डालते हैं, मानवमात्र की स्वतंत्रता और संसार की भलाई के लिए मैं और वे एक साथ मिल कर लड़ पड़ेंगे । हमारी यह धारणा दृढ़ है कि समाज के विरुद्ध किए जाने वाले संग्राम को ही प्रगति कहते हैं ।
- बिमलादेवी** (शांत होकर) बहुत खूब ! लेकिन बुरा न मानना, मैं एक बात साफ़ बता देती हूँ ।

रमादेवी स्पष्ट कथन वेदनाजनक होने पर भी मैं उससे सन्तुष्ट ही रहूँगी ।

विमलादेवी इधर कुछ दिनों से मैं तो तुम दोनों के व्यवहारों और मनो-वृत्तियों का एक व्यावहारिक मनोवैज्ञानिक की सूक्ष्मता के साथ निरीक्षण करती और प्रत्येक बात को अपनी कापी में नोट करके कुछ विशेष उद्देश्य से उसका अध्ययन करती आ रही हूँ ।

रमादेवी (उत्सुकता के साथ) ऐसा ? खूब रहा ! और ?

विमलादेवी मैं कुछ निष्कर्ष पर पहुँच गयी हूँ ।

रमादेवी कैसे निष्कर्ष पर ? कुछ हर्ज न हो तो बताइए ।

विमलादेवी सुन कर कहीं बिगड़ तो नहीं जाओगी ?

रमादेवी ज़रा भी नहीं बिगड़ूँगी । बता दीजिए ।

विमलादेवी भाषा, वेष, भाव और व्यवहार सबका और प्रत्येक का मैंने अध्ययन कर लिया ।

रमादेवी सच पूछिए तो आपने बड़े मार्के का काम कर लिया । और ?

विमलादेवी कोई प्रेम-पाश में फँसा हुआ पुरुष पोशाक पहनने में, बाल सँवारने में, बातें करने के ढंग में या देखने-ताकने में ऐसी बेपरवाही कभी नहीं दिखाता । (रमादेवी हँसती है) हँसी में तुम इस बात को उड़ा न देना । यह सब व्यावहारिक मनोविज्ञान के मूल तत्व मात्र हैं । ये कितनी गवेषणाओं के निष्कर्ष हैं । इनसे अनुमान करना पड़ता है कि—

रमादेवी (बीच में) छोटी बुआ, आप यह समझ लें कि वे कोई मामूली आदमी नहीं हैं । वे बाहरी तड़क-भड़क से कभी विचलित होने वाले नहीं हैं । सदा वे कहा करते हैं कि वास्तविक महत्व आन्तरिक है । मालम पड़ता है कि छोटी बुआ ने

जो मनोवैज्ञानिक-टिप्पणियाँ लिखी हैं उनका शीर्षक “एक असाधारण मनुष्य का प्रेम” रखना अच्छा होगा ।

विमलादेवी लेकिन प्रेम में साधारण या असाधारण का कुछ भेद-भाव नहीं होता । जैसे हमारे महाकवियों ने वर्णन किया है, काम के पुष्प-बाणों से जो ऋषि-मुनि काम-वश होकर नाचने-गाने लगते थे, निरे जंगली भीलों से तनिक भी बीच नहीं रखते थे ।

रमादेवी हाँ, यह ठीक है कि जैसे हम चित्रपटों पर देखते हैं दौड़ना-कूदना, लुक-छिपकर नाचना-गाना आदि मानवता को लजा देने वाली चेष्टाएँ वे थोड़े ही करते हैं । मेरा पूरा विश्वास कि वे मुझसे हृदयंगम और दिव्य प्रेम करते हैं ।

विमलादेवी (जैसे रमादेवी बड़े भ्रम में पड़ गयीं) रमा, तुमने अभी दुनिया नहीं देखी । नादान लड़की हो ।

रमादेवी छोटी बुआ, मैंने सिर्फ सत्रहवीं में कदम रखा है, तब भी कम से कम सत्ताईस की क्षमता रखती हूँ ।

विमलादेवी लेकिन एक तुम्हारी क्षमता से काम चले तब न ?

रमादेवी वे भी क्षमता से काम लेंगे ।

विमलादेवी इसका प्रमाण ?

रमादेवी उनके प्रेम पर मेरा पूरा विश्वास है ।

विमलादेवी और यह भी तुम जानती हो कि उस प्रेम के लिए तुम्हें घर-बार सब कुछ छोड़ देना होगा ?

रमादेवी हाँ, छोड़ देना होगा ।

विमलादेवी इस तरह सब कुछ छोड़कर जब तुम वहाँ पहुँच जाओ तब तुम्हारा अच्छा स्वागत भी तो होना चाहिए । कहीं कोई कसर हुई तो—

रमादेवी (बात काट कर) एक नहीं, सौ बार उन्होंने मुझसे कहा है कि वर्तमान दूषित सामाजिक व्यवस्थाओं और तंग मनो-वृत्तियों का मुकाबिला हम जैसे शिक्षित और संस्कृति के पुजारी ही कर सकते हैं । मेरा विश्वास है कि उनसे अच्छा स्वागत मिलेगा ।

विमलादेवी एक उनकी बात मैं नहीं कह रही हूँ ।

रमादेवी फिर ?

विमलादेवी उनका परिवार—माँ-बाप, भाई-बंधु, सगे मित्र, उनके समाज के लोग—

रमादेवी उनके माता-पिता बड़े सज्जन हैं । आप जानती हैं कि वे मुझे कितना प्यार करते हैं ?

विमलादेवी तुम्हारी जगह अगर मैं होती—

रमादेवी तो क्या करतीं ? बताइए ।

विमलादेवी तो पुष्पांगद के माँ-बाप की आज्ञा लेती, मुन्दरी बदलती और तब आगे बढ़ती । उल्टे इंच भर आगे नहीं बढ़ती ।

रमादेवी ऐं; ऐं ! यही ! सिर्फ़ एक बाह्य कर्म का आप लोग इतना मूल्य लगा रहे हैं ?

विमलादेवी इन सब का मूल्य बहुत बड़ा है रमा । कम से कम उनके परिवार की स्वीकृति ले लो ; उसके बिना अगर तुम आगे बढ़ो और किसी से तनिक भी विरोध हो जाय तो—ज़रा सोच कर देखो. . . .

रमादेवी यह कौन-सी बड़ी बात है, छोटी बुआ ?

विमलादेवी जो हो, अब तनिक भी देर न करना, यही मेरी राय है ।

रमादेवी अगर कल उनकी मुन्दरी मेरी छिगुनी पर नहीं रही तो पूछना ।

विमलादेवी (खुशो से) यही तो । तुम्हारी क्षमता ज़रा देख लूँ । इतना भी अगर तुम न कर सको तो—(बाहर साइकिल की घण्टी बज उठती है) कौन है वह ?

[दोनों खिड़की के पास पहुँचती हैं । बाहर “विमलादेवी के नाम तार” । खिड़की में से एक लिफाफा विमलादेवी हाथ में ले लेती हैं और डाकिये के कागज़ पर हस्ताक्षर करके वापस देती हैं । फिर घबड़ायी हुई लिफाफा खोलती हैं ।]

रमादेवी कहाँ से आया है ? किसने भेजा है ? (विमलादेवी के पास आती है)

विमलादेवी (खुशी से) दिल्ली से; सरसा जीजी ने भेजा है । आज ८-१० बजे जीजी पहुँच जायेंगी । साथ में पति और बच्चा भी रहेगा । रमा, तुम्हारा सपना बड़ा विचित्र है । मन की शक्तियाँ बड़ी अनोखी हैं ।

रमादेवी यह तो बड़ी विचित्र बात है !

विमलादेवी मैं जाकर भैया से कह दूँ ? न जाने, भैया के मन में इसकी क्या प्रतिक्रिया हो । तुम्हारे बड़े मामा भैया से मिलने के लिए बड़ी देर से बैठक में बैठे हैं । उनके पास जाने से पहले भैया से मिलना है ।

रमादेवी (गुस्से में आकर) ऊफ़ ! आ गये ! वह पिताजी का दुश्मन है । बड़े मामा नहीं, दुश्मन मामा कहिए । बरबादी के बीज उसी ने बो दिये हैं । लेकिन (बुढ़ स्वर में) इस मनुष्य की इच्छा कभी पूरी नहीं होगी, निश्चय ही ।

विमलादेवी लेकिन यदि जल्दी कुछ भी न किया गया तो वे अपना उल्लू सीधा कर लेंगे । परिस्थिति हमारे प्रतिकूल है ।

रमादेवी (बुढ़ स्वर में) सब कुछ जल्दी हो जायेगा छोटी बुआ ! देखती भर रहिए । मैं तो किसी से नहीं डरती । कुछ भी

हो, करने के लिए मैं तैयार हूँ । आज ही मैं माताजी से सब बता दूँगी ।

बिमलादेवी और कल ही मुन्दरी बदलना ।

रमादेवी निस्संदेह ! (खुशी से) और सरसा बुआ भी तो आ रही हैं । यह शकुन अच्छा है ।

बिमलादेवी तुमको ऐसा जान पड़ता है ?

रमादेवी अवश्य ! उनका सान्निध्य मुझे और धीरज दिला रहा है ।

बिमलादेवी क्या यहाँ की आबोहवा उनके लायक होगी ?

रमादेवी (कुछ सोचकर) ऊफ् ! (सोचती है ।)

बिमलादेवी नहीं मालूम, जीजी का भैया किस तरह स्वागत करेंगे ?

रमादेवी इससे पहले कि पिताजी उस दुश्मन मामा के पास न पहुँच जायें, आप उनसे मिल लें । देखें वे क्या जवाब देते हैं ।

बिमलादेवी मैं घबड़ा रही हूँ ।

रमादेवी धीरज रखिए । सब ठीक ही जायेगा ।

बिमलादेवी जाकर देख लूँ । (जाती है)

(परवा गिरता है)

दूसरा अंक

समय—रात्रि ७॥ बजे]

[स्थान—कुमार मन्दिर

[कुमार मन्दिर के नीचे के तल्ले का बैठक । यहीं संदर्शकों का स्वागत किया जाता है । एक खुला बरामदा । कुरसियाँ और एक गोल मेज रखी हुई है । इसी बरामदे से बैठक में लोग आते-जाते हैं । बैठक का एक दरवाजा और उसकी अगल-बगल की दो खिड़कियाँ बरामदे में खुलती हैं । बैठक की दूसरी-तरफ़ दो और दरवाजे हैं । दरवाजों और खिड़कियों पर परदे लगे हैं ।

कमरे के बीच में एक बड़ा मेज है जिस पर कीमती मेजपोश बिछा है । चारों ओर तोशकदार कुरसियाँ पड़ी हैं । एक ओर कोने में फोनस्टैंड पर फोन रखा है । उसकी बगल में एक छोटी मेज और कुरसी रखी है ।

पिछली दीवार पर गांधीजी, नेताजी और नेहरूजी के चित्र टंगे हैं । बायीं ओर एक नायर-स्त्री का पुराने ढंग का पूर्णकाय चित्र रखा है, जिस पर फूलों की माला चढ़ी हुई है । बायीं ओर गृहस्वामी कुमार मेनोन और उनकी पत्नी श्री-कुमारी अम्मा का तैल चित्र रखा है जिसमें दोनों एक दूसरे से सट कर खड़े हैं । प्रत्येक चित्र पर नीली बत्तियाँ जल रही हैं, जिससे चित्र की रेखाएँ स्पष्ट दिखाई दे रही हैं । पीछे की ओर चित्रों के तले एक कीमती घड़ी रखी है जिसमें ७॥ बजे हैं ।

कमरे के बीचोबीच ऊपर छत पर से बिजली का बड़ा फ़ानूस लटका हुआ है, जिसमें कई छोटी-छोटी बत्तियाँ जल रही हैं । एक पंखा धीरे-धीरे घूम रहा है ।

परदा उठता है । कुमार मेनोन और पुरुषोत्तमन तंपी बातें कर रहे हैं । मेज के पीछे तोशकदार कुरसी पर कुमार मेनोन और मेज की दूसरी ओर की कुरसी पर पुरुषोत्तमन तंपी बैठे हैं ।

कुमार मेनोन की उम्र ३७ साल की है । मोटा-ताजा शरीर । कूले हुए गाल । अत्याशा प्रगट करने वाली बड़ी-बड़ी आँखें । ललाट के दोनों ओर, आँखों के नीचे और दाँयें गाल के बीच में स्पष्ट दिखाई देने वाले वसन्तरोग के दाग उनके गोरे चेहरे को जरा भी भद्दा नहीं बना रहे हैं । मूँछें नहीं हैं; और से एक बस साफ़ किया हुआ चेहरा । चेहरे पर प्रसन्नता का स्थाई भाव । आदमी क्रूर या कुष्ट नहीं है । खहर का 'मुष्टु' और खहर का रेशमी बुशकोट पहने हैं । सुनहरी जंजीर की घड़ी कलाई पर बाँधे हैं । बातें करते समय बार-बार घड़ी देखने की आदत-सी पड़ गयी है । उँगलियों में सोने की मुन्दरियाँ पहने हैं । गले में सोने की जंजीर । उसका हिस्सा बुशकोट के गले से, जिसकी बटन नहीं लगी है, बाहर दिखाई दे रहा है ।

कुमार मेनोन "कुमार टायर वर्क्स" नामक बड़ी भारी रबर फ़ैक्टरी के मालिक हैं । पीरिमेट में उनके और उनकी पत्नी श्रीकुमारी अम्मा के अधीन एक हजार एकड़ से ज्यादा का रबर का बगीचा और चाय का एक बाग है । इधर कुछ दिनों से राजनैतिक स्वार्थों को आगे रख कर "मेनोन" की उपाधि काट दी है । अब केवल कुमार के नाम से प्रसिद्ध हैं । कुछ ही दिन हुए खहर पहनने लगे हैं । आगामी इलेक्शन में नाम-निर्देशन दिया है । आदमी बड़े महत्वाकांक्षी हैं ।

पुरुषोत्तमन तंपी कुछ दिनों से वकालत से अवकाश लिये हैं । एडवोकेट थे; भूतपूर्व नगर-पिता थे । कुमार मेनोन की पत्नी श्रीकुमारी अम्मा के बड़े भाई हैं । ५४ साल की अवस्था, गंजा सिर, कटी सफ़ेद मूँछें । बड़ी फ़ेम का चश्मा, गोल ठुड्डी, चिपटा चेहरा, दिल में बँठ जाने वाला रूप, जरा-ग्रस्त, बाल पके, अधिक अवस्था के लगते हैं ।

तोंदवाला मोटा-ताजा शरीर । सफ़ेद महीन 'मुष्टु' और पुराने ढंग का खुला हुआ कोट । गले में कोट के ऊपर जरीदार शाल लपेटे हैं । अपने को विनोदप्रिय मानते हैं । रह-रहकर कहकहा लगा कर हँसना और पुराने ढंग की मसखरी करना उनका स्वभाव-सा हो गया है । यह प्रमाणित करने की चेष्टा

में हैं कि खुद बड़े आदमी हैं और अपने सब विचार सही हैं, बड़ा हल्ला मचा देते हैं । बातचीत के बीच तो अचानक ऐनक उतार कर, आंखें तरेर कर, नाक खोल कर गुस्सा करने वाले तंपी के आगे जाने से उनके सभी भाई-बन्धु डरते हैं । विशेष कर इधर कुछ दिनों से कुमार मेनोन के लीगल एड-वाइजर और इलेक्शन-सेक्रेटरी होने के नाते से मेनोन के परिवार पर भी उनका प्रतिशय प्रभाव होने लगा है । तंपी ने यह निश्चय कर रखा है कि बड़े पुत्र श्रीधर के साथ मेनोन की बड़ी पुत्री रमादेवी का विवाह करा लेंगे और इस तरह दोनों परिवारों का संबंध और दृढ़ बना लेंगे ।]

समय (पहले अंक के बाद करीब घण्टे भर के अन्तर)

पुरुषोत्तमन तंपी आप ज़रा शांत रहें मिस्टर ! पुरुषोत्तमन तंपी की भावना-शक्ति पर तनिक विश्वास भी तो कर लें । पुरानी सही, पर अभी उसका पानी ज़रा भी कम नहीं हुआ है । मेरा ध्येय स्पष्ट है और मार्ग भी । सब को मैं एक ही घाट पर लगा दूंगा ।

कुमार मेनोन चर्चा करने से जटिल बातें भी सरल हो जाती हैं ।

पुरुषोत्तमन तंपी लेकिन, एक बात ! पुरुषोत्तमन तंपी उन लोगों में नहीं हैं, जो कुछ कहकर हल्ला मचा देते हैं । सुविधा और समय को देखकर मैं मर्म पकड़ लेता हूँ । नतीजा यह होगा कि विपक्षी चाहे बड़े से बड़ा खूनी हाथी ही क्यों न हो, जहाँ के तहाँ भौंचक्क होकर दाँत ज़मीन पर टेक देगा । सच ! (हँसी)

कुमार मेनोन और—और—? (घड़ी देखते हैं)

पुरुषोत्तमन तंपी आप ज़रा सोच कर देखिए । इस गीतानन्द परमानन्द महात्मा की दाढ़ी जो पकड़ी, कैसा रहा ? (कहकहा लगा कर हँसते हुए) यह सब हाथ की सफ़ाई है । कच्चे पत्ते को कैची के आगे कर दीजिए तो कैसा होगा ? (हँसते हैं)

- कुमार मेनोन** श्रीकुमारी को वापस आने दीजिए । ज़रा देख लूँ कि क्या हुआ ?
- पुरुषोत्तमन तंपी** देखने-ताकने की कोई बात भी हो । ऐसी कोई बात है ही नहीं । इस पर मेरा पूरा विश्वास है । कितने ही सिर इस नगर के उसके चरणों पर झुकने लगे हैं ! दस हजार से कम न होंगे, सच ! लोग सूँघ-सूँघ कर जान लेते हैं कि उसके मन में क्या है और उसके अनुसार नाच उठते हैं । (अब बाज़ धीमे करके) ये भक्त कहलाने वाले निरे मूर्ख नहीं तो और कौन हैं ? अंधे कहीं के ! उनमें भी स्त्री जाति की भक्तियों ! (हँसते हैं) आपके आदरणीय बहनोई चिनगारी पाचु पर इसकी बड़ी प्रतिक्रिया होगी, ज़रूर !
- कुमार मेनोन** (गुस्ते में आकर) नमकहराम ! बदमाश ! उसका नाम सुन कर मेरी देह में आग लग गयी ! वही इन सारी तकलीफों का कारण है । (उत्तेजित होकर) इन ग़रीब श्रमजीवियों को उकसा कर और उनसे हड़ताल करा कर यह सब नाश-नष्ट उसी का काम है । उसका ध्येय दूषित है । वह उसे न पाये । इसके लिए कुछ भी करने को मैं तैयार हूँ ।
- पुरुषोत्तमन तंपी** उत्तेजित न हों मिस्टर ! यह युग बड़ा विलक्षण है । अपनी सन्तान ही उलटे विद्रोह करने या गला काट गिराने में संकोच नहीं करती । फिर एक बहिन के पति की क्या बात है ? उससे ज़रा मिल लूँ ! देखूँ, वश में आयेगा भी या नहीं—फिर दूसरा कदम रखेंगे ।
- कुमार मेनोन** आगे क्या करेंगे ? प्रति दिन क्या प्रति घण्टे घांटे पर घाटा और कष्ट पर कष्ट होते रहते हैं । अब हम और क्या कर पायेंगे ! यह सब दौड़-धूप आप खुद देख रहे हैं !
- पुरुषोत्तमन तंपी** आप उत्तेजित न हों मिस्टर ! मैंने कह तो दिया कि सब ठीक-ठाक कर दूँगा ? ज़रूरत पड़ने पर—(बाँत पीसते हैं)—

कुमार मेनोन जरूरत पड़ने पर— ?

पुरुषोत्तमन तंपी (आवाज धीमी करके) यही कि उसका गला घोंट दूंगा, और क्या ? बहुत से लोग मेरी मदद करने के लिए हैं । कानोंकान खबर न लगेगी । (कुमार मेनोन के चेहरे पर बेचैनी) क्या आप रोना चाहते हैं ? ह ! ह ! ह ! मिस्टर अब और आगे बढ़ना होगा । खैर; इस बात को रहने दीजिए । अब बिजनेस पर आ जायें ! हम तो नाते-रिश्ते के ठहरे । तब भी आखिर जाकर कुछ कहना-वहना पड़ा तो अच्छा न रहेगा । क्यों ?

कुमार मेनोन हाँ ! ठीक तो है !

पुरुषोत्तमन तंपी तब हमारे धन-पत्र की बात ! मेरी बातें आप भूले तो नहीं । जहाँ तक बन पड़े जल्दी ही रजिस्टर करा लेना चाहिए ।

कुमार मेनोन अब उसकी क्या पड़ी है ?

पुरुषोत्तमन तंपी (मुंह फुला कर) किसने कहा कि उसकी नहीं पड़ी है ? नींव का पत्थर मजबूत रहे, तभी उसके ऊपर जो खड़ा होगा, दृढ़ होगा । जो कुछ करना हो समय पर कर लें । बे-रोक-टोक क्रम-क्रम से आगे बढ़ें । यही तो चाहिए !

कुमार मेनोन मैं तो यही पूछ रहा हूँ कि इतनी जल्दी क्यों ?

पुरुषोत्तमन तंपी आप यह न सोचें कि मैं यह सब किसी स्वार्थ के लिए बता रहा हूँ । और एक बात; पीरिमेट का बगीचा पूरा रमा के नाम लिखा दें । यही भला है ।

कुमार मेनोन मैं राजी हूँ ।

पुरुषोत्तमन तंपी और पीरिमेट वाले बैंगलों की जल्दी ही मरम्मत करा लें । शादी के बाद रमा और श्रीधर वहाँ जाकर रहेंगे । अभी से

सब ठीक करके रखना अच्छा है । ऐसा करने से जो लाभ होगा सो भी जानते हैं ?

कुमार मेनोन लाभ क्या होगा ?

पुरुषोत्तमन तंपी रबर और इलायची के बगीचे आज अनाथ पड़े हैं । देख-भाल कर आदमी आ जायेंगे । जौहरी भला तो मोती भला ! (हँसते हैं) और यह सब बता रहा हूँ, बाल-बच्चों के भविष्य का ख्याल करके । और वह कागज़ जिस पर वे तारीखें लिखी हैं, आप के पास हैं ?

कुमार मेनोन लोजिए, यहाँ है ।

पुरुषोत्तमन तंपी शुभस्य शीघ्रं, यही महद्वचन है । मेरी राय है कि उनमें पहली तारीख को ही हो जाये ।

कुमार मेनोन इलेक्शन से भी पहले ? इतनी जल्दी— ?

पुरुषोत्तमन तंपी (बात काट कर) इलेक्शन और ब्याह में क्या संबंध ? एक ओर वह चलेगा और दूसरी ओर यह । यही नहीं, कुछ लोगों को हमारी तरफ़ लाने का यह अच्छा उपाय भी है ।

कुमार मेनोन श्रीकुमारी से ज़रा पूछ लूँ ?

पुरुषोत्तमन तंपी (हल्के भाव से) श्रीकुमारी किसी बात पर अपनी अलग राय भी रखती हैं ? फूलिशगूस ! ऐसी एक भी गजमूर्खी मैंने इस दुनिया में नहीं देखी । क्यों मुंह चिड़ा रहे हैं ? आप की पत्नी बन जाने के कितने वसन्तों के पहले से श्री कुमारी मेरी बहन लगती हैं ? (हँसते हैं)

कुमार मेनोन रमा को भी सूचना देनी चाहिए । उसकी राय भी जान लेनी चाहिए । (घड़ी में देखते हैं)

पुरुषोत्तमन तंपी (हल्की हँसी हँसते हैं)

कुमार मेनोन क्यों, क्या बात है ?

पुरुषोत्तमन तंपी (गंभीर स्वर में) उससे छोटी उमा की राय भी ले लें । इस परिवार में डेमोक्रेटिक सोशलिज्म की स्थापना करनी चाहिए । ह ! ह ! ह ! इसके लायक जमाना है ! (हँसते हैं) अच्छा, अगर वह सहमत नहीं हुई तब ? यह सब ड्राप करेंगे ?

कुमार मेनोन ऐसा कुछ नहीं—हमें—मैं तो यही कहता हूँ—

पुरुषोत्तमन तंपी (हल्के भाव से) आखिर इसमें क्या रखा है कि राय पूछते फिरे । जन्मपत्रियों की मैंने जाँच करायी । कुञ्जगुण्णि आशान की राय है कि ऐसी पत्रियाँ बहुत ही कम देखने में आयी हैं जो इस तरह मिल जाती हैं । आशान के समान दूसरा ज्योतिषी केरल में या भारत भर में नहीं है । और श्रीधर ! उसके पास उसकी पहली पत्नी की आधे से अधिक लाख की सम्पत्ति है । उसको प्रैक्टिस भी अच्छी है । और हम रिश्ते के लोग हैं । दूसरी बातों पर माथा-पच्ची करने की जरूरत नहीं है । सो, समझ लीजिए कि ब्याह की बात पक्की हो गयी । अब हम दूसरी जरूरी बातों पर विचार करें । अब जल्दी ही—

[बिमला देवी पीछे के दरवाजे का परदा हटा कर अन्वर झाँकती हैं । उसे देखकर पुरुषोत्तमन तंपी अपनी बातें रोक लेते हैं । बिमला की ओर देखकर ।]

कस्तूर बिल्ली की तरह यह क्यों बार-बार आती है ; जाती है ; झाँकती है ? (बिमलादेवी से) आखिर तुम चाहती क्या हो ? इधर आ जाओ । (बिमला-देवी आगे आती हैं) हम जब बातें करते हैं, लुग छिप कर क्यों सुनना चाहती हो ? (वशना हटा कर और आँखें तरेर कर देखते हैं) क्या चाहती हो तुम ?

बिमला देवी (बिना किसी संकोच के) भया को एक बात की याद दिलाना चाहती थी । (घड़ी में देखती है)

- कुमार मेनोन** (घड़ी में देखकर गंभीरता के साथ) मुझे किसी बात की याद नहीं दिलाना । सब बातें मुझे याद है ।
- पुरुषोत्तमन तंपी** (बिमला से) कुछ भी हो, तुम्हारा केस माननीय जज ने खारिज कर दिया है । अदालत के छूटने तक तुम हवालात में रखी जाओगी । अब जब तक मैं यहाँ से चला न जाऊँ, तुम्हारा मुँह बाहर न दिखाई दे । हाँ, भीतर चली जाओ । (बिमला को उबास लौटते हुए देख कर) इसकी क्या उमर है मिस्टर ?
- कुमार मेनोन** बाईस साल की ।
- पुरुषोत्तमन तंपी** (गंभीर होकर) भरी जवानी है ! अब इसे इस तरह रखना अच्छा नहीं है !
- कुमार मेनोन** उसको पढ़ाई पूरी हो जाय, यही सोच रहा हूँ ।
- पुरुषोत्तमन तंपी** अब— ?
- कुमार मेनोन** एम० ए० फाइनल साइकालजी में पढ़ रही है !
- पुरुषोत्तमन तंपी** इतना नहीं पढ़ाना चाहिए था । सब बेवकूफी ही कर डालते हैं ।
- कुमार मेनोन** बेवकूफी कैसी ?
- पुरुषोत्तमन तंपी** बात यह है कि लड़कियाँ जितना अधिक पढ़ेंगी; योग्य वर मिलना उतना ही अधिक कठिन होगा । हथिनी से हाथी ही मिलाया जाता है । (हँसते हैं) और भी एक बात है । लड़कियाँ जितनी अधिक पढ़ती हैं उतनी अधिक स्वच्छन्द और उद्दण्ड हुआ करती हैं ।
- कुमार मेनोन** ऐसा होना कुछ जरूरी नहीं है ।
- पुरुषोत्तमन तंपी** (क्रूरता का भाव प्रगट करते हुए) जो मार अभी खायी उसकी गरमी बुझ गयी ? (कुमार का चेहरा मुरझा जाता है) वह कभी बुझ भी सकती है ? (कुमार घड़ी में देखते

हैं) खैर; (तनिक सोच कर) एक अच्छा जवान लड़का है। हमारे रिश्ते का है। बी० एल० पास है। पैसा खर्च किये बिना ही म काम चला दूंगा। एक टाँग तनिक लँगड़ाती है, बस यही एक कमी है उसमें।

कुमरा मेनोन (अधीर होकर) यह सब इलेक्शन के बाद सोचा जायेगा।
पुरुषोत्तमन तंपी लेकिन मेरी राय यह नहीं है। सारी बातें मैंने स्पष्ट कर दीं। समझे ?

कुमार मेनोन समझ गया। (घड़ी में देखते हैं)
पुरुषोत्तमन तंपी हाँ, मैं तो एक बहुत ही जरूरी बात आपसे कहना चाहता था। तभी एक एम० ए० साइकलजी वाली ने आकर विघ्न डाला। (सोचते हैं)

कुमार मेनोन आप क्या कहना चाहते थे ?
पुरुषोत्तमन तंपी हाँ-हाँ, अभी याद आयी... हाँ शुरू-शुरू में इन एजेण्टों और परिजनों को हाथ खोल कर कुछ देते रहें, तभी अच्छी तरह काम आगे बढ़ पायेगा। एक बार सब ठीक-ठाक चलने लगा तो फिर (व्यंग के स्वर में) जो चाहा सो हाथ में आ गया। और आगे इन 'बच्चों' को पैसे की आशा मात्र दिलाना काफ़ी है।

कुमार मेनोन इस समय... ?
पुरुषोत्तमन तंपी (उठ कर मेनोन के पास आकर धीमी आवाज़ में) फिलहाल एक-एक दो अच्छा ढाई रहे।

कुमार मेनोन (मेज खोल कर चेक-बुक निकालते हुए) इस समय इतना ज्यादा जरूरी है ? (लिखने का उपक्रम करते हैं)

पुरुषोत्तमन तंपी नहीं तो... पूरा तीन लिख दीजिए। इस हफ्ते किसी तरह इतने से काम सम्हाल लूंगा। मैं जब मेयर के लिए उम्मीद-बार था उस समय—उस समय का एक रुपया आज के बीस

के बराबर था । आपको कुछ पता है कि कितना खर्च हुआ ?

[कुमार मेनोन लिखने से हाथ खींच कर पुरुषोत्तमन तंपी की ओर देखकर बैठे रहते हैं । तंपी धीमी आवाज में कानों में कुछ कहते हैं]

कुमार मेनोन (साश्चर्य) ओह ! इतना लग गया !

पुरुषोत्तमन तंपी लेकिन जो प्रतिष्ठा और पद प्राप्त हुआ, उसके आगे यह चीज ही क्या है ?

कुमार मेनोन तब भी ?

पुरुषोत्तमन तंपी एक सीट जीत लीजिए तो फिर आप दूसरे छोर तक—यानी मुख्य मन्त्री तक—पहुँच जाने की योग्यता रखते हैं ।

कुमार मेनोन यह सब देख लेने की बात है ।

पुरुषोत्तमन तंपी (बातें जारी रखते हुए) काफ़ी पढ़े-लिखे हैं; धन-सम्पत्ति है; बंधु-बांधव हैं, प्रतिष्ठित परिवार है । परसनालिटी है; सब कुछ है । एक ही बात की कमी है ।

कुमार मेनोन यानी ? (उस कमी को जान लेने की उत्कट अभिलाषा से पुरुषोत्तमन तंपी की ओर देखते हैं ।)

पुरुषोत्तमन तंपी यानी, यानी, त्वगिन्द्रिय संबंधी एक बात की ! (कहकहा लगा कर हँसते हैं ।)

कुमार मेनोन (मतलब न समझ कर) क्या है वह ? मैं समझ नहीं पाया ।

पुरुषोत्तमन तंपी (गंभीर होकर) वह भी जल्दी ही समझ पायेंगे । नहीं, वह सहज ही आ जायेगी । (चेक हाथ में लेते हैं) यह हिसाब ज़रा देख लें । केवल अनुमान मात्र है । (एक कागज़ का टुकड़ा बेटे हैं) ठीक-ठीक हिसाब कल पहुँचा दूँगा । गूड नाइट ! (जाते हैं)

[कुमार मेनोन उठ कर गुड नाइट कहकर हाथ जोड़ते हैं । एक बार उस कागज के टुकड़े पर सरसरी नज़र डालते हैं । फिर कुर्सी पर बैठ कर हिसाब ध्यान से देखते हैं ।]

(विमला देवी फिर प्रवेश करती हैं)

विमलादेवी ओह । किसी तरह चला तो गया ! भैया, पौने आठ हो गये । हमें जाना है न ? ८.१० को गाड़ी पहुँचती है । उठिये भैया !

कुमार मेनोन (अनसुना करके ऊँचे स्वर में) सत्ताईस और छः तैंतीस; तैंतीस और ग्यारह चौतालीस; चौतालीस और नौ—

विमलादेवी (बड़ी उत्कण्ठा के साथ) भैया, देर हो रही है । तार आया है, ठीक ८.१० को गाड़ी पहुँच जायेगी ।

कुमार मेनोन (और ऊँचे स्वर में) चौतालीस और नौ तिरपन, तिरपन और तेरह—

विमलादेवी (ईर्ष्या से) हिसाब लगाने का यह बहाना आप जानबूझ कर कर रहे हैं भैया ? साफ़-साफ़ क्यों नहीं कहते कि ऐसा नहीं होमा । मुँह क्यों चिढ़ा रहे हैं ?

कुमार मेनोन (कागज पर से आँखें उठा कर ऊँची आवाज़ में) यह कैसी हरकत है ? बहुत ही ज़रूरी काम है और लगी आकर तंग करने । (आवाज़ धीमी करके) तिरपन और तेरह—

विमलादेवी सरसा जीजी अपने पति के साथ ८.१० को आ रही हैं । अब भी नहीं जायेंगी तो उनको कैसे मिल सकेंगे ? देर हो रही है । मैंने भैया को याद दिलायी । क्या यही हरकत करना या तंग करना है ?

कुमार मेनोन अन्दर चली जाओ । अपना काम देखो । मैं अब किसी से मिलने नहीं जाता । खुद मैं जाकर लिवा लाऊँ, ऐसा

कोई शस्त्र थोड़ी ही आ रहा है । (घड़ी में देख कर फिर कागज पर ध्यान देने लगते हैं)

विमला देवी भैया, आप यह क्या कह रहे हैं । भाभी और उनके लोगों का कहा मान कर आप अपनी बहन से यह व्यवहार कर रहे हैं ? यह बड़ी निर्दयता का काम है भैया । ऐसा करना ठीक नहीं है भैया !

कुमार मेनोन (सिर उठा कर विमला की ओर देखकर) क्या तुम यही कह रही हो कि मैं खुद कुछ नहीं कर सकता ? क्या मैं उसके योग्य नहीं हूँ ?

विमला देवी आप हमको बहुत प्यार करते हैं, यह मैं जानती हूँ । यह भी मैं जानती हूँ कि भैया हमारी भूलें और कमियाँ क्षमा कर देंगे । लेकिन सदा दूसरों को उलटी बातें सुनते-सुनते—

कुमार मेनोन यह बकवास छोड़ दो । घर में हो या बाहर, किसी तरह का चैन मुझे नहीं मिल रहा है । न आगे बढ़ सकता हूँ और न पीछे हट पाता हूँ । मेरी बहनों ने मुझे घर गड़ाया है, जैसे पत्थर का कोई लाठ हूँ । कुछ ज्यादा कहना मैं नहीं चाहता ।

विमलादेवी यों कह कर आप छोड़ नहीं सकते भैया ! माँ हम तीनों को आपको सौंप गयी हैं । हमारे न तो पिता हैं न माता । न कोई सगा या संबंधी । आप ही हमारे सब कुछ हैं । माँ ने मृत्युशैया पर पड़ी हुई आप से जो बातें कहीं, आपको भूली नहीं हैं ।

कुमार मेनोन मुझे सब याद है । मैं अपना करणीय और कर्तव्य पहचानता हूँ । अब किसी के सिखाने की जरूरत नहीं । (घड़ी में देख कर कागज पर झुकते हैं)

विमला देवी (चिढ़ती हुई) याद है, पहचानता हूँ ऐसा-वैसा कह देने से काम नहीं चलेगा । माँ के चित्र पर रोज फूलों की माला

चढ़ा कर मातृभक्ति का बहाना करने से भी काम नहीं चलेगा । माँ की बातें कितनी वेदनापूर्ण थीं ! क्या उनका तनिक भी प्रभाव आप के दिल पर नहीं पड़ा ? अगर पड़ता तो इतनी निष्ठुरता आप कैसे दिखाते भैया ?

कुमार मेनोन (कागज एक ओर रखकर उठ खड़े होते हैं और गुस्से से) तुम खुद सोच कर देखो, माँ की बातें मुझे भूली हैं या तुमको । एक-एक करके मैं पूछ लूँ—

विमलादेवी (घड़ी में देख कर बड़ी बेचैनी के साथ) घड़ी देख लीजिए भैया ! क्या इस समय इस तरह की बातें छेड़ कर बैठे रहते हैं ?

कुमार मेनोन (विमलादेवी की बातों पर ध्यान न देकर) वह पार्वती— डायन कहीं की । कैसे अनर्थ करके चली गयी ! जिस आँगन में बचपन में हम खेला करते थे, देखो वहाँ आज क्या दिखाई दे रहा है ? वरकी का मकान इस घर को आड़े देता हुआ ऊपर उठ रहा है । वरकी से ज्यादा देने को मैंने कहा । तब भी—तब भी—

विमलादेवी भैया आप नहीं जानते ! इसमें पार्वती जीजी का कोई दोष नहीं है । आपस का झगड़ा बढ़ गया तो पाच्चु दादा ने उसको बेच डाला । इसमें पार्वती जीजी का क्या दोष ? चलिए देर हो रही है ।

कुमार मेनोन (गुस्से में आकर) पाच्चु दादा ! तुम नहीं जानती, वह हृद दर्ज का पोच है । हम अब भी उसकी मदद करते हैं । नहीं तो आज उसका क्या हाल होता ? मैंने उसके लिए कितनी तकलीफें मोल लीं ?

विमलादेवी बे तो आप की सगी बहन के पति हैं । अपने बहनोई की मदद करना कौन-सी बड़ी बात है ?

कुमार मेनोन लेकिन वही आज मेरा दुश्मन बना है। यह हड़ताल उसी ने करायी है। सभी पत्र-पत्रिकाओं में वह मेरी टीका-टिप्पणी करता है। ऊपर से उसने अब मेरे खिलाफ नाम-निर्देशन पत्र भी दिया है।

बिमलादेवी पांचु दादा तो शुरू से राजनैतिक रहा है। आप ही मैदान में नये हैं।

कुमार मेनोन भाड़ में जाये उसको राजनीति ! निर्लज्ज ! उसने कितनी पार्टियों के चौके-बरतन का पानी पिया है ! अब सबने उसको निकाल दिया तो अपने को स्वतंत्र कहने लगा। मनुष्य का यह अधःपतन ! लेकिन आश्चर्य यह है कि अब भी लोग उसकी प्रशंसा करते हैं।

बिमलादेवी ऐसी बातें करने का यह समय नहीं है भैया ! बेचारी सरसा जीजी अपने पति और बच्चे को साथ लेकर आ रही हैं। ब्याह के बाद पहले-पहल वे घर आ रहे हैं। वे आपके दर्शन करने आ रहे हैं।—

कुमार मेनोन (बीच हो में) सरसा जीजी ! कुलकंटक ! मेरा और मेरे खानदान का अब इससे बढ़ कर क्या अपमान करना है ? लोग जब लगने वाली बातें सुनाने लगते हैं तो मैं जैसे लज्जा और ग्लानि से दहने लगता हूँ। सिर उठा कर घूमना मुश्किल कर दिया ! तब भी तुम कहती हो—‘चलिए; उसका और उसके किये पाप का स्वागत कीजिए और लाकर अपने ही घर में बसा लीजिए ! तुम पढ़ी-लिखी हो, समझदार हो; फिर भी आश्चर्य तो यह है कि तुम मुझसे ऐसा करने की आशा रखती हो ! तुम्हारी बातें सुन कर मुझे बड़ा कष्ट हो रहा है। (घड़ी देखकर फिर बैठते हैं।)

विमलादेवी सरसा जीजी और भैया आपस में कितना प्यार रखते हैं सो मैं जानती हूँ ।

कुमार मेनोन उसका प्यार ! काश ! ऐसा प्यार करने वाले और भी कुछ लोग मिल जाते !

विमलादेवी (उत्साह के साथ) ऐसा न कहिए भैया ! इस बात को आप इतनी जल्दी भूल गये कि उस बड़ी भारी विपत्संधि में इस बहन ने जान पर खेल कर भी आप की रक्षा की थी ? आप के कलत्र-पुत्र, भाई-बहन सब आपको छोड़ गये थे । आप वेदना और मृत्यु से लड़ रहे थे, उस समय यही छोटी बहन आपकी एक मात्र अवलंब थी । एक या दो नहीं, पूरे अठाईस दिनों तक रात-दिन 'आँखों में तेल डाले' मातृस्नेह के साथ जीजी ने आपकी सेवा की । आप ही तो बता रहे थे, कुछ दिनों तक आपको केले के हरे पत्रों पर सुलाया गया था ? उस दारुण दृश्य को कोई स्त्री कैसे देख कर बैठी रहती ? लेकिन सरसा जीजी को स्नेहजन्य मनःशक्ति प्राप्त थी । उसी ने आप को बचाया था । जीजी के स्नेह पर सन्देह करना पाप है भैया ! उनके स्नेह की निन्दा न करना । वही बहन आज आप के क्रोध और द्वेष की पात्र है, उन्होंने अपनी इच्छा से एक पुरुष को अपना पति स्वीकार किया ! (कुमार मेनोन कुछ सोचने लगते हैं) भैया ! भैया ! बेचारी सरसा जीजी को हम जाकर लिवा लायें भैया ! हमें देख कर वे कितने खुश होंगे ! और आप का करुणापूर्ण हृदय जब उनको क्षमा कर देगा तो आपको कितना आनन्द और शांति मिलेगी ! देखिए, अब आठ बजे हैं । (कुमार मेनोन घड़ी में देखते हैं) दस मिनट में हम स्टेशन पर पहुँच जायेंगे । मोटर इधर पोरटिको में लाने को कह दूँ ?

[श्रीकुमारी अम्मा का प्रवेश । वही पहनावा । फोन के पास जाकर खड़ी रहती हैं]

श्रीकुमारी अम्मा मैं गीतानन्दाश्रम से लौट कर आ रही हूँ । इधर फाटक पर पहुँच कर क्या सुनती हूँ कि यहाँ किसी का कोलाहलपूर्ण व्याख्यान हो रहा है । आखिर बात क्या है ?

विमलादेवी (सहज भाव से) सरसा जोजी का तार आया है, वे ८-१० बजे की गाड़ी से पहुँच रही हैं । गति और बच्चा भी साथ है । हम उनको लेने जा रहे हैं ।

श्रीकुमारी अम्मा (जैसे उस बात पर विश्वास नहीं कर सकीं, कुमार मेनोन से) सच ? (कुमार मेनोन कुछ नहीं बोलते । घड़ी देखते हैं ।) घड़ी क्यों देख रहे हैं ? कोई बात है या यों ही ?

विमलादेवी अब सिर्फ दस मिनट बाकी हैं । जल्दी करें । स्टेशन पर उनकी जान-पहचान का कोई नहीं होगा । वे घबड़ाते होंगे ।

श्रीकुमारी अम्मा क्यों, यहाँ ले आना चाहती हो ?

विमलादेवी हाँ भाभी !

श्रीकुमारी अम्मा नहीं । यह नहीं होगा । हरगिज नहीं; इस घर में नहला सकोगी !

विमलादेवी यह क्यों भाभी, यह हठ क्यों कर रही हैं ?

श्रीकुमारी अम्मा नहीं होगा और क्या ?

विमलादेवी (कुमार मेनोन से) हमारे घर का वह पुराना मकान ढाह कर जब बराबर किया जा रहा था और उसकी जगह यह नया मकान उठ रहा था तब आपने क्या कहा था भैया ? क्या वह सारी बातें आप भूल गये भैया ?

श्रीकुमारी अम्मा चाहे कोई वरदान, वाग्दान या करारदान कुछ भी किया हो, लेकिन अब सारी परिस्थिति बदल गयी है । कोई सपने में भी यह न सोचे कि अब कुछ चला सकेगी ।

बिमलादेवी (कुमार मेनोन की आवाज और भाव का अनुकरण करती हुई) जिन्होंने यह घोषणा की थी कि “जब तक मेरे शरीर में प्राण रहेंगे तब तक और मेरी मृत्यु के बाद भी कुमार मन्दिर की दाईं विंग मेरी बहनों की रहेगी और जितना अधिकार इस मकान पर मेरा होगा उतने अधिकार के साथ मेरी तीनों बहनें भी इस मकान में जहाँ चाहें वहाँ रह सकेंगी,” अब उनकी धर्मपत्नी उसका विरोध कर रही हैं।

श्रीकुमारी अम्मा (कुमार मेनोन की ओर उँगली उठा कर) जो सो कर लें; मैं इस घर को छोड़कर जा रही हूँ। मेरे और मेरे बच्चों के लिए पोनकुल्लुम्मेल खानदान में एक कोना अवश्य मिल जायेगा।

बिमलादेवी भैया, तब क्या नहीं जा रहे हैं ? (घड़ी देखकर) अब जाना भी काफ़ी होगा।

[फोन की घंटी बज उठती है। श्रीकुमारी अम्मा रिस्सीवर हाथ में उठा लेती हैं।]

श्रीकुमारी अम्मा हाँ, हाँ, जी, ओह ! (चेहरे पर गुस्से का भाव) वे घर पर नहीं हैं। दौरे पर गये हैं।

कुमार मेनोन कौन है ? कहाँ से ?

श्रीकुमारी अम्मा (मेनोन की बातों पर ध्यान न देकर) पस्त्रिचर के लोग भी यहाँ नहीं हैं। नहीं, नहीं। तत्तल लगा है। नहीं, नहीं; हाँ, नौकरानी। (रिस्सीवर रख देती हैं। कुमार मेनोन की ओर देख कर निर्बयता के साथ) कोई आवारा होगा।

कुमार मेनोन कहाँ से था ?

श्रीकुमारी अम्मा (बेचरवाही से) कौन जाने, कहाँ से था !

बिमलादेवी स्टेशन से सरसा जीजी बुला रही थीं, क्यों अभी ?

श्रीकुमार अम्मा ऐसा ही सही, तब

बिमलादेवी (गुस्से से) यह कोरा झूठ आप कैसे बोल सकीं भाभी ? क्या यही गीतानन्द की महत्ता है ? प्रतिदिन दोनों बार आश्रम में जाती हैं, गीतानन्द की दीक्षित शिष्या होने का दावा करती हैं । प्रातःकाल पूजा-गृह में किवाड़ बन्द करके दो घण्टे तक ध्यान में डूब कर बैठी रहती हैं—अगर इन सब का नतीजा यह असत्य और नीच कर्म है तो—

[गीतानन्द का नाम सुनकर श्रीकुमारी अम्मा एक दम चौंक उठती हैं और गला लंबा करके विलक्षण ढंग से घूरकर देखती हुई चिंता में डूब जाती हैं ।]

कुमार मेनोन (गुस्से से बिमलादेवी की ओर बढ़ते हैं । निर्दयता के साथ उनकी बातों को रोकते हुए) यहाँ से जाती हो कि नहीं ? नीच, पामर कहीं को ! जान पड़ता है, मुझसे कुछ अनर्थ करा कर तभी मानेगी । (हाथ उठा कर भीतर की ओर इशारा करते हुए) हैं ! जाओ अन्दर !

बिमलादेवी (पीछे हटती हुई) इस नीचता का फल भोगते देर न लगेगी भैया ! कूसरे कमरे में अनर्थों की पाँत धक जमाये खड़ी है । भैया, अगर आप सिर धुन कर पछतावा न करें तो पूछना !

कुमार मेनोन भीतर जाने के लिए कहा न ? (निर्दयता के साथ बिमला देवी की ओर बढ़ते हैं । बिमलादेवी घूम पड़ती हैं और जल्दी जल्दी जाती हैं । कुमार मेनोन श्रीकुमारी अम्मा की ओर मुड़कर) वह इतना जमादा क्या सोच रही हो ?

श्रीकुमारी अम्मा (चिंता से जग कर) तब अगर मैं फोन पर ऐसा कह न देती—

कुमार मेनोन क्या वह सरसा ही थी ? (श्रीकुमारी अम्मा खोपी-सी चिंता में खड़ी रहती हैं) यह क्या ?

श्रीकुमारी अम्मा (चिंता से जग कर) क्या मैंने गलती की ?

- कुमार मेनोन इसमें क्या सन्देह है कि झूठ बोलना गलत है ? (श्रीकुमारी अम्मा फिर चिंता में डूब जाती हैं ।) यह उदासी कैसी ? बैठ जाओ । (श्रीकुमारी अम्मा जैसे कुछ सोचकर लंबी हँसी हँसती हैं) । इस हँसी का मतलब क्या है ?
- श्रीकुमारी अम्मा (चिंता से जगकर) कुछ नहीं ।
- कुमार मेनोन कुछ नहीं ? यहाँ बैठ जाओ । (श्रीकुमारी अम्मा बैठती हैं ।) क्यों, क्या हुआ ?
- श्रीकुमारी अम्मा कुछ नहीं !
- कुमार मेनोन चन्दे का पैसा स्वामीजी को दे दिया ?
- श्रीकुमारी अम्मा 'आप' चन्दे का पैसा अपने हाथ में नहीं लेते ।
- कुमार मेनोन तब ?
- श्रीकुमारी अम्मा एकाउण्टेंट के पास देकर रसीद लिखा ली ।
- कुमार मेनोन उन को कैसे मालूम होगा ?
- श्रीकुमारी अम्मा मालूम हो जायेगा ।
- कुमार मेनोन आपने उनको कुछ बताया नहीं ?
- श्रीकुमारी अम्मा छी ! छी ! यह ठीक नहीं । मैंने नहीं बताया । स्वामीजी की महत्ता आप लोग नहीं पहचानते । मैंने देखा, ईश्वर का यथार्थ चैतन्य उनके चेहरे पर बिलसित है । ओह ! मनुष्य में ऐसा परिवर्तन !
- कुमार मेनोन परिवर्तन ! (श्रीकुमारी अम्मा फिर से चिंता में डूब जाती हैं । निमेष भर का अचकाश) परिवर्तन किस बात में ? तुम्हारी बातें सुनकर जान पड़ता है कि तुम पहले से उनसे परिचित हो ! (हँसते हैं ।)
- श्रीकुमारी अम्मा (जगकर) मैंने जब पहले पहल उनके दर्शन किये, उसकी अपेक्षा उनमें अब अतिशय परिवर्तन आ गया है !
- कुमार मेनोन इससे क्या ?

श्रीकुमारी अम्मा (कुछ सोचती हुई) वे बिल्कुल अप्राप्य हैं। यों तो किसी को इच्छा पूर्ण नहीं होगी। सब मिथ्या है।

कुमार मेनोन श्रीकुमारी के बड़े भाई की राय ऐसी नहीं है।

श्रीकुमारी अम्मा दादा क्या-क्या नहीं कहते ? स्वार्थ के लिए दादा कुछ भी कह देंगे, कुछ भी कर डालेंगे। (कुछ सोचती हैं।)

कुमार मेनोन अभी तक यहीं थे। रमा का व्याह मेष के आरंभ में ही हो, यही उनकी राय है। दो तिथियाँ भी वे लिखा लाये हैं। प्रारंभिक खर्च के लिए पच्चीस हजार का अनुमान-पत्र भी लाये हैं। मन एक दम अस्वस्थ हो गया है। तुम जैसे किसी बात पर ध्यान ही नहीं दे रही हो। क्या सोच रही हो ?

श्रीकुमारी अम्मा स्वामीजी ने हमारे ऊपर कृपा की है; वे कल इधर पधार रहे हैं।

कुमार मेनोन ओहो ! कब आ रहे हैं ?

श्रीकुमारी अम्मा कल सबरे। सुदर्शन पूजा, पूर्णकुंभ आदि का प्रबंध होना चाहिए। (झट उठ खड़ी होती हैं।) सब बड़ी धूम-धाम से करना है। (खुशी से) जो हो, उन्होंने स्वीकार तो किया !

कुमार मेनोन जैसा हो, सब करा लेंगे।

श्रीकुमारी अम्मा स्वामी जी की जैसी इच्छा है, सब कर देंगे ?

(श्रीकुमारी अम्मा चली जाती हैं)

[कुमार मेनोन पत्नी के भाव-भेद, संभाषण का ढंग, जाने की चाल आदि बड़े आश्चर्य के साथ देखते रहते हैं। फिर उठ कर खड़े होते हैं। घड़ी देखते हैं। फिर फोन का चाँगा हाथ में उठा कर नम्बर घुमाते हैं।]

कुमार मेनोन (फोन पर) मैं ? “कुमार टायर वर्क्स” प्रोप्राइटर कुमार ।
हाँ, हाँ । ओहो ! गाड़ी थोड़ी देर पहले ही आ गयी ?
जी, जी ! रिटायरिंग रूम में जगह नहीं थी ? ओहो !
ठीक तो एक्सप्रेस के यात्री भी आज वहाँ ठहर नहीं पाये ?
ओह ! अच्छा यों ही पूछा था । थैंक्यू ! (उबासी से
फोन नीचे रखते हैं)

(परदा गिरता है ।)

—————

तीसरा अंक

स्थान : कुमार मन्दिर में दूसरे अंक का ही कक्ष ।

समय : दूसरे दिन सबेरे सात बजे से ।

[चित्रों पर पुष्पमालाएँ चढ़ी हैं । मेज पर दो धूपदानों में अगरबत्ती जल रही है ।

बायीं ओर हरी तोशकदार कुरसी पर स्वामी गीतानन्द शरीर सीधा करके बैठे हैं । ४५ साल की अवस्था । लेकिन ३० साल के ही दिखते हैं । हृष्ट-पुष्ट और सुन्दर शरीर । पकी हुई नारंगी का रंग । पीले रंग का "मुष्ट" पहने और शरीर पर उसी रंग की साल ओढ़े हैं । लंबे तनिक घुंघुराले बालें । उबरे तक पहुँची लंबी दाढ़ी जो घन-नील है । स्नान के बाद बाल पीछे की ओर सँबारे हैं । रक्षितम मुल्लमण्डल में तेजपूर्ण नयन, लंबी ऊँची नासिका और पूर्ण ईर्ष्यु । सब मिल कर दिव्यता का आभास पैदा करते हैं । हाथ उठति-हिलाते शाल के अन्दर से बाहर दिखाई देने वाली भुजाएँ, वक्षस, उबर आदि की रूप-भंगिमा काले घुंघुराले रोमों से अत्यन्त आकर्षक हैं । गले में छोटी-छोटी द्राक्षाओं की बनी लंबी माला पहने हैं । गंभीर मधुर शब्द ।

स्वामी के आगे बायीं ओर जरा हटकर विनयपूर्ण श्रीकुमारी अम्मा खड़ी हैं । स्नान के बाद अपनी लंबी सुन्दर चोटी खोल कर पीछे पीठ पर फैला दी है; ललाट पर लंबी चन्दन की रेखा और उसके बीच में सिन्दूर का तिलक । अद्धा-भक्ति के भावे ।

[गीतानन्द जी बिह्वरता में कहीं दृष्टि लगाये बातें कर रहे हैं ।]

गीतानन्दजी वास्तव में गीतानन्द अत्यंत प्रसन्न हुए । श्रीकुमारी अम्मा का मन पवित्र आध्यात्मिक जीवनचर्या की ओर मुड़ गया है । यह चर्या अत्यंत सुकृत से ही प्राप्त होती है ।

श्रीकुमारी अम्मा पहले पहल जिस दिन आपके दर्शन करने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ उसी दिन मेरे हृदय ने मुझसे कहा कि पूर्व पुण्य के फलस्वरूप तुम को यह महान पुरुष मिल पाये और आप के सत्संग से सभी प्रकार के यश प्राप्त होंगे ।

गीतानन्दजी यह सारी महत्ता अपने कठोर तप से प्राप्त की है। पूर्व पुण्य से ही परिस्थिति इसके अनुकूल होती है । यह निर्विवाद सत्य है ।

श्रीकुमारी अम्मा (बड़ी व्यथा के साथ) मैंने जो हृदयवेदना—

गीतानन्दजी (सिर हिलाये बिना बायें हाथ को उठाकर रोकते हुए) उस बात का स्मरण न करो श्रीकुमारी अम्मा !

(दो निमेष का अवकाश)

श्रीकुमारी अम्मा अचानक मैं आश्रम में आ गयी थी । आपके दर्शन पाते ही मैं चौंक कर काँप उठी !

गीतानन्दजी अनगिनत सन्दर्शक जमा थे । श्रीकुमारी अम्मा पर गीतानन्द का विशेष ध्यान नहीं जा पाया । सब की सीमा बँधी है । उस सीमा के परे सर्व सचराचरों के हम योगी समदर्शी ही रह सकते हैं ।

श्रीकुमारी अम्मा उस दिन से मैं चाहती थी कि आपको इधर निमंत्रित करूँ । थोड़ी देर के लिए सही, आपको अपना अतिथि भी बना लूँ और आपके श्री चरणों पर अपना हृदय खोल कर रख दूँ । आपका आशीर्वाद और अनुग्रह प्राप्त कर लूँ ।

गीतानन्दजी सो अब सफल हो गया । गीतानन्द हृदय से प्रार्थना करते हैं कि श्रीकुमारी अम्मा को सब प्रकार के श्रेय प्राप्त हों ।

श्रीकुमारी अम्मा (बड़ी अट्टा और भक्ति के साथ) ऐ भगवन्, अब मेरे जीवन में एक ही अभिलाषा शेष है । वह मेरी आंतरिक अभिलाषा है । आप वह भी सफल करने की कृपा करें ।

- गीतानन्दजी** गीतानन्द से जो भी बन पड़े, हो जायेगा ।
- श्रीकुमारी अम्मा** मैं आश्रम में रह कर आपकी चरण-सेवा करती हुई अपना शेष जीवन बिताना चाहती हूँ, आप इसकी आज्ञा देने की कृपा करें ।
- गीतानन्दजी** पवित्र और नियंत्रित गृहस्थ जीवन की आपने पर्याप्त जानकारी प्राप्त की है ।
- श्रीकुमारी अम्मा** आपकी शपथ, कोई सांसारिक मोह अब मुझमें शेष नहीं है ।
(गीतानन्दजी के चरणों पर प्रणाम करती हैं)
- गीतानन्दजी** (प्रत्याभिवादन करके) बैठ जाओ ।—श्रमजीवियों ने जो मांगें रखी हैं, बिल्कुल अव्यावहारिक नहीं होंगी ।
- श्रीकुमारी अम्मा** (उठकर बड़ी श्रद्धा और भक्ति के साथ एक ओर उठकर खड़ी होती हैं ।) उनकी सगी बहन का पति पाच्चुनायर है । वही श्रमजीवियों का नेता बन कर यह सारा कपट रचता है ।
- गीतानन्दजी** पाच्चुनायर को गीतानन्द जानते हैं ।
(कुमार मेनोन का प्रवेश)
- कुमार मेनोन** (जैसे कोई भारी आघात खाये हैं) आप उनको जानते हैं ?
(घड़ी देखते हैं)
- गीतानन्दजी** अच्छी तरह । आश्रम में चर्चा-समितियाँ हुआ करती है । वे उनमें आते हैं ।
- कुमार मेनोन** (बेचैनी के साथ) ओ ! अभी इसका पता लगा ।
- गीतानन्दजी** उनके राजनैतिक विचार दृढ़ हैं । स्वतंत्रता के संग्राम में थोड़ी बहुत यातना भी उन्होंने सही है ।
- कुमार मेनोन** (चेहरा मुरझा जाता है ।) हाँ, हाँ, हाँ !
- श्रीकुमारी अम्मा** जेल से छुड़ा लाने आदि के लिए यहाँ से बहुत सहयोग मिला है । तब भी आज विपक्षी बना है ।

कुमार मेनोन (बात बदल कर) मौका पाकर उन्होंने हमें तबोंहें कर देंगे वाली शर्त रखी है ।

श्रीकुमारी अम्मा बड़े भैया उनके पास संधि के निर्देश लेकर गये थे ।

कुमार मेनोन हम मजदूरों के प्रति कुछ भी उदारता दिखाने के लिए सन्नद्ध हैं । लेकिन प्रत्येक वस्तु की सीमा होती है । यह बांटे वी भी समझ लें ।

गीतानन्दजी समदर्शी मुमुक्षुओं के लिए धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष में मीश ही मुख्यतः चिन्तनोप है । तथापि “लोकास्समस्तास्सुखिनो भवन्तु” ही हमारा आदर्श है । श्रमजीवी घोर आर्थिक और सामूहिक कष्ट और क्लेश सहन करते हैं । उनके ऐक्य और उदारता से लाभ उठाकर ही पूँजीपति प्रगति कर सकते हैं । अतः गीतानन्द का यह मत है कि उनके प्रति कितनी ही उदारता प्रगट की जाय, थोड़ी ही होगी ।

(दूर से किसी जत्थे का शोर-गुल सुनाई देता है ।)

श्रीकुमारी अम्मा सुनिए ! उनके एक जत्थे की कैसी आवाज है ! अभी फाटक पर आ जायेगा । बदमाशी की कैसी बातें वे बोल देते हैं ।

कुमार मेनोन पहले हड़ताल को स्थगित रखा जाये । उसके बाद उनकी शर्तों पर हम विचार करेंगे । जो हो, ये शर्तें हमारे लिए असह्य हैं ।

(जत्थे की आवाज और निकट पहुँच जाती है ।)

गीतानन्दजी यह मात्सर्य उस समय तक होता रहेगा जब तक कि मनुष्य मात्र को समान समृद्धि प्रदान करने वाली स्थायी आर्थिक व्यवस्था देश में न बन पायेगी ।

श्रीकुमारी अम्मा लीजिए, जत्था फाटक पर पहुँच गया !

[जत्थे के नारे स्पष्ट सुनाई पड़ रहे हैं, “मजदूर-सैनिक चिन्ताधीन ! अपना हक हम छीन लेंगे । बिनाब तक लड़ेंगे । जब तक जियेंगे तब

सक लड़ेंगे । मञ्जूर-दल खिन्दाबाद !” आदि । सब ध्यान लगाकर सुनते हैं । श्रीकुमारी अम्मा खिड़की के पास जाकर बाहर देखती हैं ।]

श्रीकुमारी अम्मा देखिए, सबके आगे वह खड़े हैं बहमोई, साथी पाच्छुनायर !

गीतानन्दजी ऐसी परिस्थितियों में पूँजीपतियों को चाहिए कि जहाँ तक हो सके झुक जायें । यही बातों को और बिगड़ने न देने का सरल उपाय है । (जत्थे की आवाज-धीरे-धीरे कम होती जाती है और आखिर बन्द हो जाती है ।) गीतानन्द का यही मत है ।

श्रीकुमारी अम्मा (कुमार मेनोन से) स्वामी महाराज की जैसी आज्ञा है, सब का प्रबंध कर दीजिए । इससे कुछ हानि होगी, लेकिन आप उसकी परवाह न करें ।

कुमार मेनोन ऐसा ही होगा । श्रीकुमारी के बड़े भाई भी आ जायें ।

श्रीकुमारी अम्मा समय बहुत अधिक हो गया । अभी स्वामीजी ने पूजा आरंभ नहीं की । पूजा-गृह ऊपर है । उधर चलें । लीजिए, इधर से—

कुमार मेनोन (घड़ी देखते हैं और उठकर हाथ जोड़ते हुए) जी हाँ ! पूजा होने दीजिए । थोड़ी देर बाद मैं आकर दर्शन कर लूँगा । (घड़ी देखते हैं ।)

गीतानन्दजी (उठकर) कुमार मेनोन की व्यस्तता गीतानन्द भली तरह समझ लेते हैं । पूजा, यज्ञ सब बहुत अच्छे हैं । लेकिन इन सबके ऊपर मनुष्य का हृदय पवित्र रहे । विशाल और दिव्य प्रेम से सब के हृदय भरे रहें । सारा श्रेय उसी में निहित है ।

[स्वामी गीतानन्द और श्रीकुमारी अम्मा दोनों जाते हैं । कुमार मेनोन मेज के पादरु में अपने आसन पर बैठ जाते हैं । विमलादेवी का प्रवेश । चेहरे पर कुछ कृत्रिम भाव । कुमार मेनोन को चुप देख वह खुद बोलने लगती हैं ।]

विमलादेवी भैया, इतनी देर हो गयी; लेकिन आप अभी तक पूजागृह की ओर नहीं गये ?

कुमार मेनोन गया होता तो यहाँ कैसे देख पाती ?—यह कैसा बे-मतलब का सवाल है !

विमलादेवी ऊफ़ ! क्यों नहीं जाते हैं भैया ? आखिर स्वामीजी की पूजा में कोई रहे भी !

कुमार मेनोन तुम लड़कों को जाना चाहिए था, अभी क्यों नहीं गयीं ? (घड़ी देखते हैं)

विमलादेवी मेरा, रमा या उमा का जाना भाभी पसन्द नहीं करतीं ।

कुमार मेनोन यह पहले से कैसे निश्चय किया ?

विमलादेवी भाभी ने हमसे कुछ कहा नहीं ।

कुमार मेनोन तुम लोगों को बुलावा भिजवा देतीं ? (मेज खोल कर किसी चीज को खोजने में व्यस्त हो जाते हैं ।)

विमलादेवी पूजागृह के पास से गुजरना भी भाभी पसन्द नहीं करतीं । जानकी और पप्पू—हमारे नौकर—को दूर से देखने भी नहीं देतीं । भाभी ने खुद कमरा झाड़-पोंछ कर साफ़ कर लिया । भाभी एक दम उत्तेजित हो गयी हैं, परवश हो गयी हैं । यह सब देख कर हँसी आ जाती है भैया । (हँसती है)

कुमार मेनोन तुम हँस रही हो ! लेकिन इधर दूसरों पर प्राण-संकट सवार है ।

विमलादेवी , भाभी का प्राण-संकट देख कर हमें हँसी आ जाती है भैया । साइकलजी में इसको एक तरह की मेनिया कहते हैं । इस रोग का शिकार होने पर किसी को मालूम भी न होगा कि खुद दूसरों के उपहास का पात्र बना है । (पल भर चिंता में डूब कर उसके बाद) यह स्वामी अल्प भी पूर्वपुरुषता नहीं मानते ।

जहाँ तक हो सके, इन लोगों को घर के अन्दर कदम रखने न देना अच्छा है ।

(फोन की घंटी बजती है)

कुमार मेनोन बस करो ! फोन को जर्रा एटेंड करो । इस धूपदान को यहाँ से हटा दो ।

विमलादेवी स्टेनोग्राफ़र, प्यून वगैरह हड़ताल किये हैं । जब तक वे काम पर वापस न आयें, फोन अपनी मेज़ पर फिट करा लें भैया । (धूपदान हटा कर एक कोने में रख बेती हैं । रिसीवर हाथ में उठाती हैं) ३-४-५-६—कहाँ से ?...कुमार ? ...हैं । नहीं बुलाना ? कौन ? ऐं कौन सिस्टर ? डाक्टर ? (अधीर होकर) बताइए, कहाँ से बुला रहे हैं ? नहीं कहना ? अच्छा फोन डाक्टर के हाथ में दे दें । (रिसीवर का मुँह बन्द करती हुई कुमार मेनोन से) सरसा जीजी—किसी से बुलवा रही हैं । (फिर फोन में) हलो ! हलो ! हलो !! (कुमार मेनोन से) अरे रख दिया ! बन्द कर दिया ! यह कैसा काम है ? (रिसीवर रख कर) भैया, आपने सुना नहीं ? फोन में निरा झूठ बोलने के डर से बंद किया होगा । बेचारी कहीं की । आज सबरे कितनी जगहों में मैंने बुलाया ! नहीं मिलीं । उनको कितना दुःख हुआ होगा ? (कुमार मेनोन अन्यमनस्क बैठे रहते हैं ।) हाय ! जो हो, उन्होंने इधर आने के लिए कहा । अब देखने के लिए मेरा दिल उमड़ उठा है । भैया, यह क्यों भैया ? यह क्या देख रहे हैं ? भाभी को बीमारी भैया को भी लग गयी क्या ?

कुमार मेनोन (गुस्से में आकर) भाभी को बीमारी ? उसकी कैसी बीमारी ?

विमलादेवी मैंने जो साइकोलाजिकल बातें नोट कर रखी हैं, लाकर भैया को दिखा दूंगी । तभी मान लेंगे । स्टूपर एक मानसिक

रोग है। इस मानसिक स्तंभन रोग ने भाभी को घेर लिया है। (सिर उठा कर आँखें फाड़ कर ज्यों को त्यों थोड़ी देर खड़ा रहती हैं। फिर लंजे हँसो हँसती हैं।)

कुमार मेनोन नानसेंस ! श्रीकुमारी को किसी बीमारी ने नहीं घेरा है।

बिमलादेवी यह बीमारी साइकोथेरापी के अन्तर्गत आती है, लेकिन इसको भी मैं थोड़ा-बहुत समझ लेती हूँ। डाक्टर माइ-क्लीन की राय में शुरू से इलाज करने से ही यह बीमारी छूटती है। जोर पकड़ गयी तो—तो फिर (एनॉर्निसिंग बल सुन पड़ती है) ओह, वे होंगे। इतनी जल्दी पहुँच गये ! हृदय धड़क रहा है ! (दरवाजे की ओर मुड़ती हैं। फिर से घंटी बजती है।)

कुमार मेनोन कौन ? अन्दर आ सकते हैं।

(पुरुषोत्तमन तंपी का प्रवेश)

बिमलादेवी ऊफ़ ! आ धमके ! (जबास होकर अन्दर चली जाती हैं।)

कुमार मेनोन (खड़कर हाथ जोड़ते हैं) घंटी बजाने के ढंग से ही मैं समझ गया कि आप ही होंगे। आप लोगों को घंटी बजाने की जरूरत क्या है ? अच्छा, बैठ जाइए। बात कहाँ तक बढ़ पायी ?

पुरुषोत्तमन तंपी दो-एक घंटे में सब हो जायेगा, ऐसा प्रबंध कर रखा है।

कुमार मेनोन ऐसा ? आखिर बात कहाँ तक पहुँच गयी ?

पुरुषोत्तमन तंपी सैकड़ों बार मैंने कहा है। कोई बात हो, पूरी होने के पहले मैं थोड़े ही बता देता हूँ। नतीजा देख कर सारी बातें खुद समझ लें।

कुमार मेनोन अभी जो जत्था आगे बढ़ा, आपने देखा होगा ?

पुरुषोत्तमन तंपी उस सब को बढ़ने दीजिए। हम विजयी होंगे। इसके सभी आसार साफ़ दिखाई दे रहे हैं।

कुमार मेनोन आसार कैसे ?
पुष्पोत्तमन तंपी (बड़े उत्साह के साथ) उस बेदांत चक्रवर्ती को पकड़ कर जैसे हमने अपने कुप्पे में बन्द कर लिया है ।—(कुमार मेनोन हाथ कमर उठाकर इशारे से बताते हैं कि गीतानन्द ऊपर हैं । लेकिन तंपी इशारे का मतलब बिना समझे) सुन ले । उसे सुनाने के लिए ही मैं इतने जोर से बोल रहा हूँ । (जोर से) रुपये में जैसे मछली दस-पन्द्रह आती है, हमारे पाँच हजार में पूरी दस हजार से कम वोट—

कुमार मेनोन (बीच से धीमी आवाज में) धीरे से—धीरे । वे आज यहाँ एक पूजा में आये हैं । ऊपर पूजा कर रहे हैं । होम, बलि, मन्त्र, तन्त्र सब करने आये हैं ।
पुष्पोत्तमन तंपी (धीमी आवाज में) छी, छी, छी ! पहले से क्यों नहीं कहा ? कहीं मैं उसको कुछ खरीखोड़ी सुना देता ? इन शस्त्रों की भक्ति और मोक्ष ! मुझे इन बेटों पर तनिक भी विश्वास नहीं होता । इन लोगों के दाढ़ी-मुँह को देखना अपशकुन है । लेकिन कभी-कभी गधे को भी बाप बनाता पड़ता है । (हँसते हैं ।)

कुमार मेनोन (धीमी आवाज में) बेटे ने अनजाने में एक बात बता दी ।
पुष्पोत्तमन तंपी कौन-सी बात ?

कुमार मेनोन पाचुनायर आश्रम में जाया करता है ।
पुष्पोत्तमन तंपी बदमाश कहीं का ! वह कब से वहाँ जाता है ?

कुमार मेनोन कह रहा था कि वहाँ की चर्चा-समितियों में भी भाग लेता है । उसने उस पर अच्छी सम्मति प्रगट की ।

पुष्पोत्तमन तंपी (हल्का-सा भाव प्रगट करते हुए) इन गुण्डों की सम्मति ! जाने दीजिए मिस्टर ! इससे कितना अच्छा और उमदा उपाय लेकर मैं आया हूँ ।

कुमार मेनोन कहिए ।

पुरुषोत्तमन तंपी उस दिन यहाँ से जाने के बाद आज मैं तनिक भी सो न पाया । हमारे क्लेशपूर्ण मार्ग और महान लक्ष्य की चिंता में, जैसे किसी कवि ने बताया है, मैं जागरकिलष्ट होकर पड़ा था, अचानक मुझमें ज्ञान का उदय हुआ ।

कुमार मेनोन बताइए ।

पुरुषोत्तमन तंपी अचानक मुझको यह ख्याल आया कि पूंजीपति और श्रमजीवी के बीच में एक लियासन अफसर रहना चाहिये । ऐसा लियासन अफसर जो उन दोनों को अपने साथ ले चलने का सामर्थ्य रखता हो । इसका अभाव ही इस सारे झमेले का कारण है ।

कुमार मेनोन इसकी स्वीकृति मैंने पहले ही दी थी ।

पुरुषोत्तमन तंपी जब कभी श्रमजीवी असन्तुष्ट हो जाते हैं, चिनगारीपाच्चु जैसे 'राजनैतिक' मैदान में कूद पड़ते हैं ।

कुमार मेनोन निःसन्देह ।

पुरुषोत्तमन तंपी इस सबके लायक और समर्थ एक पक्का नेता मेरी पकड़ में आ गया है ।

कुमार मेनोन ओहो !

पुरुषोत्तमन तंपी बल्कि यों कहना चाहिए कि अथक परिश्रम के बाद ही मैं ऐसे एक व्यक्ति को पा सका हूँ ।

कुमार मेनोन वह कौन है ?

पुरुषोत्तमन तंपी दस बजे रात का समय था । अचानक जोर की तालियों और शाबासों की आवाज सुनाई पड़ी । कुतूहलवश मैं घर से निकल पड़ा । सेण्ट्रल स्टेडियम के पीछे के घेरे में मैंने देखा कि श्रमजीवियों का एक समुद्र-सा जमा था । उस भीड़ के बीच में एक मेज के ऊपर एक जवान लड़क खड़ा था ।

पुरुषोत्तमन तंपी को आप जानते हैं—ईश्वर की भी प्रशंसा मैं नहीं करता । लेकिन उसको वाक्पटुता और भावों को प्रगट करने में उसको समचित्तता देख कर मैं चकित हो गया । देर तक आँखें फाड़ कर मैं खड़ा का खड़ा रह गया !

कुमार मेनोन आखिर कौन था वह ?

पुरुषोत्तमन तंपी मेरी पूरी बातें सुन लीजिए । शब्द छल-छल, छिल-छिल कर के मुँह से झड़ रहे थे । इसके पहले इस तरह मजदूर-मालिक की समस्या का इतनी सुन्दरता के साथ हल करते मैंने नहीं सुना था ।

कुमार मेनोन आजकल कुछ नये नेता मैदान में उतरे हैं । ये सब उसी दल के हैं । यानी—

पुरुषोत्तमन तंपी जो मैं कहता हूँ, सुन लीजिए । मैंने देखा कि मजदूर लोग उसकी बातों की मस्ती में चूर हैं । “शाबाश-शाबाश” चिल्लाते हुए नाचते-कूदते, गाते हैं । यह देख कर मैंने निश्चय किया कि इसी के हाथ से चिनगारी पाचु के गाल पर थप्पड़ कसवा दें ।

कुमार मेनोन वह भी उसका कोई होगा ।

पुरुषोत्तमन तंपी आप का यह साला एड़ो-बोटो को बिना पहचाने थोड़े ही चला आयेगा । बड़ी पूछताछ करके मैंने मालूम कर लिया कि वह जवान लड़का मेरे घनिष्ट मित्र शारंगधर का इक्की-लौता बेटा है । शारंगधर एडवोकेट हैं ।

कुमार मेनोन वह भी कोई श्रमजीवी होगा ?

पुरुषोत्तमन तंपी नहीं । वह तो एम० एच० कालेज का एक प्रोफेसर है । १००-१५० रु० के करीब वेतन पाता है । उसका नाम—अभी बताऊँगा—ओह ! जीम पर है (सोचते हैं) ।

कुमार मेनोन प्रोफ़ेसर का पद छोड़ वह इस फैक्टरी में काम करने आयेगा ?

पुरुषोत्तमन तंपी आप यह क्या कह रहे हैं मिस्टर ! हम तो पाँच सौ या हजार खुशी से दे देंगे । ऐसा भी मनुष्य है जो कनक की कांतिपूर में मस्त नहीं होता ? अगर शारंगधर से एक बार कह भी दूँ तो फिर शुभ्रर काक ! शुभ्रर ! (सोचते हैं) उसका नाम तो फूल या पुष्प से शुरू होता है ! —

कुमार मेनोन शायद पक्का कम्प्यूनिस्ट होगा ?

पुरुषोत्तमन तंपी नो ! नेवर ! मुझे शुरू में यही सन्देह हुआ । बड़ा संयमी लड़का है । ईश्वर पर विश्वास रखने वाला ! दैवी-शक्ति पर जोर देकर बोल रहा था । कम्प्यूनिस्टों को ईश्वर कहाँ ? (अचानक जैसे स्मरण आ गया) पुष्पांगद ! हाँ, पुष्पांगद उसका नाम है । देखने में पुष्पबाण ही लगता है । (हँसते हैं ।)

कुमार मेनोन पुष्पांगद ! वह तो हमारी रमा का होम ट्यूटर है । सौ रुपया माहवार दिया करता हूँ । (घड़ी देखते हैं ।)

पुरुषोत्तमन तंपी ऐसा ? (खड़े होकर बड़ी खुशी से हाव-भाव दिखाते हुए) तब तो वह हमारी जेब में आ गया समझिए । (हँसते हैं ।)

कुमार मेनोन मैं नहीं समझता कि वह राजनीति में कुछ दिलचस्पी लेता है ! विश्वास नहीं होता ।

पुरुषोत्तमन तंपी (व्यंग से) मिस्टर ! आपकी आँखों के सामने की चीज़ है । फिर भी आप नहीं समझ रहे हैं । विश्वास नहीं कर रहे हैं ! (बैठते हैं ।)

कुमार मेनोन (नाखुश होकर) मेरा सिर निरे पत्थर का थोड़े ही बना है । किसी बात को समझने और किसी बात पर विश्वास करने या न करने की विवेचना शक्ति मैं अवश्य रखता हूँ ।

पुरुषोत्तमन तंपी खैर, मैं एक ज़रा-सी बात पूछ लूँ ?

कुमार मेनोन कौन सी बात ?

पुरुषोत्तमन तंपी क्या आप इस बात पर विश्वास कर सकते हैं, सत्य कहने वाला—सत्य को साक्षी देकर काम करने वाला कोई एडवोकेट इस दुनिया में है ?

कुमार मेनोन ऐसा कोई है ?

पुरुषोत्तमन तंपी तो समझ लीजिए, कि आप एक ऐसे एडवोकेट के सामने बैठते हैं। सत्य कहने और सत्य के आधार पर काम करने के कारण मेरा प्रोफेशन असफल होता गया। लेकिन मैं उसकी परवाह न कर अपने निश्चित मार्ग पर आगे चला जा रहा हूँ।

कुमार मेनोन (हँसते हुए) आप की बात कुछ विचित्र ही है।

पुरुषोत्तमन तंपी उस जवान लड़के की भी यही बात है। उसका व्याख्यान सुनते ही बनता है। आपने षष्टिपूर्ति की दावत खायी होगी ? उतना ही मधुर है उसका व्याख्यान। एक बार ज़रा चख लें, तो बार-बार चखना चाहेंगे।

कुमार मेनोन (घड़ी देखते हैं) इसी समय वह यहाँ आया करता है। देख लूँ। (उठ कर खिड़की के पास जाकर) रमा, ओ रमा अरी !—कहीं गयी ?

रमादेवी (प्रवेश करती है) पिताजी ने मुझे बुलाया ?

कुमार मेनोन क्या पुष्पांगद आज नहीं आया ?

रमादेवी (घबड़ाती हुई) क्यों क्या हुआ पिताजी ? पिताजी से माँ—

पुरुषोत्तमन तंपी (रोकते हुए) सवाल का जवाब देना।

रमादेवी (बिनय के साथ) नहीं आये।

कुमार मेनोन रोज़ आता है न ?

रमादेवी अक्सर आ जाते हैं ।

पुरुषोत्तमन तंपी इस अक्सर का क्या मतलब है ?

रमादेवी बहुत ही कम दिनों में नहीं आते हैं :

कुमार मेनोन तुम आज इतनी गंभीर क्यों बनी हो ?

रमादेवी आप बातों को ठीक तरह से नहीं समझ पाते । इसलिए आपको ऐसा लग रहा है ।

कुमार मेनोन (ठीक तरह से न समझ कर) ऐं ! क्या कहा ?

पुरुषोत्तमन तंपी अच्छा, वह कैसा आदमी है ?

रमादेवी उतने मोटे या पतले नहीं हैं । ऊँचा कद और प्रतिभा-संपन्न चेहरा ।

पुरुषोत्तमन तंपी उसकी सुन्दरता की बात नहीं पूछ रही हूँ ।

रमादेवी तब ?

पुरुषोत्तमन तंपी पूछ रहे थे, कैसे अध्यापक है ?

रमादेवी बड़े चतुर; अच्छा पढ़ाते हैं; अव्वल दर्जे के वक्ता । विद्यार्थियों के लिए प्राण के समान प्रिय । इनसे अच्छे दूसरे प्रोफ़ेसर उस कालेज में नहीं हैं ।

पुरुषोत्तमन तंपी (कुमार मेनोन से हँसी में) अदालत में गवाही देने लायक शख्स है !

रमादेवी अब अन्दर जाऊँ ? (जाने के लिए मुड़ती है ।)

पुरुषोत्तमन तंपी ज़रा ठहरना । वह तुमको क्या-क्या पढ़ाता है ?

रमादेवी सब कुछ !

पुरुषोत्तमन तंपी यानी ?

रमादेवी स्पेशल सबजेक्ट एकनामिक्स के साथ सभी विषय वे अच्छी तरह पढ़ाते हैं ।

पुरुषोत्तमन तंपी वह कम्युनिस्ट है ?

रमादेबी नहीं तो । वे कम्युनिस्ट नहीं हैं । मुझे अच्छी तरह मालूम है ।

पुरुषोत्तमन तंपी यह “अच्छी तरह” कैसे कह सकती हो ?

रमादेबी रूस में और यूरोप में हुई क्रांतियों के संबंध में उन्होंने मुझे खूब सिखाया है ।

पुरुषोत्तमन तंपी तो क्या हुआ ?

रमादेबी सन् १९१७ में जो क्रांति रूस में हुई—जिस क्रांति ने सारी दुनिया को हिला दिया—और जो क्रांति माओत्सेतुङ्ग के नेतृत्व में चीन में हुई उनके संबंध में जब वे बोलते हैं, कभी सन्तुलन को नहीं छोड़ते । न तो कोई शब्द ज्यादा होता है न कोई शब्द कम ही !

पुरुषोत्तमन तंपी ओहो !

रमादेबी (रुकती नहीं) नेपोलियन बोनापार्ट के नेतृत्व में फ्रांस में जो क्रांति हुई और महात्मा गाँधी द्वारा भारत में जो क्रांति-यज्ञ हुआ उनके संबंध में पढ़ाते समय जितना उत्साह उन्होंने दिखाया, जितनी प्रशंसा उन्होंने प्रगट की, उतना उत्साह या प्रशंसा अगर उस समय प्रगट की होती जब कि वे रूस को कम्युनिज्म का मार्ग दिखा देने वाली क्रांति का वर्णन कर रहे थे तो उनको हम कम्युनिस्टों का हितैषी कह सकते थे । और—और—

पुरुषोत्तमन तंपी और कुछ ?

रमादेबी उन्होंने कई बार यह भी साफ़-साफ़ बता दिया है कि वे किसी खास राजनैतिक दल के सदस्य नहीं हैं ।

पुरुषोत्तमन तंपी अब तक वह आ गया होगा, जाकर देख आओ ।

कुमार मेनोन आ गये हों तो यहाँ भेज देना ।

रमादेबी मैं खुद लिबा लाऊँगी । (जाती है) ।

पुरुषोत्तमन तंपी यह बड़ी अजोब लड़की है !

कुमार मेनोन (खुशी से) उस मास्टर ने बातें अच्छी तरह सिखा दी हैं ।

पुरुषोत्तमन तंपी यों तो पुरुषोत्तमन तंपी को छोटी-सी चुटकी से फैक्टरी के भारी झमेले अदालती खर्च के साथ खारिज किये जा रहे हैं ! (हँसते हैं) ।

कुमार मेनोन अभी कुछ फ़ैसला तो नहीं हुआ !

पुरुषोत्तमन तंपी यही फ़ैसला है । इससे बढ़कर चिनगारी पाचु पर घातक बार और क्या होना है ! पक्का रास्कल ! वह चिल्लाता फिरता है कि वह बड़ा यातना-भुक्त और त्यागी है !

कुमार मेनोन स्वामोजी भी यही सूचना दे रहे थे । उसने चार-पाँच दिन जेल में काटे, यही उसकी यातना है । और हमने कितने कष्ट सहन करके उसको छोड़ाया ! लेकिन उसको हम यातना नहीं कहते ।

पुरुषोत्तमन तंपी उस समय अगर हमने ऐसा न किया होता तो आज भी वह वहाँ पड़ा सड़ता रहता ! उस पर आग लगाने और लूट-डकैत करने के अभियोग लगाये गये थे ।

कुमार मेनोन इस बार 'कांटेस्ट' करने वाला हर एक शख्स अपने को एक तरह से नहीं तो दूसरी तरह से यातना-भुक्त घोषित कर रहा है ।

पुरुषोत्तमन तंपी हमारी यातना और त्याग का अभी आरंभ नहीं हुआ !

पुरुषोत्तमन तंपी हम अपना धन बहा कर त्यागी बन रहे हैं । (हँसी) हमारा यह अथक परिश्रम ही हमारी यातना है । (हँसी) आज मैं पूरा हिसाब लाया हूँ ।

- कुमार मेनोन करीब कितना लगेगा ?
- पुरुषोत्तमन तंपी करीब क्यों ? निश्चित संख्या बता दूंगा ।
- कुमार मेनोन कितनी ?
- पुरुषोत्तमन तंपी (एक कागस का टुकड़ा जेब से निकालकर) ५३.४५ । सब मिलाकर बस यहो है । यानी, जिस दिन आप कैबिनेट में जायेंगे उस दिन की टी पार्टी का खर्चा भी इसके साथ मिला दिया है । (हँसते हैं ।)
- कुमार मेनोन मैं तो थक गया ! सब तरह से बेचैन हूँ । (बार-बार घड़ी देखते हैं ।)
- पुरुषोत्तमन तंपी एक पाँच को अभी जरूरत है ।—सस्त जरूरत ! ज़रा यह लिस्ट देख लीजिए । (कागस देते हैं । श्रीकुमारी अम्मा का प्रवेश । कोई गहना नहीं पहने हैं) इसको क्या हो गया ?
- श्रीकुमारी अम्मा अच्छा, बड़े दादा भो आये हैं ! कुछ बातें जानना चाहती हूँ !
- पुरुषोत्तमन तंपी तुम्हारा चेहरा बिलायती खरहे को तरह हो गया है ?
- कुमार मेनोन बड़ी बेबसी है ।
- श्रीकुमारी अम्मा मैंने कुछ निश्चय कर लिया है !
- पुरुषोत्तमन तंपी कैसा निश्चय ?
- श्रीकुमारी अम्मा मैंने कुछ खास बातों का निश्चय कर लिया है ।
- रमादेवी (दौड़ी हुई आती है ।) मास्टरजी आ गये ! क्या इधर लिवा लाऊँ ?
- श्रीकुमारी अम्मा (चेहरे का भाव बदल कर गुस्से से) मास्टर ? पुष्पांगद ? मने उससे कह दिया था कि आज न आये । तब भी वह आ गया ?

- रमादेवी मैंने बुला भेजा है । मैंने मम्मी से सारी बातें बता दीं न ?
- श्रीकुमारी अम्मा तुमने बुला भेजा ? खूब रहा ?
- रमादेवी मैंने मोटर भिजवा दी थी ! मम्मी के सेटरपैड में मैंने एक चिट्ठी भी लिख भेजी थी !
- श्रीकुमारी अम्मा (गुस्से से भर कर) क्या, क्या कहा ? तुम क्या कह रही हो ? (पुष्पांगद का प्रवेश ।)
- पुरुषोत्तमन तंपी (आवाज ऊँची करके) शटअप ! हूँ ! अन्दर चली जाओ ! दोनों अन्दर जाओ ! हूँ ! हूँ !! (श्रीकुमारी अम्मा चली गयीं । रमादेवी वहीं ठहर जाती है ।) तुम भी अन्दर चली जाओ ।
- रामदेवी (बिना परबाह किये) मैं भी क्यों न सुन लूँ ?
- पुरुषोत्तमन तंपी (उठकर उँगली बिल्लाकर धमकाते हुए) अन्दर जाने को कहा न ? यह कैसी बात है ?
- रमादेवी (प्रतिमा की तरह सीधे खड़ी रहती है ।) मेरी वह अवस्था बीत गयी मामा, जब कि किसी को घूरते हुए देखकर घबड़ा कर भाग जाती थी !
- पुरुषोत्तमन तंपी कैसी धृष्टता है ! तुम जाओगी नहीं ? (उसकी ओर बढ़ते हैं ।)
- रमादेवी (सिर ज्यों का त्यों सीधा रख कर) धूमना-फिरना मनुष्य का जन्म-सिद्ध अधिकार है । उसमें किसी को दखल करने नहीं दूंगी । (उसी तरह खड़ी रहती है ।)
- कुमार मेनोन (पुष्पांगद उदास खड़े हैं, उनसे) क्यों मिस्टर, यह सब क्या है ? बदमाशी की भी हद है ! शिक्षा और सभ्यता का यह अधःपतन ! इसको क्या हो गया ?
- पुष्पांगद (घबड़ा कर) मैं कुछ समझ नहीं पा रहा हूँ ।

रमादेवी समझ में आने लायक भाषा में बोलें, तभी कोई समझ पायेगा ! (पुष्पांगद घबड़ा कर उसकी ओर देखते हैं ।)

कुमार मेनोन (क्रोध के आवेश में) तुम्हारी समझ में आने लायक भाषा ! यह न समझो कि मैं तुम्हारी बातें समझ नहीं रहा हूँ । (थप्पड़ लगाने के लिए उठते हैं । अचानक श्रीकुमारी अम्मा का प्रवेश । वे रमादेवी का हाथ पकड़ कर खींच ले जाती हैं ।)

रमादेवी (जाते जाते) मम्मी, आपने पिताजी से सारी बातें बता दीं न ?

(श्रीकुमारी अम्मा और रमादेवी चली जाती हैं ।)

पुरुषोत्तमन तंपी (अपने आसन पर बैठ जाते हैं ।) इस पीढ़ी के इन लड़कों को यह क्या हो गया ? यह सब इस नयी शिक्षा का नतीजा है । आप बैठ क्यों नहीं जाते मिस्टर ?

कुमार मेनोन बैठिए । बैठिए न ? यहाँ इधर पास बैठ जाइए । (पुष्पांगद चुपचाप एक कुर्सी पर बैठ जाते हैं ।) एक खास बात पर आप से परामर्श करना है । इसीलिए बुला भेजा था !

पुष्पांगद (उद्विग्नता के साथ) क्या बात है ?

पुरुषोत्तमन तंपी एक जटिल एकानामिक प्रॉब्लम आ गया है । उसको कोई एकानामिक प्रोफ़ेसर ही हल कर सकेंगे ।

पुष्पांगद (आश्वासन पाकर) कहिए !

पुरुषोत्तमन तंपी हमें किसी धनतत्त्ववेत्ता की सेवा अनिवार्य है ।

पुष्पांगद प्रार्थना है कि मुझे कोई वेत्ता समझने की कृपा न करें । मैं एक मामूली अध्यापक हूँ ।

पुरुषोत्तमन तंपी कल रात में मैंने आपका व्याख्यान सुना । आप अपने को छोटा कर के दिखाना चाहते हैं । कहा भी है, विनय विद्वान के लिए भूषण है । आपका व्याख्यान बड़ा भड़कीला था ।

पुष्पांगद आप मेरी प्रशंसा कर रहे हैं, धन्यवाद ! (हाथ जोड़ते हैं ।)

गुरुषोत्तमन तंपी आपको यह दलील कि मजदूर-समस्या का मनोविज्ञान के आधार पर अध्ययन करना चाहिए और उसके योग्य व्यक्ति हर फैक्टरी में नियुक्त होना चाहिए मुझे बहुत अच्छी लगी ।

पुष्पांगद (हँसते हुए) साथी पाच्चुनायर जोर दे रहे थे, इसलिए मुझे कुछ बोलना पड़ा ।

कुमार मेनोन (घबड़ाकर) पाच्चुनायर ?

पुष्पांगद हाँ, उन्होंने वह सम्मेलन बुताया था ? वे—

गुरुषोत्तमन तंपी (बीच में कुमार मेनोन से) अच्छा, ऐसा ही सही । आप ज़रा चुप रहिए मिस्टर ! (पुष्पांगद से) जो हो, हड़ताल के विरोध में आप बहुत बोल रहे थे ।

पुष्पांगद मैं इतिहास के दोनों पहलुओं को अनावृत कर रहा था । बस यही एक प्रोफ़ेसर का कर्तव्य है !

गुरुषोत्तमन तंपी (मेज पर हाथ मारते हुए) राइट ! राइट !! तो आप हमारे काम के हैं । समदर्शिता रखने वाले ऐसे व्यक्ति ही हमारे लिए आवश्यक हैं । हहह ! मेरा अनुमान कितना ठीक निकला ! ज़रा भी नहीं चूका ! (एनॉसिंग बेल बज उठती है) कौन है ? कैसी बला है ? (कुमार मेनोन से) आप इस बेल को उखाड़ कर फेंक क्यों नहीं देते ? (उठ कर दरवाज़े के परदे के बीच से देखकर) ओहो ! नेताजी सुभाष चन्द्र बोस वापस आ गये ! निश्चय हो ! पक्का ख़दर ! रंग-डंग भी मिलते हैं । (हँसते-हैं ।) मिस्टर कुमार, आप नेताजी से बातें कीजिए । मैं प्रोफ़ेसर पुष्पांगद से एकांत में कुछ बातें करना चाहता हूँ । ये मेरे बेस्ट फ्रेंड मिस्टर शारंगधर के पुत्र हैं । चलिए मिस्टर पुष्पांगद, हम अन्दर जाकर एक कप चाय पी लें । आज मैं कुछ ख़ाये-पिये नहीं हूँ । चलिए मिस्टर । (दोनों जाते हैं ।)

(घण्टी फिर बजती है।)

कुमार मेनोन कौन है ? अन्दर चले आइए।

[डाक्टर नवाब अली हुसैन का प्रवेश। तीस साल की उम्र। गोरा रंग। लंबा कद। बहुत ही खूबसूरत। उठी हुई लंबी नाक। सुन्दर आँखें। धनी भौंहें। चौड़ा ललाट। तनिक लंबा, आकर्षक मुखड़ा। काले-काले घँघुराले बाल आक्सफोर्ड फैशन में सँवारे हैं। पतली छोटी-सी मूँछों के दोनों सिरों जरा-सा कसर कर नुकीले किये हुए। हँसते समय रक्तितम अधरों के बीच में छोटे-छोटे मोतियों के-से दाँत दिखाई देते हैं। शकल-सूरत और भाव-भंगिमा से असाधारण व्यक्तित्व प्रगट हो रहा है। खहर सिल्क की पेंश और बुशकोट खूब फब रही है।]

अलीहुसैन नमस्ते !

कुमार मेनोन नमस्ते ! आइए; बैठिए। कहाँ से आ रहे हैं ?

अलीहुसैन मैं ? मैं तो शुमाली हिन्दोस्तान का हूँ। अभी मलयालमी ठीक तरह से नहीं आती। बातें बोलने में बहुत गलतियाँ आयेंगी।

कुमार मेनोन परवाह नहीं। बैठ जाइए। (अली बैठते हैं।) जैसा आप का शक है, बोलने में कुछ गड़बड़ी नहीं है। आप उत्तर भारत में कहाँ के निवासी हैं ?

अलीहुसैन मलयालमियों को मैं बड़ी कदर करता हूँ। मेरे गुरु और जोरू दोनों मलयालमी हैं, यह इसका सबब है। यहाँ आने पर मालूम पड़ा कि फैक्टरी में कुछ गड़बड़ हो रही है। हकीकत में आप पर मेरा बड़ा रहम है।

कुमार मेनोन आप कहाँ से आ रहे हैं ?

अलीहुसैन ओह ! यह भूल गया। गरीबखाना आगरा में है और काम है देहली में। मुझे नवाब अली हुसैन कहते हैं। आप

को सिस्टर से मैंने शादी की है ।—डाक्टर नवाब अली-हुसैन हैं ।

कुमार मेनोन (चेहरा मुरझा जाता है) भूल हुई, मैंने सोचा, दूसरा कोई है ।

विमलादेवी (प्रवेश करके आह्लाद के साथ अलीहुसैन से) सरसा जीजी नहीं आयीं ? कहाँ हैं ? हम प्रतीक्षा कर रहे थे । सरसा जीजी कहाँ हैं ? (अधीरता प्रगट करती हैं ।)

अलीहुसैन आप डाक्टर नेबीसा की—?

विमलादेवी छोटी सिस्टर विमलादेवी । सरसा जीजी साथ नहीं आयीं ?

अलीहुसैन डाक्टर नेबीसा सैगल होटल में ठहरी हैं । मेरे वापस होने पर चली आने का इरादा है । मिस्टर मेनोन से कुछ खास बातें करने के वास्ते मैं अगाड़ी आया हूँ । विमला देवी भी गौर कर लें । उस कुरसी पर तशरीफ़ रखिए । (विमला देवी बैठती हैं ।)

श्रीकुमारी अम्मा (भीतर से) जी, जरा इधर आइए । अभी वापस चले जाइएगा । एक ज़रूरी काम है । जल्दी आइए न !

कुमार मेनोन (अलीहुसैन से) क्षमा कीजिए । एक मिनिट । अभी आया । (उठकर अली को पंर से सिर तक एक बार देख कर चले जाते हैं ।)

अलीहुसैन सुना कि विमलादेवी कालिज में पढ़ रही हैं ।

विमलादेवी मैं तो साइकालजी एम्. ए. क्लास में पढ़ रही हूँ ।

अलीहुसैन बेरीगुड ! बड़ी खुशी हुई । डाक्टर नेबीसा का—सा आपका भो फ़ेसकट है ।

विमलादेवी हम तीनों बहनें करोब-करोब एक ही फ़ेसकट रखती हैं । लेकिन सरसा जीजी का रंग, घुँघुराले बाल, खूबसूरती और ग्रेस कुछ और ही है ।

अलीहुसैन (हँसते हुए) तो मैं आपको सिस्टर इन लॉ कह कर पुकार सकता हूँ ।

विमलादेवी जरूर ! बड़ी खुशी से ।

अलीहुसैन डाक्टर नेबीसा के साथ हमारी सगाई पर कई गलतफ़हमियाँ फैली हुई हैं ।

विमलादेवी मेरे मन में किसी तरह की गलत धारणा नहीं है ।

अलीहुसैन मगर मिस्टर मेनोन—

विमलादेवी भैया बड़े विशाल हृदय हैं । हम तीनों को बहुत प्यार करते हैं ।

अलीहुसैन मगर डाक्टर नेबीसा को जो खत भेजा बड़ा दर्दनाक था ।

विमलादेवी आप यह समझ लें कि हमारी जाति कई मामूलों और दस्तूरों को मानती है ।

अलीहुसैन मैं यह समझता हूँ ।

विमलादेवी यही नहीं । धार्मिक आचारों और विश्वासों में भी अंतर है ।

अलीहुसैन यह सच है कि दस्तूरों में बड़ा फ़र्क है । मगर ईमान में—मैंने दोनों को अच्छी तरह सीखा है—मैं कहता हूँ—जोर देकर कहता हूँ—कोई फ़रक नहीं है । चाहे हिन्दू हो, चाहे मुसलमान हो दोनों का एक ही खुदा है । दोनों एक ही खुदा पर भरोसा रखते हैं ।

विमलादेवी लेकिन जन-साधारण आदर्शों की अपेक्षा आचारों और व्यवहारों को प्रधानता देते हैं ।

अलीहुसैन तालीम पाये हुए लोगों को चाहिए कि इनसे ज्यादा से ज्यादा इनसानियत जाहिर करें ।

विमलादेवी समाज रुकावट डाल रहा है । वह अभी उस योग्य नहीं बना । लोग इतने विशाल हृदय नहीं बन पाये हैं ।

अलीहुसैन शस्त्रों को जनात हो तो सोसायटो है । बड़े शस्त्रों की बड़ी सोसायटो बनती है ।

विमलादेवी अच्छा, मैं एक बात पूछ लूँ ? आप बुरा मानेंगे ?

अलीहुसैन कभी नहीं ! पूछ लोजिए ।

विमलादेवी खुद हिन्दू न बन कर आपने सरसम्मा को नेबीसा क्यों बनाया ?

अलीहुसैन इसका राज साफ़-साफ़ बता दूंगा ।—सिस्टर, मेन न वापस क्यों नहीं आ रहे हैं ?

विमलादेवी इस समय भैया कई तकलीफ़ों और चिन्ताओं में घिरे हैं । उधर कोई जरूरी काम होगा । आते होंगे !

अलीहुसैन तो मैं आप से कहूँ ? तीन पुश्तों के पहले हम पक्के हिन्दू थे ।

विमलादेवी ओहो !

अलीहुसैन मेरे अब्बाजान के दादाजान ईसर चन्दर के दो लड़के थे । वे बड़े करोड़पति थे । उनमें बड़े मेरे दादा थे । उन्होंने इस्लाम को कबूल किया । छोटे भाई के पाँच लड़के हुए । वे पाँचों आज आगरा के मिसरा मिल के मालिक और करोड़पति हैं । इन सब का बयान करके मैं जाहिर करना चाहता हूँ कि मेरी नसों में भी हिन्दुवा खून बह रहा है । मैं यह भी जाहिर करना चाहता था हिन्दू होना कुछ मुश्किल नहीं है ।

विमलादेवी फिर क्या हुआ ?

अलीहुसैन सुनिए । जब तक अब्बा जान जोते रहे, अगर मैं हिन्दू बन गया होता तो अब्बाजान की जायदाद से मेरा हक उठ जाता । दो लाख से ज्यादा का नुकसान पड़ता । हमें प्रैक्टिकल रहना चाहिए । नहीं तो जिन्दगी हार जायेगी । और डाक्टर नेबीसा खुशी से राजी हुई । सच बात यह है ।

पिछले अप्रिल में अब्बाजान रुखसत हुए । इस वास्ते अब हम दोनों हिन्दू बनने के इरादे से इधर आये हैं ।

विमलादेवी अच्छा !

अलीहुसैन इस ख्याल से नहीं कि मजहब बदलने से इनसान भी बदल जायेगा । बल्कि डाक्टर नेबोसा को खुशी मेरी भी खुशी है । मेरा दूसरा कोई रिश्ता नहीं है ।

विमलादेवी आपके भाई-बहन— ?

अलीहुसैन मैं अकेला लड़का हूँ ।

विमलादेवी और माँ जी ?

अलीहुसैन जब मैं सात साल का था, अम्मीजान चल बसीं ।

विमलादेवी तब तो आपने पिताजी को खुश रखने के लिए जो कुछ किया, अच्छा ही किया ।

अलीहुसैन अब एक डाक्टर नेबोसा ही मेरे अब्बाजान, अम्मीजान, भाईजान सब हैं । हम दोनों का प्यार बहुत बड़ा प्यार है ।

विमलादेवी शकल-सूरत में भी आप दोनों बहुत मिलते हैं ।

अलीहुसैन अब मिस्टर मेनोन से राय लेकर सब करूँगा । मिस्टर मेनोन क्यों नहीं आ रहे हैं ? ज़रा आवाज़ दें !

श्रीकुमारी अम्मा (कमरे के भीतर से) विमला, विमला ! इधर आ जाना जल्दी वापस जा सकोगी । ज़रूरी बात है । जल्दी आ जाना ।

विमलादेवी (आवाज़ ऊँची कर के) भाभी, भैया कहाँ हैं ? कितनी देर हुई ! क्यों इतनी देर कर रहे हैं ?

श्रीकुमारी अम्मा इधर आ जाना । एक ज़रूरी काम है ।

अलीहुसैन ज़रा पूछ कर आइए, वे क्यों बुला रही हैं ? मिस्टर मेनोन को जल्दी भेज देना । कई बातें करनी हैं । तब जाकर

डाक्टर नेबोसा को ले आऊंगा। अच्छा, अन्दर जाइए।
बुला रही हैं।

विमलादेवी मैं भैया को साथ लेकर अभी लौट आऊँगा। देखिए, मेज़
पर दैनिक और साप्ताहिक पत्रिकाएँ पड़ी हैं। चाय लेकर
मैं अभी आती हूँ। (जाती है।)

[विमला देवी के कमरे में दाखिल होते ही श्रीकुमारी अम्मा पट से किबाड़
बन्द कर देती हैं। आवाज सुन कर अलीहुसैन घूम कर देखते हैं। उदास-
होते हैं। भीतर से श्रीकुमारी अम्मा और विमलादेवी की ऊँची आवाज सुनाई
पड़ती है।]

विमलादेवी यह कैसी अशिष्टता है भाभी ? मैं ऐसा होने नहीं दूंगी।
श्रीकुमारी अम्मा मैं भी ऐसा होने नहीं दूंगी।

विमलादेवी मैं ऐसी भद्दी करतूतों के आगे कभी नहीं झुकूंगी। ज़रा हट
जाना।

श्रीकुमारी अम्मा मैं जानती हूँ कि न झुकने वालों को कैसे झुकाना चाहिए।

विमलादेवी छो ! नानसेन्स ! हट जाना। मुझे मारना चाहती हो ?
तो वही सहो। (भीतर कसमकस। “भैया ! भैया !”
की आवाज। अलीहुसैन उठकर घबड़ाये हुए भीतर की ओर
देखते हैं। थोड़ी देर में आवाज थम जाती है। दो मिनिट
का अवकाश। दायीं ओर का दरवाजा खोल कर श्रीकुमारी
अम्मा प्रवेश करती हैं।)

अलीहुसैन (बड़े आदर के साथ) मिसिस मेनोन हैं न ?

श्रीकुमारी अम्मा (गंभीर होकर) वे उस बरामदे में आ रहे हैं।

अलीहुसैन किस बरामदे में ?

श्रीकुमारी अम्मा इधर से जाइए । (बाहर जाने का दरवाजा बिसा देती हैं । श्रीकुमारी अम्मा अलीहुसैन के पीछे दरवाजे तक पहुँचती हैं और उनके बाहर निकलते ही किवाड़ भीतर से बन्द करके साँकल चढ़ा देती हैं । घूमने पर गीतानन्दजी को पीछे खड़ा देखती हैं ।)

गीतानन्दजी वह कौन था ?

श्रीकुमारी अम्मा उत्तर का कोई मुसलमान ।

गीतानन्दजी (आश्चर्य के साथ) डाक्टर अलीहुसैन नहीं थे ?

श्रीकुमारी अम्मा आप पहचानते हैं ? उनकी छोटी बहन को इसी ने तबाह कर डाला ।

गीतानन्दजी तब कुमार मेनोन की छोटी बहन डाक्टर नेबीसा हैं ?

श्रीकुमारी अम्मा (आश्चर्य के साथ) आप यह कैसे जानते हैं ?

गीतानन्दजी डाक्टर अली हुसैन जैसे सज्जन की कल्पना नहीं की जा सकती । आध्यात्म में भी वे बड़े ऊँचे आदमी हैं । वे बड़े महात्मा हैं । विभिन्न धर्मों का उन्होंने तुलनात्मक अध्ययन किया है । गीतानन्द अपनी मण्डली को साथ लेकर देहली में पूरे सात दिन उनके अतिथि थे । शाही सत्कार और स्वागत हमें मिला ।—यह क्या ! (श्रीकुमारी-अम्मा पश्चात्ताप के भार से स्तब्ध 'स्टूपर' की मारी खड़ी हैं ।) क्या डाक्टर हुसैन को बाहर निकाल कर किवाड़ बन्द कर रही थीं । (श्रीकुमारी अम्मा कोई जवाब नहीं देतीं । गीतानन्दजी खुद दरवाजा खोलते हैं । बाहर देखते हैं और पुकारते हैं) डाक्टर अली हुसैन ! क्या चले गये ? (मोटर चलने की आवाज । गीतानन्दजी लौट कर श्रीकुमारी अम्मा के पास आते हैं ।) श्रीकुमारी अम्मा ! यह क्या किया ? श्रीकुमारी अम्मा !

श्रीकुमारी अम्मा (चिंता से जग कर चारों ओर देखती हैं। घबड़ाई हुई हैं।)
मैंने क्या किया ? निमेष भर के लिए आपकी सारी शिक्षा
मैं भूल गयी ! मैंने यह क्या किया ? हाय ! बहुत ही
बुरा किया ! बुरा किया !

गीतानन्दजी (सारी बातें समझ कर शांत होकर) घबड़ाओ मत ।
वासना का परिणाम, और क्या ? शांत हो जाओ ! पवित्र
प्रेम से पराजित कर सकोगी । मत घबड़ाओ । सब ठीक
हो जायेगा ।

श्रीकुमारी अम्मा (हाथ जोड़कर) आप क्षमा करें। मुझसे आगे ऐसी भूल नहीं
होगी। नहीं। नहीं ही होगी। (गीतानन्दजी के चरणों
पर गिर कर) मेरे अपराध क्षमा हों ! मेरे अपराध क्षमा
हों !! मेरे अपराध क्षमा हों !!! (गीतानन्दजी के चरणों
पर बार-बार सिर टेकती हैं।)

(परदा)

चौथा अंक

स्थान—साइगल होटल तिरुवनन्तपुरम]

[समय—सायंकाल

तिरुवनन्तपुरम में साइगल होटल का एक कक्ष । बड़ी खाट बिछी । मेज और दो चार कुरसियाँ । एक कोने में दो-तीन सूटकेस और स्टील की दो बड़ी ड्रेंक है । एक ओर ज़रा हट कर डाक्टर नेबीसा पालने पर बच्चे को सुलाकर कुरसी पर बैठी लोरी गा रही हैं ।

डाक्टर नेबीसा अत्यंत मोहक सौंदर्य से सम्पन्न हैं । २७ साल की अवस्था । फिर भी २०-२२ की दिखती हैं । विमलादेवी से मिलता-जुलता चेहरा । घुंघराले बाल । काली आँखें । घनी भौंहें । मोतियों जैसे छोटे-छोटे दाँत । सहज सुन्दर लाल ओंठ । कंबु कंठ । भर कर छलक पड़ने वाली छाती । दबा हुआ पेट । कृश कटि । दर्शक मात्र को आकर्षित करने वाला उसका रूप-सौंदर्य केरलीय महिलाओं के सौंदर्य का नमूना है । भाव और बेष से कोई मुसलिम युवती नहीं दिखती । केरलीय युवतियों के समान साड़ी और ग्लाउज़ पहने हैं ।

दरवाजे के पास बैठी पीठ पीछे करके गा रही हैं । भीतर आने वाले को देख नहीं सकतीं ।

खाट के उस तरफ़ गुसलखाने में जाने का दरवाज़ा है ।]

नेबीसा (पालना झुलाती हुई मधुर स्वर में गा रही हैं)

सन्तो देखहु जग बौराना ।

सांच कहीं तो मारन धावै,

झठै जग पत्तियांना ॥

कह हिन्दू मोहि राम पियारा,
 तुरुक कहै रहिमाना ॥
 आपस मैं दोऊ लरि लरि मुए,
 मरम न काहू जाना ॥

[विमलादेवी धीरे से दरवाजा खोल कर प्रवेश करती हैं । गाना सुनकर दरवाजे पर रुक जाती हैं । फिर धीरे से नेबीसा के पीछे पहुँच कर दोनों हाथों से उनकी आँखें बन्द करती हैं ।]

नेबीसा छोड़ दीजिए ! छोड़ दीजिए !! वहाँ जाकर क्या हुआ ? हाथ हटा दीजिए न !

विमलादेवी (अलीहुसैन की आवाज की नकल करके) ये मलयालमी बहुत-बहुत खराब हैं डाक्टर नेबीसा !

नेबीसा (हाथ टटोल कर देखती हैं और फिर कहती हैं ।) विमला ! विमला है ! मुझे मालूम था कि तुम आ जाओगी । अब हाथ हटा लो ! (विमला हाथ हटा लेती हैं ।)

विमलादेवी वे कहाँ गये जीजी ?

नेबीसा (विमला की ओर देख प्रेम से) तुम इतनी बड़ी हो गयीं ? चेहरा एक दम बदल गया ! पहचान लेना मुश्किल है ।

विमलादेवी जीजी के रंग-ढंग, रूप और भाव में भी अन्तर आ गया है ।

नेबीसा लेकिन आज भी मेरे दिल में तुम लोगों के लिए समान प्रेम है और आगे भी रहेगा ।

विमलादेवी मेरा भी यही हाल है जीजी । दूसरी आँख से मैं जीजी को देख नहीं सकती । (पालने पर झुक कर देखती हैं । फिर आह्लाद के साथ) ओ बेटा मेरे ! कनक कलश ! इसका क्या नाम है जीजी ?

नेबीसा जगाओ मत ! बड़ा शरारती है ! इसका नाम कुट्टपन रखा है ।

बिमलादेवी अरे अरे ! तब डाक्टर साहब को बड़ी तकलीफ होगी ।
कुट्पन ! कुट्पन ! चकराते होंगे ! (दोनों हँसती हैं ।)

नेबीसा तुमको उनकी हँसी उड़ाने का मौका मिल गया ! जानती
हो, वे कितने भले आदमी हैं । सद्गुणों के आकर ! महान् !
उनके प्रति ऐसा पोच व्यवहार दूसरा कौन करेगा ? इतना
भी नहीं समझे कि कोई आदमी है ! घर पर आया है !
—बहुत ही बुरा किया !

बिमलादेवी जीजी नहीं जानतीं कि घर की कैसी हालत है । कैसा कोला-
हल हो रहा है ।

नेबीसा कोलाहल ?

बिमलादेवी कहने से नहीं समझ सकोगी । देखते ही बनेगा । सरसा
जीजी, उठिए । हम घर चलें । भैया से मिलें ।

नेबीसा भैया से मिलने के लिए मेरा दिल तड़प रहा है । लेकिन
यह देख कर कि भैया के मन में मेरे प्रति न स्नेह है, न
करुणा, मेरा दिल बहुत ही दुःखी है । जैसे आग जल उठती
है । ऊफ् ! मैंने ऐसा कौन सा पाप किया ? भैया का मन
एकदम बदल गया ! (आँसू पोछती हैं ।)

बिमलादेवी जीजी को देख लेने पर भैया सब कुछ भूल जायेंगे, सब क्षमा
कर देंगे ।—उठिए ड्रेस कर लीजिए । डाक्टर साहब कहाँ
गये ?

नेबीसा वे तिरुवनन्तपुरम में एक मकान खरीदना चाहते हैं । किसी
दलाल से मिलने गये होंगे । अभी आते होंगे ।

बिमलादेवी सच पूछिए तो वे बड़े भले आदमी हैं । जीजी की च्वायस बड़ी
अच्छी रही । जीजी की जगह अगर मैं होती, तब भी यही
होता । (दोनों हँसती हैं) तब मैंने लिखा, इसीलिए आप
लोग आ गये ?

नेबीसा हम तो बहुत दिनों से चाहते थे कि यहाँ आकर भैया के दर्शन करें।

बिमलादेवी उसके साथ मेरा खत भी मिल गया।

नेबीसा अचानक तुमने खत क्यों भेजा ? तुमने तो सविस्तार कुछ लिखा ही नहीं था।

बिमलादेवी उसका कारण है—जोजी, उठिए। कहने या सुनने की बातें नहीं हैं। देखकर समझने की बातें हैं। मेरी प्रबल धारणा है कि मेरा प्लान कभी चूकता नहीं। भैया किसी हालत में जोजी का तिरस्कार नहीं कर सकते।

नेबीसा प्लान ? तुम क्या कह रही थीं ?

बिमलादेवी वह सब रहने दीजिए। जोजी, आप उठिए। जाकर भैया से मिलें।

नेबीसा भैया की तबीयत कैसी है ? वसन्त के वे दाग मिट गये ?

बिमलादेवी छोटी-सी तोंद उभर आयी है। दाग मिटते जा रहे हैं। देखने में खासे पूंजीपति जान पड़ते हैं।

नेबीसा ऊफ़ ! बेचारी पार्वती जोजी ! वे बिगड़ कर चली गयीं न ? भैया ने मुझे एक खत भेजा था। वह गालियों से भरा था। उसमें इसकी सूचना थी।

बिमलादेवी वे तीनों बच्चों को साथ लेकर चली गयीं। ऊफ़, कैसा दर्दनाक नज़ारा था ! बाद में क्या हुआ ? कहाँ हैं ? आज तक कोई खबर पाचुदादा ने नहीं दी। सुनते हैं कि उनका सारा शेर उस पाचुदादा ने बरबाद कर डाला।

नेबीसा हाय ! भाई-बहन इस तरह छेड़-छाड़ करके अलग हो गये ? भैया से यह सारा अनर्थ कैसे हुआ ?

बिमलादेवी इस मामले में एक भैया अपराधी नहीं हैं । एक दिन-रात की बात है । पाचुदादा बुरी तरह पीने के बाद आ धमके । सड़ी गालियाँ सुना रहे थे । छूरी भोंकने और अँतड़ी निकालने की धमकी दी । इस तर्क-वितर्क और झगड़े-फ़िसाद से घर नरक बन गया ! मामा पुरुषोत्तमन तंपी ने और दूसरे तटस्थों ने राय दी कि अब अलग-अलग हो जाना अच्छा होगा । इन बातों की चरचा हम बाद में करेंगे ।— जीजी, ड्रेस कर लीजिए । भैया ने बड़ा भारी मकान बनवाया है । देखेंगी न ?

नेबीसा वापस आकर उन्होंने भी कहा, बड़ा भारी मकान है । लेकिन उनका अपमान किया गया ! यह सोचकर—

बिमलादेवी मैं भी तो वहीं रहती हूँ । और एक छोटा-सा हृदय धड़कता रहता है—जीजी के दर्शन करने, आशीर्वाद पाने और सहायता लेने के लिए व्याकुल हो रहा है ।

नेबीसा वह कौन ?

बिमलादेवी रमा ! वह इस छोटी उमर में सरसा जीजी की तरह— उससे किसी तरह कम नहीं—एक बड़े झमेले में पड़ गयी है !

नेबीसा रमा ? किस झमेले में ?

बिमलादेवी और कुछ अब नहीं बताऊँगी । संभव है, कहीं आत्मघात कर ले । मैं तो यही चाहती हूँ कि ऐसी नौबत न आ पड़े । उसकी कुशल हो ! अगर उसकी जीत होगी तो वह सब की जीत होगी ।

नेबीसा मैं कुछ समझ नहीं पाती ।

बिमलादेवी चलिए । सब प्रत्यक्ष ही देख सकेंगी । देखिए, डाक्टर साहब भी आ गये ।

(डाक्टर अलीहुसैन का प्रवेश)

अलीहुसैन (आह्लाब के साथ) वेरी हैपी न्यूज़ डाक्टर नेबीसा !—
ओहो ! विमलादेवी भी आ गयीं ? बहुत हैपी न्यूज़ है !

नेबीसा इतनी हैपी न्यूज़ क्या है ?

अलीहुसैन अचानक इसी होटेल में मुझे पशुनायर मिल गया ! मिस्टर पशुनायर ! मिस्टर पशुनायर !!

नेबीसा और
विमलादेवी (दोनों एक साथ) पशुनायर ? कौन पशुनायर ?

अलीहुसैन आपके ब्रदर-इन-लाँ मिस्टर पशुनायर । बड़ा भला आदमी है ! अभी इधर आ जायेंगे । मुझे और डाक्टर नेबीसा को अपने घर ले जायेंगे । इधर पास ही रहते हैं । उनकी जोरू पारवती अम्मा और बच्चे सब उसी मकान में रहते हैं । जल्दी रेडी (Ready) हो जाओ । हम चले । विमलादेवी भी चलेंगी ।

विमलादेवी हाय जीजी ! ये तो बड़ी आफ़त में जा फ़ँसे हैं । पाच्चु दादा के जाल में बेचारे जा फ़ँसे हैं !

नेबीसा पाच्चुनायर को आप नहीं जानते । अभी पूरी जानकारी आपको नहीं मिली है ।

अलीहुसैन ठीक तरह से जानता हूँ । बड़ा भला आदमी है । कैसी मोहब्बत है ! कितनी कदर ! कितनी जानकारी ! कैसा तमाशा । मुझे बहुत अच्छा लगा । बड़ा आदमी है । तकलीफ़ों में घिरा है !

नेबीसा आप अभी नहीं जानते ।

अलीहुसैन (खुशी से) लीजिए । आ गये ! कमोन, कमोन ! तशरीफ़ रखिए । मिस्टर पशुनायर ! आइए, बैठिए न ?

[पाचुनायर का प्रवेश । दुबला-पतला शरीर । उभरी हुई हड्डियाँ ! तेज आँखें : बयालीस की अवस्था । खहर-मुण्डु और खहर का जूता । खहर की शाल । बीच-बीच सफ़ेद बने बाल । क्लॉस क्रॉप । बिना सँवारे बिल्लरे हुए बाल । हँसते समय सोना मढ़े हुए दो दाँत चमक उठते हैं । ज्यादा हँसने की आवत नहीं । लंबी मूँछें—बाल इधर-उधर सफ़ेद बने हैं । दो-तीन दिन हुए और किये । आत्मविश्वास प्रगट करने वाला पतला मुँह । ऐसा भाव कि सबकी जानकारी रखता है । बातें करने में चतुर । आवेश के साथ बोलने वाला । बेपरवाह ! रंग-रंग में पूरा क्रांतिकारी । चिनगारी पाचु के नाम से प्रसिद्ध ।]

पाचुनायर (खड़ा रह कर) हा ! हा ! आज बड़े सौभाग्य का दिन है ! विमला भी आयी है ! मैं इधर पास रहता हूँ । नगर के केन्द्र-स्थान में एक अच्छा मकान भाड़े पर लिया है । अब इलेक्शन तक वहीं रहने का इरादा है । ३५० रुपया भाड़ा माँग रहे हैं ।

विमलादेवी मिस्टर पशुनायर बैठिए ।

पाचुनायर पक्का हार्डक्लास बिल्डिंग । व्यूटिफुल साइट ! अच्छी हवा और खूब रोशनी मिलती है । टीले पर बना है । एक लाख पाँच हजार में बिकाऊ होगा ।

अलीहुसैन बिकाऊ पर है ? जरूर ? पता लगाया ?

पाचुनायर इसमें क्या शक है ? बिकाऊ पर है । मैं पता लगाकर आ रहा हूँ । पाचुनायर बीच में रहे तो सस्ते में आ जायेगा । डाक्टर साहब सस्ते में दिलवा दूँगा । कोई चेट्टियार उसका मालिक है । आदमी को और अवसर को देख कर काम चलाता है । मेरा बड़ा दोस्त है । एक लाख से कम में मैं दिलवा दूँगा ।

अलीहुसैन किस्मत की बात है कि आप मिल गये । हम खरीद लेंगे ।

पाचुनायर (नेबीसा की ओर देखकर) सरस्वती की तबीयत कैसी है ? तुम भाग्य की धनी हो । तुमको ऐसे योग्य पति मिल गये, बधाइयाँ ! नल-दमयंती हो । तुम्हारे इस विवाह-संबंध को तुम्हारे बड़े भाई तो स्वीकार नहीं करते । सोच लो, वे कैसे चबाई हैं !

बिमलादेवी (केवल पाचुनायर का विरोध करने और कुमार मेनोन की अनुकूलता प्रगट करने के लिए) भैया की जगह अगर पाचुदादा होते तब भी—

पाचुनायर भाड़ में जाये यह सब मामूल ! इस समय हमारे लिए इस तरह के उत्तर-दक्षिण के विवाह-संबंध ही आवश्यक हैं । भारत में अगर हम अखण्ड एकता चाहते हैं तो इस तरह के मिश्र विवाहों को सार्वजनिक बनाना और उसके लिए अनुकूल सम्मति प्राप्त करना अनिवार्य है । इस बात का विरोध करने वाला, चाहे वह कोई भी क्यों न हो, देशहितैषी नहीं माना जा सकता । उसका पद चाहे कितना ही ऊँचा हो उसको निचला ही समझ लेना चाहिए । इसमें सन्देह नहीं कि वह निन्द्य, नीच और जुगुप्सित है । सुनिए साहब, मेरी राय है कि अब आप उस आदमी से किसी तरह का रिश्ता-नाता न जोड़ें । अपनी चोजों को मेरे घर पर ले जाने का प्रबंध करें । आप लोगों को देखकर पार्वती कितनी खुश होगी ? बेचारी ! जानते हैं वह तुम लोगों को कितना प्यार करती है । चाहे ये उसे तनिक भी न चाहते हों ।

बिमलादेवी पाचुदादा, आप तो हमें एक बार पार्वती जीजी को देखने भी नहीं देते । (नेबीसा से) जीजी, आप अन्दर जाकर ड्रेस कर लीजिए । हम चलें । (नेबीसा पीछे के दरवाजे से अन्दर जाती है ।)

पाञ्चुनायर नानसेंस ! इन लोगों ने उस बेचारी को दुतकार कर बाहर कर दिया । उसके बाद घर का मकान ढाह कर बराबर कर दिया । उसकी जगह नया महल खड़ा किया । यही सच बात है, साहब !

अलीहूसैन मुझे लगा कि कुमार मेनोन भले आदमी हैं ।

पाञ्चुनायर हाँ, आदमी बड़े भले हैं; लेकिन किसी को सोते में—

अलीहूसैन (हँसते हुए) ये कहती हैं, साफ़ दिल के आदमी हैं ।

पाञ्चुनायर साहब, आप खीरा जानते हैं ? खीरा ? (इशारे से कुछ बताते हैं ।)

अलीहूसैन ककरी—कुकुंवर ?

पाञ्चुनायर हाँ, कुकुंवर जैसा उनका दिल है । अच्छी ठण्ड ! दोषरहित और गुणहीन !

बिमलादेवी भैया की गैरहाज़िरी में यह निन्दा करना अशिष्टता है, पाञ्चु दादा !

पाञ्चुनायर (अनसुना करके) और उनकी महत्ता है कि उन्होंने अपनी 'पूँछ' काट दी !

अलीहूसैन पूँछ काटने के क्या माने हैं ?

पाञ्चुनायर कुमार मेनोन उनका पूरा नाम है । मगर इधर कुछ दिनों से उन्होंने मेनोन की उपाधि छोड़ कर अपने विशाल हृदय का परिचय दिया है ।

अलीहूसैन ऐसा ?

पाञ्चुनायर अब तो जाति या धर्म के चिह्नों से रहित कुमार मात्र हैं ।

अलीहूसैन यह हमें नहीं मालूम था ।

पाञ्चुनायर यह कैसे मालूम होता ? काम तो एक दम उलटे कर डालते हैं । लेकिन एक बात, अपनी पत्नी से वे कहीं भले हैं ।

वह औरत नहीं, डायन है। असल में शूर्पणखा ! शूर्पणखा समझ सकते हैं साहब ?

अलीहुसैन क्यों नहीं समझ सकते हैं ? रामायण को तीन दफ़ा मैंने बाँचा है। आपके एषुत्तच्छन की रामायण डाक्टर नेबीसा रोज़ बाँचती हैं और माने भी बताती हैं।

पाच्छुनायर बड़ी खुशी हुई। आप अपनी संस्कृति और सभ्यता पर गर्व कर सकते हैं। बड़े सौभाग्य की बात है कि आपसे मिल सका। अपनी चीज़ें हमारे मकान में ले जाने का प्रबंध करें।

बिमलादेवी पार्टी से उस मकान का किराया दिया जाता है ?

पाच्छुनायर कौन-सी पार्टी ? क्या तुम नहीं जानतीं कि मैं सर्वतन्त्र स्वतंत्र हूँ। मैंने निश्चय कर लिया है कि अब मैं किसी पार्टी का नहीं रहूँगा। मैं सब की लघाई-गुराई समझे हूँ। साहब की खातिर यह सब बता रहा हूँ। बाईसवीं उमर में मैंने कालेज छोड़ा और तब से राजनैतिक क्षेत्र में आया हूँ।—

अलीहुसैन कितने साल पहले ?

पाच्छुनायर कोई बीस साल पहले। उस ज़माने में किसी राजनैतिक कार्यकर्ता को जेल में मार-पीट के पुरस्कार ही मिलते थे। (आगे के दाँत बिखाकर) यह देखो, ये तीनों-एक ही थप्पड़ में टूट गये थे। कई दिनों तक मैं अण्डरग्राउण्ड भी रहा। फिर जेल गया। अनेक यातनाएँ सहीँ। आखिर जब आज़ादी मिली तो क्या देखते हैं। जिसको लाठी उसकी भेंस वाली कहावत चरितार्थ हो रही है। सच्चे देश-सेवकों को एक 'टिकट' भी न मिलने की नौबत आ गयी है। सच पूछिए तो जनतंत्र के नाम पर एकतंत्र ही यहाँ चल पड़ा। वही आज जारी है। फिर कैसे देश और देशवासियों का भला हो। आप ही कहिए।

अलीहूसेन मैं राजनैतिक नहीं हूँ। लेकिन यह बात समझ में नहीं आ रही है कि यहाँ एकतंत्र शासन चल रहा है।

विमलादेवी (विजय के भाव से) मार्को का सवाल है।

पाच्चुनायर अच्छा ! मैं साफ़ कर दूँगा। तुर्की में कमालपाशा का या ईजिप्त में नासर का शासन जनतंत्र कहा जा सकता है ?

विमलादेवी और अलीहूसेन (एक साथ) नहीं।

पाच्चुनायर लेकिन ज़माने की रफ़्तार में कभी-कभी इस तरह एकतंत्र शासकों के नेतृत्व में देश की प्रगति को लक्ष्य में रख कर काम करना पड़ता है। उलटे प्रगति को लक्ष्य में रखकर जो कार्य करने होते हैं, उन्हें छोड़ देना पड़ेगा। रूस में स्तालिन के नेतृत्व में भी यही हुआ। लेकिन, यह स्थिति नियत समय से आगे बढ़ने पर प्रगति की जड़ में कुल्हाड़ी मार देगी। इसलिए अगर हम देश में किसी तरह की प्रगति चाहते हैं तो प्रतिष्ठा प्राप्त आज के नेताओं को निकाल बाहर करने का यत्न पूरी शक्ति लगा कर करना होगा। व्यक्ति-पूँजी को छोड़ कर रूस में लेनिन का दिखाया हुआ संयुक्त नेतृत्व अमल में लाने का समय बीत गया। क्या आप सोचते हैं कि किसी पार्टी के नेता या अनुयायी इसके लिए राज़ी होंगे ?

अलीहूसेन कभी नहीं।

पाच्चुनायर इसी कारण मैं सभी पार्टियों को छोड़ कर इस बार स्वतंत्र खड़ा हुआ हूँ। मैं अपनी अन्तरसाक्षी का आदर करता हूँ। मेरा विश्वास है कि मेरी वाणी में बुराइयों को ताकीद करने और उनका मुकाबिला करके उनको रोक रखने की शक्ति रहती है। क्योंकि रोटी के एक टुकड़े के लिए मैं अपने आदर्शों को तिलांजलि देने वाला नहीं हूँ। चाँदी के

तीस टुकड़ों के लिए क्राइस्ट को बँधवा देने वाला मैं जूदास भी नहीं हूँ ।

अलीहुसैन वाह ! वाह !!

(नेबीसा ड्रेस करके बाहर आती है)

पाचुनायर अब हम चलें ।

अलीहुसैन क्यों ? हम पशुनायर के यहाँ जा रहे हैं न ?

नेबीसा पहले भैया के दर्शन कर लें । बाद में और कही ।

अलीहुसैन हमारी बेइज्जती करेंगे तो बड़ी मुश्किल होगी ।

पाचुनायर जरूर ही वह इस बार भी बेइज्जती करके छोड़ेगा ।

बिमलादेवी पाचु दादा क्या जानते हैं कि सरसा जीजी भैया को कितना प्यार करती हैं !

पाचुनायर वे तो आँखें मूँद कर चुपचाप बैठे रहेंगे । और उनकी स्त्री मिसिस साहबा झाड़ू मार कर निकाल देगी ।

(दरवाजे पर कोई दस्तक देता है ।)

नेबीसा कौन है ? अन्दर आ सकते हैं ।

[पार्वती अम्मा प्रवेश करती हैं । बुबली-पतली, पिच्छे हुए गाल । धँसी हुई आँखें । शोकपूर्ण चेहरा । बत्तीस साल की उमर, पঁतालीस साल की लगती हैं । सफ़ेद बाल सिर पर स्पष्ट बिलाई देते हैं । बाल बिखरे पड़े हैं । मंली साड़ी और ग्लाउज पहने । कुमार मेनोन के ड्राइंगरूम में जो पोरट्रेट रखा है उससे मिलता-जुलता चेहरा ।]

नेबीसा और (एक साथ) अरे ! यह कौन आ रही हैं ? ओह !
बिमलादेवी

पार्वती अम्मा मुझे देख कर आप को डर लगता है ? (खाँसती हैं ।)

बिमलादेवी लगा कि माताजी श्मशान से निकल कर आ रही हैं ।

- नेबीसा पार्वती जीजी का यह हाल ! यह क्या हुआ ?
बीमार थीं ?
- अलीहुसैन मिसिस पशुनायर ?
- पाचुनायर (ईर्ष्या के साथ) जो बीमार पड़ी है, यहाँ कैसे आयी ?
- नेबीसा घर क्या इतनी पास है ? बैठ जाइए जीजी ।
- पाचुनायर अब औरतें बातें करें । तब तक हम उसे देख आयें (उठता है ।)
- अलीहुसैन येस ! येस ! हम जाकर देख आयें । (दोनों जाने को मुड़ते हैं ।)
- पार्वती अम्मा घर ? फिलहाल यह बगलवाला कमरा ही हमारा घर है ।
(बैठती है ।)
- विमलादेवी (आश्चर्य के साथ) हम यह क्या सुन रहे हैं पाचुदादा ?
- पाचुनायर (पीछे घूम कर खड़े होते हैं) सच बात ! और क्या ? मैं यही बता रहा था कि घर लिया है । आज की रात में घर में प्रवेश करने का मुहूर्त है । अच्छा साहब, चलें । (दोनों जाते हैं ।)
- पार्वती अम्मा सब के सो जाने पर हम घर बदलते हैं । तीन-चार महीनों से इस तरह हम होटल बदलते रहते हैं । (खाँसती है)
- पाचुनायर (पीछे घूम कर) इलेक्शन के सिलसिले में मैं दौरे पर था । राज्य भर में घूम रहा था । कभी किसी एक जगह थोड़े दिनों तक रह नहीं सका । आगे ऐसा नहीं होगा । इसी-लिए अब यह मकान लिया है । चलें साहब ! (बाहर पहुँच जाते हैं ।)
- नेबीसा जल्दी वापस आना । हम जाने को तैयार बैठे हैं ।
- पार्वती अम्मा कहाँ जाने की तैयारी में हैं ?
- नेबीसा भैया से मिलने ।

विमलादेवी पार्वती जीजी आप भी आइए हम एक साथ चलें ।

पार्वती अम्मा मैं कैसे आ सकूंगी ? (खाँसती हैं)

नेबीसा बुरी तरह खाँसती हैं । किसी को दिखाया नहीं ?

पार्वती अम्मा हम तो हृद पार कर गये !

विमलादेवी पाच्चुदादा ने सब बरबाद कर डाला !

पार्वती अम्मा उनका इरादा ज़रा भी बुरा नहीं है । सब कुछ भलाई के लिए करते हैं । लेकिन जहाँ जाते हैं, सब कहीं बरबादी ही बरबादी होती है । हमारे सिर पर यही बदा है ।

नेबीसा फिर कैसे आप लोगों को—

(खुले हुए दरवाजे से पुष्पांगद का प्रवेश ।)

विमलादेवी (आश्चर्य के साथ) मास्टर पुष्पांगद ! (नेबीसा से) रमा के —रमा के—रमा के मास्टर हैं । (पुष्पांगद से) मेरी बड़ी सिस्टर डाक्टर नेबीसा ! (पुष्पांगद और नेबीसा परस्पर अभिवादन करते हैं) ।

पार्वती अम्मा मास्टर पुष्पांगद जैसे उदार हृदयों की सहायता हमें प्रधानतः मिलती है ।

पुष्पांगद सुकू (पाच्चुनायर का पुत्र) ने कहा कि पाच्चुनायर यहाँ हैं ।

पार्वती अम्मा वे अभी आयेंगे । बैठ जाइए ।

विमलादेवी मास्टर, आपने पाच्चुदादा से अपनी दोस्ती की बात हमसे नहीं बतायी ! इसे क्यों छिपा कर रखा ?

पुष्पांगद किसी बुरी नीयत से नहीं । (हँसते हैं) ।

(डाक्टर अलीसाहब और पाच्चुनायर का प्रवेश)

अलीमुसैन ब्यूटिफुल साइट ! कुछ भी दाम हो, हम खरीद लेंगे ।

पाञ्चुनायर हलो ! पुष्पांगद ! क्या कोई नयी खबर है ? (अली हुसैन से) मेरे—अभिन्न मित्र और मददगार प्रोफ़ेसर पुष्पांगद ! (पुष्पांगद से) मेरे ब्रदर इन लॉ डाक्टर नवाब अली-हुसैन ! (अली हुसैन और पुष्पांगद आपस में हाथ जोड़ते हैं)

पुष्पांगद चर्चा करने की कुछ बातें हैं । बहुत ही जरूरी बातें हैं ।

पाञ्चुनायर (अली हुसैन से) हम ज़रा अपने कमरे में जाते हैं । जल्दी ही फिर मिलेंगे ।

बिमलादेवी हम पार्वती जीजी को भी घर ले जाते हैं ।

पाञ्चुनायर छो ! नान्सैस !

पार्वती अम्मा ज़रा मैं भी जाऊँ ! भइया को एक बार देखने की बड़ी इच्छा हो रही है ।

अली हुसैन जाने दीजिए मिस्टर पशुनायर ! भाई-बहन हैं न ?

नेबीसा निश्चय ही वापस ला दूँगी ।

पाञ्चुनायर (निमेष भर सोचकर) मिसिस साहिबा के भरोसे पर जा सकती हो । (पुष्पांगद से) हम चलें । (अली हुसैन से) बहुत 'बिज़ी' डाक्टर साहब ! आज ही फिर मिलेंगे । (पाञ्चुनायर और पुष्पांगद जाते हैं)

नेबीसा (अली हुसैन से) देखिए, बच्चे को देख लेना ।

अली हुसैन मिसिस मेनोन की झाड़ से अपने को बचा लेना । सावधान ! गुडबाई !

[परदा]

पाँचवाँ अंक

स्थान—कुमार मन्दिर का ड्राइंग रूम ।] [समय—चौथे अंक के बाद अधिक समय नहीं बीता ।

[श्रीकुमारी अम्मा और कुमार मेनोन बातें कर रहे हैं । कुमार मेनोन कुरसी पर बैठे हैं । हाथ में कलम । मेज पर कुछ फ़ाइलें । श्रीकुमारी अम्मा थोड़ी दूर पर खड़ी हैं । आज का वेष बिल्कुल भिन्न है । कोई गहना नहीं । सफ़ेद रंग की मामूली साड़ी और सफ़ेद रंग की ब्लाउज पहने हैं । बाल नहीं सवारे हैं, बेपरवाही से पीछे बांध रखे हैं ।]

कुमार मेनोन (पैर से सिर तक देख कर) वेष क्यों बदल दिया ?

श्रीकुमारी अम्मा गुरु जी के दिव्य उपदेश मुझे प्राप्त हुए हैं ।

कुमार मेनोन इसलिये ?

श्रीकुमारी अम्मा वेष-शृंगार में कोई तथ्य नहीं है ।

कुमार मेनोन वेष-शृंगार बदल देने से क्या होता है ?

श्रीकुमारी अम्मा मेरे मन और हृदय की गति भी बदल गयी । मैंने यह आज समझ लिया कि अब तक का मेरा जीवन निरर्थक था ।

कुमार मेनोन इसलिये ?

श्रीकुमारी अम्मा मैं एक भिन्न जीवन बिताना चाहती हूँ ।

कुमार मेनोन तुम्हारी बातें निरर्थक हैं ।

श्रीकुमारी अम्मा उन्होंने मुझे सिखा दिया—समझा दिया कि आध्यात्मिक शांति के समान दूसरी कोई अभिकाम्य वस्तु नहीं है और अति विशाल समदर्शिता और अत्यंत पवित्र प्रेम से ही हम उसको प्राप्त कर सकते हैं ।

- कुमार मेनोन मैं यह सब दौड़-धूप क्यों कर रहा हूँ, तुम जानती हो ?
- श्रीकुमारी अम्मा जौ हो, निश्चय ही अनावश्यक क्लेश-सहन अपेक्षित नहीं है ।
- कुमार मेनोन तुम्हारे प्रति प्रेम के कारण यह सब किया जा रहा है ! जिस किसी संभव उपाय से मैं तुमको उस उन्नत पद पर आसीन देखना चाहता हूँ जो दूसरों के लिए अप्राप्य है ।
- श्रीकुमारी अम्मा आप इस बात का गर्व कर सकते हैं कि आपको अभिलाषा पूर्ण हो गयी ।
- कुमार मेनोन एक तुम्हारे हित के लिए मैं इस राजनीति में कूद पड़ा हूँ । तुमको—
- श्रीकुमारी अम्मा मैं तो यही कहूँगी कि आपका यह काम अच्छा नहीं है । मैं चाहती हूँ कि आप इससे पीछे हट जायँ ।
- कुमार मेनोन (गुस्से में आकर) तुम यह क्या कह रही हो ? आखिर तुम क्या जानती हो ? तुम्हारे बड़े भाई तुमको मूर्खा कह रहे थे, यह सही जान पड़ता है । किसी बीमारी से तुम पीड़ित हो । इस पूजा आदि के लिए मैंने हाँ की, यह सोच कर कि तुमको कुछ सात्वना मिले ! लेकिन अब—
- श्रीकुमारी अम्मा मेरी बातें गौर से सुन लीजिए । सब सुख चाहते हैं । लेकिन यह सुख कहाँ रहता है ? कैसे प्राप्त हो सकता है ? इस सत्य की बिना पहचाने हम मिथ्यापूर्ण सांसारिक भोगों के पीछे मारे-मारे फिरते हैं और अपने जीवन को नष्ट करते हैं । सोच लीजिए यह कैसी दुःखपूर्ण स्थिति है ।
- कुमार मेनोन (असह्य बेबना के साथ) ऊफ़ ! ऊफ़ !!
- श्रीकुमारी अम्मा हम इस बात को नहीं समझते कि शाश्वत सत्य और अनंत सुख हमी में निहित है । मन शान्त रहे । सांसारिक विषयों का मोह दूर हो । जिन क्षुद्र कारणों के आघार

पर छोटे-बड़े की भावना की जाती है वे मिट जायें । तभी हम अपने अन्तर का शाश्वत सत्य देख पायेंगे ।

कुमार मेनोन यह दो-चार घण्टे पहले की श्रीकुमारी नहीं हैं ?

श्रीकुमारी अम्मा दो-चार घण्टे क्यों, दो-चार निमेषों के अन्दर भी परिवर्तन हो सकता है !

कुमार मेनोन (सहानुभूति के साथ) श्रीकुमारी, तुम्हें थोड़ा-सा विश्राम करना अनिवार्य है । आज दिन भर तुम स्वामीजी के उपदेश सुनती रहीं । सच पूछो तो हमें बिल्कुल अच्छा न लगा । हर बात की सीमा होती है । क्या पूजा बन्द करके वापस जाने का समय नहीं हुआ ? मैं तुम्हारे स्वभाव को विचित्रता जानता हूँ । इस कारण मैं इस सब को अनुमति दे रहा हूँ । तुमसे यह बात छिपी नहीं है । अब जाकर भोजन कर के थोड़ी देर आराम कर लो ।

श्रीकुमारी अम्मा मैं सब समझ रही हूँ । आप ही कुछ समझते नहीं । मेरे लिए यह आराम करने का समय नहीं है । मैं आप से और कुछ बातें कहना चाहती हूँ । उसके बाद उनके पास जाऊँगी ।

कुमार मेनोन दया करके एक काम करो । अब मैं व्यस्त हूँ । अब तुम स्वामी के पास जा सकती हो । तुम्हारे बड़े भाई आदि अभी आ जायेंगे । पानी की तरह पैसा बहा रहा हूँ । इसकी तकलीफ़ तुम कैसे समझ सकती हो ? उनके आने के पहले—

श्रीकुमारी अम्मा देखिए, कोई आ रहे हैं । मैं आप से कुछ बातें कहना चाहती थी । अब मैं थोड़ी देर के बाद आ जाऊँगी ।

कुमार मेनोन नहीं; तुम जाकर आराम कर लो ।

[बिमलादेवी और नेबीसा का प्रवेश । श्रीकुमारी अम्मा उनको देख कर पहचान लेती हैं । लेकिन न देखने का बहाना करके चली जाती हैं । कुमार

मेनोन को एड़ी से छोटी तक एक बार दोनों देखती हैं । कुमार मेनोन हाथ की कलम मेज पर डाल कर सिर झुकाये चुपचाप बैठे रहते हैं ।]

विमलादेवी ऊफ़ ! यह क्या हुआ भैया ? भाभी के वेष और भाव में बड़ा परिवर्तन आ गया है । क्या आपने नहीं देखा ? अब भी स्वामीजी वापस नहीं गये ! मैंने आज सबेरे भैया से कहा था—

कुमार मेनोन (बीच में) विमला, तुम्हारी बातें सीमा को पार कर जाती हैं ! ऐसा कौन-सा पाप मैंने किया ! (दुःख-भार से सिर झुकाये बैठ जाते हैं ।)

विमलादेवी भैया, सरसा जीजी को मैं साथ ले आयी हूँ । और एक व्यक्ति भैया से मिलने आया है । बगल वाले कमरे में बैठा है आपके आगे आने से डरता है । आपके बुलाने पर इधर आ जायेगा । (कुमार मेनोन अब भी सिर झुकाए बैठे रहते हैं)

नेबीसा मेरी ओर एक बार नहीं देखेंगे ? मैंने ऐसा कौन सा अपराध किया है ! स्वप्न में भी मैंने नहीं सोचा था कि आप में इतना परिवर्तन हो जायेगा । (सिसकियाँ)

कुमार मेनोन (सिर उठा कर नेबीसा के चेहरे पर नज़र गड़ाये) सरसू ! तुमने मुझे बरबाद कर डाला ! अपमान के भार से जैसे मैं दबा जा रहा हूँ । मैं तुमको जितना प्यार करता था, उतना दूसरे किसी को नहीं करता था । अपने बच्चों से बढ़कर मैं तुमको प्यार करता था । (अश्रुप्रवाह)

नेबीसा भैया का प्यार मैं खूब जानती हूँ । और मैं भैया को जितना प्यार करती हूँ, उतना इस दुनिया में और किसी को नहीं करती । भैया के लिए मरने के लिए भी मैं तैयार हूँ ।

आप मुझे प्यार नहीं करते। मेरा दिल जल रहा है।
(सिसकियाँ)

कुमार मेनोन (माँ के चित्र की ओर देख कर) माँजी बहुत चाहती थी कि तुम एक डाक्टर बन जाओ। तुम्हारी तेज बुद्धि और पढ़ने में रुचि देख कर मैंने भी सोचा कि माँजी की इच्छा सफल हो जायेगी। उन दिनों पैसे की तंगी थी, फिर भी मैंने तुमको दिल्ली भेज दिया।

नेबीसा भैया की मैं आजन्म आभारी रहूँगी।

कुमार मेनोन (बिकाराधीन होकर) तब भी तुमने यह धोखा दिया। आँख उठा कर तुम्हारी ओर देखने में मैं असमर्थ हूँ। ऊफ़ ! तुम बड़ी कुलकंटक हो !

[जवाब देने में असमर्थ होकर नेबीसा सिसक-सिसक कर रोती है]

बिमलादेवी (हल्के और उलाहने की आवाज़ में) भैया, आप अपने को गाँधी के बड़े भक्त मानते हैं। आप अपने को जाति और धर्म से दूर दिखाना चाहते हैं। उसके लिए अपनी मेनोन की उपाधि आपने काट दी। तिस पर नेशनल कांग्रेस के टिकट पर चुनाव लड़कर रामराज्य की स्थापना करने के लिए अघीर हो रहे हैं। इतना सब कुछ करने के बाद आप ऐसी बातें अपने मुँह से कैसे निकाल रहे हैं ? आप यह खद्दर का कपड़ा उतार कर फेंक दीजिए ! इस निरीह बहन की ज़रारसी भूल भी आप क्षमा नहीं कर सकते हैं तो आप इस सब के योग्य नहीं हैं। (नेबीसा से) सरसा जीजी, आप रोइए मत।

नेबीसा (गद्गद होकर) मेरा अपराध आप क्षमा करें, भैया ! आखिर मैं एक अबला नारी हूँ। 'उनके' जैसे एक श्रेष्ठ योग्य

पुरुष को मैंने प्यार किया। अपने मन पर काबू रखने की मैंने बड़ी कोशिश की। मैं जीत नहीं सकी। मैं हार गयी। लेकिन उस हार पर आज मैं पश्चात्ताप नहीं करती। मेरा दृढ़ विश्वास है कि वे बड़े उदार और विशाल हृदय हैं। मुझे सिर्फ एक बात का खेद है, आप के स्नेह में यह कैसा परिवर्तन आ गया है !

कुमार मेनोन जो हो, आप सबने मिल कर मेरा सर्वनाश कर डाला ! मैंने पाच्छुनायर की दिल खोल कर मदद की। तभी वह आदमी बना, नेता बना। साथी पाच्छुनायर बन कर घूमने लगा। और आज वह और उसकी स्त्री पार्वती मेरे दुश्मन !

विमलादेवी आप विपक्षियों को दुश्मन न समझें।

कुमार मेनोन यह भी कोई आदर्श है ! घर में इसके कारण (विमला को लक्ष्य कर) अल्प भी स्वास्थ्य नहीं है। लेकिन मेरे कारण—मेरे शांतिपूर्ण व्यवहार के कारण मारपीट और खूनखराबी की नीबत नहीं होती।

विमलादेवी (हल्की आवाज में) ऐं ! मेरे कारण, नहीं भैया। यह सब आप ही के कारण हो रहा है। सोचते कुछ हैं, कहते कुछ और करते कुछ और हैं। जब तक आप यह क्रम दूर नहीं करेंगे—

नेबीसा (बीच में) विमला, तुम ऐसी रूखी बातें न करो। भैया कई तरह की तकलीफों में घिरे हैं। उन तकलीफों को कम करने का यत्न करो। ऐसी बातें करके उनको और दुःख देना ठीक नहीं है।

विमलादेवी (हठीली आवाज में नेबीसा से) जो कहती हूँ, सत्य ही कहती हूँ। जीजी खुद सोच कर देखें। हमने आते ही

इनसे कहा कि बगल वाले कमरे में एक व्यक्ति इनसे मिलने की प्रतीक्षा में बैठा है । लेकिन इतने समय के बाद भी यह पूछने की सज्जनता भैया ने नहीं दिखायी । (व्यंग्य स्वर में) भैया अगर कोई मंत्री या कुछ बन जाये तो—ऐ मेरे भगवन ! —

कुमार मेनोन तुम इसको इधर ले आयीं और किसी को बाहर खड़ा कर दिया ! इसमें मेरा क्या अपराध है ? इस घर की सारी विक्तियों का तुम्ही कारण हो । (उठ कर दरवाजे के पास जाकर) वहाँ कौन है ? अन्दर आ जाना । (पार्वती अम्मा का प्रवेश) ओह ! यह कौन ? माता जी ! नहीं ; यह परिवर्तन ! (आश्चर्य के साथ खड़े रह जाते हैं ।)

बिमलादेवी पार्वती जीजी माँजी की तरह बुढ़ी हो गयीं ! हाय ! भैया, आपने जीजी का यह हाल कर दिया !

पार्वती अम्मा मेरी उमर तैंतीस साल की हो गयी ! (खाँसती है) मैं बहुत जी चुकी ! (खाँसती है)

कुमार मेनोन क्या मैंने कुछ बिगाड़ा ? सबके लिए खुद वह और उसका पति जिम्मेवार है । काँटा बोया, काँटा लिया । (घड़ी देखते हैं)

बिमलादेवी इतनी निर्दयता ! पार्वती जीजी तो तीन-चार अबोध बच्चों को साथ लेकर दुनिया भर के होटलों और सरायों में हाथ फैलाये झक मारती हैं । इधर आप तीन मंजिले सुन्दर मकान में आराम कर रहे हैं । इधर आप घड़ी में नज़र रखे मन्त्री-शासक बनने की प्रतीक्षा में गुलछरें उड़ा रहे हैं । इनकी कष्ट-स्थिति की कल्पना भी आप नहीं कर सकते भैया !

कुमार मेनोन (पार्वती अम्मा से) उसने तुमको होटल में रखा है ?

नेबीसा सगल होटल में हमारे बगलवाले कमरे में ।

पार्वती अम्मा भैया, आप इस बात को भूल गये कि अलग्गोक्षा करते समय मेरे हिस्से में मकान नहीं रखा गया था ? (खाँसती हैं)

नेबीसा जीजी, आप बैठ क्यों नहीं जातीं ? (पार्वती अम्मा थक कर कुरसी पर पड़ जाती हैं ।)

कुमार मेनोन अलग्गोक्षा में जो पा लिया, उसका क्या हुआ ? (गुस्से में आकर) देख तो रही हो न, उस ओर जो मकान उठ रहा है !

बिमलादेवी जो बीत गया सो बीत गया । अब उसकी चिंता करने से क्या फायदा ? भैया, अब इनके पास कुछ बचा नहीं है । जीजी आप से कुछ मदद माँगने आयी हैं ।

कुमार मेनोन (उपहास के स्वर में) मैं क्या मदद कर सकता हूँ ?

पार्वती अम्मा मैं 'उनसे' कुछ कह सुन कर नहीं आयी । फिर भी आप से मेरी यह प्रार्थना है—

कुमार मेनोन सुनूँ, तुम्हारी प्रार्थना क्या है ?

पार्वती अम्मा आप पीछे हट जायें !

कुमार मेनोन क्या, क्या कहा ?

पार्वती अम्मा उनके पास एक पैसा भी नहीं है । मुझे ज्यादा कुछ नहीं कहना है । (थक कर कुरसी पर झुक पड़ती हैं) माँजी की खातिर, मेरी खातिर आप जो योग्य समझें करें ।

कुमार मेनोन (हल्की आवाज में) अच्छा ! तुमने बड़ी आसानी से कह दिया । फ्रैक्टरी में उसके कारण कितने नाश-नष्ट हुए ! तुम जानती हो ? वह अखबारों में कैसी बुरी गालियाँ लिखता है ! दूसरों से लिखाता भी है । शायद तुम नहीं देखती हो ? ऐसे नीच और दुष्ट आदमी के लिए जिसने

मेरी बहन को बरबाद कर डाला, जिसने मेरे मुँह पर कालिख पोत दी और जिसने मेरे लिए गड्ढा खोद रखा है—छी !
 —छी ! —बल्कि मैं यह सब तुमको क्यों सुनाऊँ ? तुम इसका मोह छोड़ देना ; तुम्हारी प्रार्थना व्यर्थ है !

[रमादेवी का प्रवेश । रेशमी लहंगा और कीमती रेशमी ग्लाऊज और हाफ साड़ी पहने है । झंग-झंग गहनों से सजे । बाल ढंग से सँवार कर बाँध रखे हैं । बाल के जूड़े में फूलों की माला खोस रखी है । पैरों में कीसती चमकदार चप्पलें । हाथ में सुन्दर बैग । कहीं बाहर से आ रही है । वह दौड़ती हुई आकर नेबीसा से लिपट जाती है ।]

रमादेवी (आह्लाद के साथ) सरसा बुआ ! ओ, सरसा बुआ आ गयीं ! सरसा बुआ मेरी ! (मुखड़ा नेबीसा की छाती पर झुकाती है ।)

नेबीसा रमा ! तुम इतनी बड़ी हो गयीं ! तुम इतनी बदल गयीं ! तुम कहाँ से आ रही हो ?

कुमार मेनोन संध्या के समय तुम कहाँ से लौटी हो ? और यह सब साज-सिंघार करके ?

रमादेवी (शोभ को बचा कर) बता दूँ ? मुझे बहुत कुछ कहना है । अभी आऊँगी । बड़ी बुआ भी आ गयी ! आज का दिन बड़े सौभाग्य का है ! चलिए सरसा बुआ, मेरे कमरे में चलें । माँजी अभी आप लोगों से नहीं मिलीं ? (नेबीसा को जबरदस्ती करके ले जाती है । जाती हुई मुड़ कर पार्वती भग्मा से) बड़ी बुआ, आप भी आईए । लायक बातें सुनाऊँगी । (बरबाजे के पास जा कर घूम कर खड़ी रहती है) छोटी बुआ, यह देखा ? (दायाँ हाथ उठाकर छिगुनी में मुन्दरी दिखाती है । एक नयी मुन्दरी उसमें चमक उठती है । रमादेवी और नेबीसा जाती हैं ।)

पार्वती अम्मा (उठ कर) मैं जा रही हूँ भैया ! (झाँसती है) यह मेरी अन्तिम प्रार्थना थी । (जाती हुई) अब आगे मैं भैया से शायद ही मिल सकूंगी ! (धूम कर खड़ी रहती है और माँ की तस्वीर की ओर देख बिकार के आवेश में) माँ ! मेरी माँ ! मैं जा रही हूँ ! (जाती है । कुमार मेनोन उसकी ओर ध्यान नहीं देते)

विमलादेवी (दुःख के साथ) हाय ! पार्वती जीजी का यह हाल ! मैं भी जाती हूँ । (जाना चाहती है)

कुमार मेनोन विमला ! तुम ठहरो यहाँ ।—रमा तुमको क्या दिखा रही थी ? वह कहाँ से लौट रही थी । मालूम होता है, वह बुरी तरह उत्तेजित है ।

विमलादेवी भैया, वह तो विशेष ढंग की साइकालजिकल टाइप है । मैंने अपनी कापी में जो टिप्पणियाँ लिख रखी हैं, भैया को दिखा दूँगी । अगर पीछे हटाने की कोशिश करें तो आत्मघात कर लेगी । इसमें सन्देह नहीं । इस टाइप के केस का अंत आत्मघात है ।

कुमार मेनोन (बीच में रोकते हुए) 'हटाने की कोशिश' का क्या मतलब है ?

विमलादेवी भैया, रमा की शादी की बात जो आप कर रहे हैं, फिलहाल आप छोड़ दें या स्थगित कर दें ।

कुमार मेनोन (उठकर) क्या कहा ? क्या ? यह क्यों ?

विमलादेवी वह अपनी छिगुनी में एक नयी मुन्दरी मुझे दिखा रही थी ।

कुमार मेनोन नयी मुन्दरी ? किसकी मुन्दरी ? यानी (तनिक अवकाश) तुम नहीं बताओगी ? मेरा कुछ अन्दाजा है !—अरी वह मुन्दरी किसकी है ? बताओ न ? (विमला मौन) रमा !

औरी रमा ! --इसमें जरूर ही कुछ षड्यन्त्र या छल-कपट है । सन्देह नहीं !

रमादेवी (प्रवेश करके) डैडी ने बुलाया ? मैं तो बुआ लोगों से बातें कर रही थी ।

कुमार मेनोन (घागो बढ़कर रमा का हाथ पकड़ लेते हैं) तुम पागल हो ? तुम क्या कह रही थीं ? (हाथ फेर कर मुन्दरी देख कर) यह मुन्दरी कहाँ मिली ? यह किसकी है ? (हाथ जोर से दबाते हैं)

रमादेवी (हाथ छुड़ाने की कोशिश करती है) ऊफ़ ! मेरा हाथ ! छोड़ दें । डैडी छोड़ दें । (हाथ छुड़ा लेती है)

कुमार मेनोन तुम्हारी शादी की बातें पक्की हो गयीं, क्या तुम नहीं जानतीं ?

रमादेवी मेरी शादी की ? किसी ने मुझे नहीं बताया । फिर मैं कैसे जान लूँ ?

बिमलादेवी (व्यंग से) तुमसे भाभी ने भी नहीं बताया ?

रमादेवी (हल्के स्वर में) भाभी ने भी नहीं बताया । देवरानी ने भी नहीं बताया । और न मैं अठारहवीं सदी की खानदानी औरत बन कर जीना चाहती हूँ । ऊफ़ ! मेरा हाथ कैसा दर्द कर रहा है ! ऊफ़ ! डैडी ने बुरी तरह दबा दिया ! (सिसक-सिसक कर रोती हुई जाने को मुड़ती है)

कुमार मेनोन ठहर जाओ । (रमादेवी ठहर जाती है) यह बात पक्की हो गयी कि तुम्हारी शादी तुम्हारे बड़े मामा के पुत्र श्रीधर के साथ मेष के आरंभ में होगी ।

रमादेवी (साहस के साथ) डैडी आप ही बड़े मामा को बता दीजिए कि इसका मोह छोड़ दें ।

कुमार मेनोन तुम यह कैसी तुनुकमिजाजी बता रही हो ?

रमादेवी (विमलादेवी से) अभी छः महीने भी नहीं हुए, उनकी स्त्री मर गयी ।

विमलादेवी छः नहीं, उससे ज्यादा हुए !

रमादेवी डेडी, आप कह दें, सालाना श्राद्ध होने दें !—उफ् ! मेरा हाथ कैसा दुख रहा है ! उफ् ! हायरे मेरे हाथ ! (रोती हुई चली जाती है । विमलादेवी भी साथ चली जाती हैं)

कुमार मेनोन अभी विमला, ठहरो वहाँ । (विमला रुक जाती है) इस निरीह लड़की को किसने धोखा दिया है ?

विमलादेवी यह धोखा नहीं है, भैया ! रमा का मन एक योग्य पुरुष पर लगा है । वह सबसे बड़ा आदर्शवादी है । उसका अंतर जैसा सुन्दर है, बाह्य भी वैसा ही सुन्दर है । वह सब प्रकार से योग्य है । भैया, आप हृदय से उसका अभिनन्दन करें ।

कुमार मेनोन आखिर आदमी कौन है ?

विमलादेवी पुष्पांगद जैसा एक सुन्दर और योग्य युवक क्या हम कभी पा सकते हैं ?

कुमार मेनोन पुष्पांगद ! (उछल कर खड़े होते हैं) छी ! कैसी बेहयाई की बातें कर रही हो ? वह किस जाति का है, तुम जानती हो ? वह ! छी ! छी ! वह ! बदमाश ! उसको और इसको मैं—पागल कुत्तों की तरह मार डालूंगा । इसी बदमाश को फ्रैक्टरी का मैनेजर बनाने को तंपी ने कहा ?

विमलादेवी अगर उसके लिए पुष्पांगद राजी हो तो कितना अच्छा होगा ! बल्कि—

कुमार मेनोन (आवाज धीमी करके) छी ! अगर यह कोई जान ले तो कितना बुरा होगा ? क्या यह उसके घर गयी थी ? अब कितनों को इस बात का पता लग गया होगा ! छी ! छी ! उसकी मुन्दरी इसने पहन रखी है । (आवाज ऊँची करके)

मैं अब आगा-पीछा देखे बिना दोनों को गोली मार दूंगा ।
इतना धिक्कार ! इतनी धृष्टता !

विमलादेवी : गोलो मारेंगे तो आपको जेल जाना पड़ेगा भैया ! इसमें
फायदा क्या है ? इससे खानदान की बेइज्जती बढ़ेगी या
घटेगी ?

कुमार मेनोन : तुम अन्दर जाओ ! मेरी आँखों के सामने से चलो जाओ ।
यह सब तुम्हारे षड्यंत्र का फल है । मैं जानता हूँ ! मुझे
मालूम है । यहाँ न ठहरना । हूँ चली जाओ । अभी इन
सब का खातमा कर देता हूँ । (बेचैनी में इधर-उधर घूमते
हैं) ये कैसे शैतान हैं ! तुमसे यहाँ से चले जाने को कहा
न ? (हाथ उठा कर विमला की ओर बढ़ते हैं ।)

विमलादेवी : (पीछे हटती हुई) चोर नहीं मिला तो जो मिल गया उसको
पोटने की यह कैसी नीति है ! वह देखिए, कौन आ रहे
हैं ? इलेक्शन का पूरा दल आ धमका है । पोटना चाहते हैं
तो उनको पोटें, भैया ! भैया को बरबाद करने वाले दुष्ट
ये हैं ! देख लीजिए, इधर पास आ गये ! आगे बढ़ कर
उनके गाल पर दे मारिए । (कुमार मेनोन घूम पड़ते हैं ।
विमला जाती है । पुरुषोत्तमन तंपी का प्रवेश)

कुमार मेनोन : (पुरुषोत्तमन तंपी से) और कौन-कौन आये हैं ?
आइए न ?

[पुरुषोत्तमन तंपी के हाथ में नये फ्रंशन का बैग है । लिङ्की के पास
जाकर पीछे आने वालों से “तुम लोग आफिस में जाकर बैठना । वहाँ बैठ कर वह
लिस्ट तैयार करो ।” कह कर मेनोन के पास आते हैं और बड़ी तन्मयता से
उनकी ओर देखते हैं ।]

पुरुषोत्तमन तंपी : यहाँ यह क्या हो रहा है ?

- कुमार मेनोन कुछ नहीं ।
- पुरुषोत्तमन तंपी आप बहुत परेशान दिखाई देते हैं । (बैंग मेज पर रखते हैं ।)
- कुमार मेनोन कुछ नहीं । बैठिए ।
- पुरुषोत्तमन तंपी (बैठते हुए) किसी ने कहा कि यहाँ १०-१५ महिलाएँ जमा हैं ।
- कुमार मेनोन यह किसने कहा ?
- पुरुषोत्तमन तंपी उस टैक्सी ड्राइवर ने ।
- कुमार मेनोन रास्कल ! कुछ कह दिया और क्या ? दुष्ट, आवारा कहीं का ! मानवता का दुश्मन !
- पुरुषोत्तमन तंपी आप को जैसे इनफ्लुएंजा ने घेर लिया है ! आप भी बैठिए । कौन-कौन आयी हैं ?
- कुमार मेनोन (बैठते हुए) पार्वती आयी हैं ।
- पुरुषोत्तमन तंपी मिसिस चिनगारी ? कुछ टर्म्स लेकर ?
- कुमार मेनोन देखने पर कोई जल्दी पहचान न सकेगा । इतनी दुबली-पतली बन गयी है ! और बाल चाँदी की तरह सफेद हो गये हैं !
- पुरुषोत्तमन तंपी आप बड़ी विचित्र बातें बता रहे हैं ।
- कुमार मेनोन यह क्यों ?
- पुरुषोत्तमन तंपी इस नगर में कोई ऐसी स्त्री नहीं दिखाई देती जिसके बाल सफेद हो गये हैं ! ६०-६५ साल की बड़ी-बूढ़ियों के बाल भी मेघ-पटल जैसे कजरारे दिखते हैं । (हँसते हैं ।) एक बुढ़िया से पूछा तो उसने बताया कि हमारी ह्वाटर-सप्लाय में कोई विशेषता है जिसके कारण आज कल तिरुवनन्तपुरम के लोगों के बाल नहीं पकते हैं । (कहकहा लगा कर हँसते हैं)

- कुमार मेनोन** स्याल, यह हँसी-दिल्लगी का समय नहीं है । (दुःख-स्वर)
ऐसा दुःखपूर्ण दिन मेरे जीवन में कभी नहीं आया ।
- पुरुषोत्तमन तंपी** (दुःख का बहाना करके) प्रिय बहनोई, सच पूछिए तो आज का दिन मेरे लिए भी बड़े दुःख और क्लेश का दिन है । जो पैसा पास में था सब खर्च हो गया ! पैसे-पैसे का हिसाब रखा है । इस सब की कुछ परवाह नहीं है । उस पुष्प-बाण को वश में करने का मेरा सारा यत्न विफल हुआ ! मुझे बड़ा खेद है ।
- कुमार मेनोन** (गुस्से में आकर) आवारा कहीं का ! रास्कल ! गुण्डा ! बदमाश ! ब्लडो रास्कल ! स्कौडल !
- पुरुषोत्तमन तंपी** (इस सन्देह से कि गालियाँ उनके प्रति हुई हैं) गालियाँ किसको लक्ष्य करके हो रही हैं ?
- कुमार मेनोन** उसको उसकी राह पर जाने दीजिए ।
- पुरुषोत्तमन तंपी** (शांत होकर) क्यों ? क्या हुआ ?
- कुमार मेनोन** निरा बदमाश !
- पुरुषोत्तमन तंपी** आप उसकी ताकत नहीं जानते मिस्टर ! यही सुनने में आया है कि पाच्चुनायर पर उसका बड़ा इनफ्लूएन्स है ।
- कुमार मेनोन** सभी धूर्त उसके साथी हैं । पक्का स्कौण्डल !
- पुरुषोत्तमन तंपी** आखिर बात क्या है ?
- कुमार मेनोन** वह हमारी रमा को बदनाम करने पर तुला है !
- पुरुषोत्तमन तंपी** छो ! छो ! धीरे-धीरे बोलिए । (सोचते हैं ।) ओ ! ओ ! इसीलिए तो सबेरे ही सबेरे लड़की इतनी अकड़ पड़ी ! हराम ! (आवाज बिल्कुल धीमी करके) बात कहाँ तक पहुँच गयी ?
- कुमार मेनोन** इस तरह क्यों पूछ रहे हैं ?

- पुरुषोत्तमन तंपी संभव है, दो-तीन पीढ़ियाँ ऊपर चढ़ गया हो ।
- कुमार मेनोन (मतलब न समझ कर) यानी ?
- पुरुषोत्तमन तंपी यानी बहुत आगे बढ़ गया ।
- कुमार मेनोन बहुत आगे बढ़ गया ?
- पुरुषोत्तमन तंपी सख्त बीमारी का भी इलाज हो सकता है ।
- कुमार मेनोन इलाज ?
- पुरुषोत्तमन तंपी हर हालत में लायक इलाज होना चाहिए । किसी के लिए एक गोली काफ़ी होगी । किसी के लिए दो डोज़ मिक्सचर जरूरी होगा । किसी का इलाज इन्जेक्शन से ही हो सकेगा । कभी-कभी जरूरत पड़ने पर सिसेरियन आपरेशन करना पड़ेगा । (हँसते हैं) उसका हठ देख कर मुझे लगता है कि आदमी ज़रा खराब है ।
- कुमार मेनोन (गुस्से में भरकर) आज ही मैं उसका काम तमाम कर दूँगा । उस पर यकीन करके मैंने उसको घर में आने दिया । बदमाश ! रास्कल ! अपनी जाति का रंग दिखाये बिना कैसे रहेगा । (उठ कर टहलने लगते हैं)
- पुरुषोत्तमन तंपी (भाव बदल कर, आवाज़ धीमी करके) बहनोई, यहाँ आकर बैठ जाइए । (कुमार मेनोन बैठते हैं) आप भी कैसे नादान आदमी हैं ? तब भी आप चाहते हैं कि राज्य पर शासन करें । चाहे आसमान ही गिर पड़े लेकिन बैलेन्स नहीं छोड़ना । सच्चा शासक वह है, जो एक घूंट में पाँच बोतलें पी जाये, लेकिन हिले नहीं । (हँसते हैं)
- कुमार मेनोन अभी हमारे आगे राज्य-शासन की बात नहीं है ।
- पुरुषोत्तमन तंपी घर का शासन सही, जानते हैं, अब हमें क्या करना चाहिए ?
- कुमार मेनोन कहिए ?
- गी० नं०—७

पुरुषोत्तमन तंपी लड़की मनमानी है, लेकिन नासमझ । निदान समझ कर इलाज करना होगा । समझे ?

कुमार मेनोन नहीं समझा ।—

पुरुषोत्तमन तंपी देख लीजिए, इस हफ्ते में कोई अच्छा मुहूर्त है ।

कुमार मेनोन और ?

पुरुषोत्तमन तंपी और पुरुषोत्तमन तंपी के बड़े पुत्र चिरंजीव श्रीधर के साथ कुमार मेनोन की पुत्री सुश्री रमादेबी का विवाह कर देना ।

कुमार मेनोन इतनी जल्दी ? इस दौड़-धूप के बीच में ? यहाँ तो सारी चीजें उल्टी पड़ी हैं ।

पुरुषोत्तमन तंपी (मुँह फुला कर) मैं तो कितनी बार कह चुका । फिर सोचना चाहते हैं । बातें और बिगड़ जाने से पहले मेरा कहा मान लेना अच्छा है । श्रीधर के कानों में यह बात पहुँच जायेगी तो क्या फिर वह इसके लिए तैयार होगा ? श्रीधर की बात छोड़ दीजिए । कोई दूसरा सही, फिर इस ओर भूल कर भी देखेगा ? आप सीच लीजिए, यहाँ क्या हुआ है ? लोगों के बीच में कानाफूसी के लिए इससे ज्यादा क्या चाहिए ? छी ! छी ! (निष्ठा का भाव दिखाती हैं ।)

(दो घड़ी मौन)

कुमार मेनोन इस लड़की ने इतना अनर्थ कर रखा !

पुरुषोत्तमन तंपी मिस्टर, आप से साफ़-साफ़ सब बता देता हूँ । इसकी माँ का भी यही हाल था ।

कुमार मेनोन (आश्चर्य के साथ) श्रीकुमारी का ?

पुरुषोत्तमन तंपी जी हाँ श्रीकुमारी ही का । वह तो आज भक्तोत्तंस और पतिव्रता बन बैठी है ।

- कुमार मेनोन** (कुतूहलता से) श्रीकुमारो ने क्या किया ?
- पुरुषोत्तमन तंपी** पिताजी के पूर्व परिचित व्यक्तियों में किसी का पुत्र एक मुकुन्द पणिक्कर जो कहीं दूर उत्तर कैरल का निवासी था और संस्कृत कालेज में महामहोपाध्याय क्लास में पढ़ रहा था पोनुकुम्भुमेल घर के पड़ोस में रहता था ।
- कुमार मेनोन** और ?
- पुरुषोत्तमन तंपी** पिताजी संस्कृत के बहुत प्रेमी थे । वास्तव में पणिक्कर बड़ा विद्वान् था । लेकिन बड़ा गरीब था, फ़ीस देने के लिए भी उसके पास पैसा नहीं था । यह देख कर पिताजी ने उसको श्रीकुमारो का ट्यूशन मास्टर नियुक्त किया ।
- कुमार मेनोन** श्रीकुमारो ने आज तक संस्कृत सीखने की बात मुझसे नहीं कही ।—
- पुरुषोत्तमन तंपी** कोई स्त्री अपने पति से ऐसी बातें कभी बतायेगी ?
- कुमार मेनोन** नहीं बतायेगी और वही हुआ ! और ?
- पुरुषोत्तमन तंपी** कोई डेढ़ वर्ष तक गुरु-शिष्य संबंध रहा होगा ।
- कुमार मेनोन** (असूया के साथ) आदमी बड़ा सज्जन रहा होगा ?
- पुरुषोत्तमन तंपी** इसी कारण लड़की भ्रम में पड़ गयी ! हमारे छोटे डाक्टर भाई और वह “कैरल जिघाने” के सदस्य थे । वह कालेज का स्पोर्ट्स चैंपियन भी था । उसका चेहरा-मौहरा बहुत ही सुन्दर और बदन गढ़ा हुआ था ।
- कुमार मेनोन** (उत्साह होकर) और ?
- पुरुषोत्तमन तंपी** यही समझिए कि आज बेटी जो दृश्य दिखा रही है वैसे ही दृश्य उस फ़्लेमिश गूस ने भी दिखाया ।
- कुमार मेनोन** ऐसा ! और ?

पुरुषोत्तमन तंपी मैं अभी बता रहा था न। वही चाल हमने चली। उस उपा-
धिधारी छोटे-से कर्मचारी 'ईडियेट' को ढूँढ़ निकाला—
—मेरा सिर घूम रहा है ; क्षमा करना ! बिना सोचे-
समझे मैं कुछ कह गया। (सिर झुबलाते हैं।) आपको याद
होगी, आपका ब्याह झटपट किया गया था। बड़े-बड़े खान-
दानों में ऐसी बातें हुआ करती हैं। मिस्टर, बिनब्याही
सयानी लड़कियों के पीछे बदनामी लगी रहती है।

कुमार मेनोन (बड़ी उत्कंठा के साथ) और मुकुन्द पणिक्कर का क्या
हुआ ?

पुरुषोत्तमन तंपी आज का ज़माना नहीं था। हमने उस बदमाश को मनमाना
मिटवाया। चतुर्शाला के अन्दर बन्द करके उस पर कोड़े-
चाबुक मारे गये।

कुमार मेनोन ऊफ़ ! बड़ा बुरा किया !

पुरुषोत्तमन तंपी उन दिनों पिताजी की कठोर आज्ञा के विरोध में जीभ
हिलाने का सामर्थ्य किसी में नहीं था। लोगों को जीभ
उखाड़ डालने का डर लगा रहता था। फिर कुमारी शादी
के दिन ही बाहर आ सकी।

कुमार मेनोन रातोंरात मुकुन्द पणिक्कर का काम तमाम किया गया होगा ?

पुरुषोत्तमन तंपी वह तो रातोंरात भाग गया !

कुमार मेनोन बेचारे ने आत्मघात किया होगा !

पुरुषोत्तमन तंपी चार-पाँच वर्ष बाद हमारे छोटे भाई गोविन्द से पता लगा कि
संन्यासी के वेष में वह काशी में मिला था।

कुमार मेनोन तो हमारी मिसिस आत्मघात का कारण नहीं बनीं, अच्छा
हुआ !

पुरुषोत्तमन तंपी उसी माता की यह बेटो है । माँ नाचने वाली होगी तो लड़की भी नाचने और कूदने वाली बनेगी ! अब आप जल्दी ही आवश्यक बातें—(बाहर “लेटर लेटर” !)

कुमार मेनोन (उठ कर लिङ्की के पास जाकर) कहाँ से ?
(बाहर से वह आवाज—“प्रोफ़ेसर पुष्पांगद का भेजा”)
(कुमार मेनोन खत लेने में संकोच करते हैं ।)

पुरुषोत्तमन तंपी (आज्ञा के स्वर में) ले लीजिए । (कुमार मेनोन खत लेकर बत्ती के पास लाकर सरसरी दृष्टि से एक बार पढ़ते हैं । फिर उसको मेज पर फेंक देते हैं ।) क्या है ?

कुमार मेनोन लिखा है, बहुत सोचने-विचारने के बाद उसने नौकरी स्वीकार कर ली ।

पुरुषोत्तमन तंपी (उत्साह के साथ उछल कर लड़के होते हैं ।) अच्छा ! कहाँ है, जरा देख लूँ ? (खत हाथ में लेते हैं ।)

कुमार मेनोन क्यों देखना चाहते हैं ? हमें नहीं चाहिए । कुत्ता ! रास्कल ! जो हो, हम नहीं चाहते ।

पुरुषोत्तमन तंपी (आवाज बदल कर) आप ईडियेट की तरह काम न करें । समय के अनुसार रूप बदलना होगा । आज नीति का महत्व है । नीति पर चलने वालों को राजनीति से पीछे हटना अच्छा है, (खत देखते हुए) तो कल से हम उसको नियुक्त करेंगे । (बैठते हैं ।)

कुमार मेनोन पूरा खत पढ़ा होगा ? आखिर की कंडीशन भी !

पुरुषोत्तमन तंपी (खत फिर पढ़ते हैं ।) और श्रमजीवियों से प्रोप्राइटर किसी तरह का नाता न रखें । (कुमार मेनोन से) फ़िलहाल कोई भी कंडीशन हम स्वीकार कर लें मिस्टर ! किसी तरह काम बन जाये ! फिर इन सबको गला पकड़ कर निकाल

रेने में दिक्कत क्या है ? (हँसी) ओह ! ज़रा शांति मिली ! हम अब आफ़िस जाकर—(उठते हैं ।) इन सब को समझा-बुझा कर—(श्रीकुमारी अम्मा का प्रवेष्ट । हाथ में आरती का थाल है जिसमें कपूर जल रहा है ।) शकुन्त प्रच्छा है ! सब मंगल होगा । (दोनों के आगे श्रीकुमारी अम्मा थाल बढ़ा देती हैं ! वे दोनों हाथों से कपूर की ज्वाला का आवाहन करके आँखों पर लगाते हैं ।) तुम्हारे स्वामीजी के लौट जाने से पहलै मैं एक बार उनका दर्शन करना चाहता था ।

श्रीकुमारी अम्मा

अभी वे वापस नहीं गये !

पुरुषोत्तमन तंपी

ऐं, अभी नहीं लौटे ? सबेरे ही सबेरे आये थे ?

श्रीकुमारी अम्मा

वे भक्तवत्सल हैं, उन्होंने मेरी प्रार्थना स्वीकार कर ली । मेरे आग्रह करने पर उन्होंने यहीं भोजन कर लिया । बड़े भाई से मिलने की प्रतीक्षा में अब भी वें पूजागृह में बैठे हैं । (थाल मेज के ऊपर रख कर पास ही खड़ी रहती हैं । कपूर की ज्वाला की अरुण आभा उनके चेहरे पर पड़ती है ।)

कुमार मेनोन

(श्रीकुमारी की ओर देखकर) श्रीकुमारी तो आज भक्ति के नशे में खूर हैं । संस्कृत वाले सब ऐसे हैं । (बह समझ कर श्रीकुमारी ध्यान नहीं दे रही हैं । तंपी से) स्याल, एक काम करना ! ऊपर जाकर स्वामीजी से ज़रा बातें कर लीजिए । मैं आफ़िस में जाकर इलेक्शनवालों से बातें कर लूँगा । (कुछ फाइलें हाथ में लिए उठते हैं और श्रीकुमारी की ओर इस तरह देखते हुए जैसे वह कोई बिचित्र वस्तु है, चले जाते हैं ।)

पुरुषोत्तमन तंपी

मैं भी पीछे आ जाऊँगा । (कुमार मेनोन चले गये) मुझे स्वामीजी से मिलने का कोई विशेष प्रयोजन नहीं है । हाँ भक्तजनों के बोट हमें दिलाने की प्रार्थना करना चाहता हूँ ।

- श्रीकुमारी अम्मा यह सब ठीक हो जायेगा ! (स्वर बदल कर) बड़े भैया, मैं कुछ विशेष बातें आपसे कहना चाहती हूँ ।
- पुरुषोत्तमन तंपी कहो !
- श्रीकुमारी अम्मा आप ही मेरे जीवन की सारी बातें जानते हैं ।
- पुरुषोत्तमन तंपी इसलिए ?
- श्रीकुमारी अम्मा इस जीवन से मैं बाज आयी !
- पुरुषोत्तमन तंपी तुम बाज आयीं ? (गौर से देख कर) क्यों ? तुमने अपने गहने कहाँ छोड़ दिये ?
- श्रीकुमारी अम्मा स्वामीजी के मन्त्रमुग्ध दिव्य उपदेश आज मुझे प्राप्त हुए !
- पुरुषोत्तमन तंपी और ?
- श्रीकुमारी अम्मा हम जिनको बड़ा समझते हैं वे बड़े नहीं हैं ।
- पुरुषोत्तमन तंपी इसलिए ?
- श्रीकुमारी अम्मा यह गृहस्थ जीवन मैं छोड़ रही हूँ । आगे मेरा निवास आश्रम में होगा ।
- पुरुषोत्तमन तंपी बेवकूफी और क्या ?
- श्रीकुमारी अम्मा मैं तीर्थ पर जाना चाहती हूँ । हरिद्वार, बदरीनाथ और ऋषीकेश की मैं यात्रा करूँगी । जाने-अनजाने जो पाप किये, मैं उसका प्रायश्चित्त करूँगी ।
- पुरुषोत्तमन तंपी इलेक्शन जीत कर हम सब एक साथ तीर्थों की यात्रा करें । कोई उपाय ढूँढ़ लेंगे कि यह काम आफ़ीशली सम्पन्न हो जाये । अगर तंपी के शरीर में प्राण रहें तो यह कार्य हो जायेगा ।
- श्रीकुमारी अम्मा (तंपी की बातों को अनसुना करके) स्वामीजी कल जा रहे हैं ।
- पुरुषोत्तमन तंपी वे जाकर वापस आ जायें । हमारे पाँच हजार उनको मिल गये ! आराम से जाकर वापस आ जायें ।

- श्रीकुमारी अम्मा मैं भी उनके साथ जा रही हूँ ।
- पुरुषोत्तमन तंपी क्या तुम पागल हो ?
- श्रीकुमारी अम्मा इस दुनिया के सब लोग पागल हैं ।
- पुरुषोत्तमन तंपी तुम क्या बक रही हो ?
- श्रीकुमारी अम्मा दूसरों की गति-विगति को न समझने वाले उनको पागल कहते हैं ।
- पुरुषोत्तमन तंपी तुमने कैसा भद्दा रूप बना रखा है ?
- श्रीकुमारी अम्मा मेरा असल रूप अभी आपने नहीं देखा । बड़ी भर ठहरिए तो मैं वापस आ जाऊँगी । (झट जाती हैं ।)
- पुरुषोत्तमन तंपी (बिह्वेष्ट और निहा के साथ) यह कैसी नासमझी है ! कैसा अनर्थ हो रहा है ? सब उलट-पलट रहे हैं । (श्रीकुमारी अम्मा गेरए कपड़ों में वापस आती हैं ।) यह कैसा अनर्थ है ? सब उल्टे पैर चल रहे हैं । (आश्चर्य के साथ बेसते हैं ।)
- श्रीकुमारी अम्मा आगे यही मेरा वेष रहेगा । इसी में मेरा आनन्द है !
- पुरुषोत्तमन तंपी तुम पर उसने मेसमैरिज्म फूँका है ? वह कोई जादूगर है ! मैं उसको ज़रा समझ लूँगा ।
- श्रीकुमारी अम्मा वे आपसे मिलने की प्रतीक्षा में बैठे हैं ।
- पुरुषोत्तमन तंपी जादू-टोना करके उसने तुम्हारी पेंच ढीली कर दी ?
- श्रीकुमारी अम्मा मुझे मालूम है कि मेरी पेंच ढीली नहीं है ।
- पुरुषोत्तमन तंपी तुम नहीं जानतीं कि यहाँ कैसे-कैसे अनर्थ आ पड़े हैं ।
- श्रीकुमारी अम्मा मैं सारी बातें जानती हूँ ।
- पुरुषोत्तमन तंपी पुष्पांगद रमा को प्यार करता है ।

- श्रीकुमारी अम्मा यह मैं पहले से जानती हूँ । उसने खुद मुझसे कहा था ।
पुरुषोत्तमन तंपी तो तुमने क्या किया ?
- श्रीकुमारी अम्मा पुष्पांगद के समान योग्य युवक मिलना मुश्किल है ।
पुरुषोत्तमन तंपी तुम यह क्या कह रही हो ?
- श्रीकुमारी अम्मा सच कह रही हूँ ।
पुरुषोत्तमन तंपी तुम राज़ी हो ?
- श्रीकुमारी अम्मा गुरुदेव के उपदेशों के प्रकाश में सब द्वेष-विद्वेष मेरे मन से
दूर हो गये ।
पुरुषोत्तमन तंपी तुम जानती हो कि वह किस जाति का है ?
- श्रीकुमारी अम्मा मानव जाति के लिए पवित्र चरित्र, उत्तम धंधा, उच्च
संस्कृति आदि से बढ़ कर क्या चाहिए ?
पुरुषोत्तमन तंपी तुम इसकी अनुमति दोगी ?
- श्रीकुमारी अम्मा मेरी पूरी अनुमति और आशीर्वाद लीजिए ।
पुरुषोत्तमन तंपी तुम नहीं जानती कि श्रीधर के साथ रमा के ब्याह का दिन
निश्चित किया गया है ?
- श्रीकुमारी अम्मा सच पूछिए तो मैं यह नहीं चाहती । रमा के लिए यह अप्रिय
और असह्य है ।
पुरुषोत्तमन तंपी लेकिन समझ लो कि इस नींव पर भविष्य का सब कुछ
खड़ा करने का मेरा इरादा है ।
- श्रीकुमारी अम्मा यह नींव मजबूत नहीं होगी भैया । उस पर जो कुछ भी
खड़ा करने की चेष्टा करेंगे ठह जायेगा ।
पुरुषोत्तमन तंपी कुमार मेनोन की सारी आशा और अभिलाषा भी मिट्टी
में मिल जायेगी । अगर मैं आगे रह कर अपनी सारी शक्ति
का उपयोग नहीं करूँगा तो वे यह इलेक्शन कभी जीत
नहीं सकेंगे ।

श्रीकुमारी अम्मा अगर आप इस इलेक्शन से उनको पीछे हटा देंगे तो इससे उनका और राज्य का बड़ा हित होगा ।

पुरुषोत्तमन तंपी तुमको यह नहीं भूलना चाहिए कि उन्होंने पानी की तरह पैसा बहा दिया है ।

श्रीकुमारी अम्मा जल्दी पीछे हट जाने पर आगे खर्च न करना पड़ेगा ।

पुरुषोत्तमन तंपी तुम जानती हो कि कितने लोगों के सामने जवाब देने की बात है ? पार्टी को, डिस्ट्रिक्ट कमेटी को, हाई कमाण्ड को—मतलब कि बड़े से बड़ों को, समझीं ? शेष सब बेवकूफी है । सोचने लायक भी नहीं । मैंने कितना यत्न करके यह सब ठीक कर लिया है । तब भी तुम्हारा यह पागलपन ! शायद तुम सोचती होगी कि मिस्टर मेनोन इस सबके के लिए राजी हैं ।

श्रीकुमारी अम्मा भैया, आप अच्छी तरह जानते हैं कि वे भोले-भाले आदमी हैं, कोई विशेष क्षमता नहीं रखते । आप यह भी जानते हैं—पहले से जानते हैं—कि वे जल्दी प्रभावित किये जा सकते हैं । मैं सब कुछ आपको सौंप कर विदा ले रही हूँ । अपनी सारी सम्पत्ति—

पुरुषोत्तमन तंपी (घबड़ा कर) सारी सम्पत्ति— ?

श्रीकुमारी अम्मा भैया, क्यों घबड़ा रहे हैं ? मैंने वसीयत लिख रखी है ।

पुरुषोत्तमन तंपी वसीयत ? वसीयत लिख रखी है ? मेनोन की राय से तुम्हारा धन रजिस्टर कराने की मैंने सारी तैयारी कर ली है ! इधर तुमने वसीयत लिख दी ? किसके उपदेश को मान कर ?

- श्रीकुमारी अम्मा अपने गुरुजी के उपदेश को मान कर ।
- पुरुषोत्तमन तंपी इसमें उसका क्या अधिकार है ?
- श्रीकुमारी अम्मा मेरी प्रार्थना उन्होंने स्वीकार कर ली । सभी प्रमाणों को भली भाँति देखने के बाद उन्होंने उपदेश दिया ।
- पुरुषोत्तमन तंपी नियम संबंधी बात वह क्या जानता है ?
- श्रीकुमारी अम्मा कोई योग्य एडवोकेट जितना जानते हैं उससे कम नहीं । इसे पढ़ कर आपको आश्चर्य होगा । मेरे पति और उनकी तीन बहनें और हमारी दो लड़कियाँ सबको सारी सम्पत्ति यथा-योग्य बाँट देने का अधिकार उन्होंने आपको दिया है ।
- पुरुषोत्तमन तंपी तब जो कष्ट मैंने उठाये, व्यर्थ हुए !
- श्रीकुमारी अम्मा जैसा होना चाहिए था हुआ, यह सोच कर शेष जीवन बिताना सौभाग्य की बात है । आपकी क्षमता पर स्वामी जी को अभिमान है । इसलिए—
- पुरुषोत्तमन तंपी (रोक कर) न उसने मुझे देखा, न मैंने उसको । फिर इस तरह कहने का क्या मतलब है ?
- गीतानन्दजी (प्रवेश करके) पवित्र प्रेम का महत्त्व होता है । बस !
- पुरुषोत्तमन तंपी (घूम कर गीतानन्द के चेहरे पर घूर कर देखते हुए खड़े रहते हैं ।) यह क्या ! कौन है यह ? मैं अभी कह रहा था न ? क्या यही गीतानन्द स्वामी हैं ?
- गीतानन्दजी हाँ, यही गीतानन्द है । यों तो हम फिर से मिल सके ! ईश्वर की इच्छा ! कौन उसे टाल सकता है ? (बैठते हैं ।)
- पुरुषोत्तमन तंपी बड़ा धोखा हुआ ! (चकित खड़े रहते हैं ।)
- गीतानन्दजी हाँ, यह नियति का धोखा है ! और कुछ नहीं ।
- श्रीकुमारी अम्मा अपने पूर्व पुण्य से मैं इनसे फिर मिल सकी ।

- गीतानन्दजी** गीतानन्द यह समझ सका कि अब कोई सांसारिक भोगेच्छा या मोह श्रीकुमारी अम्मा में शेष नहीं है । (अज्ञोन्य)
- श्रीकुमारी अम्मा** मुझे इस बात का बड़ा आनन्द है कि मैंने अपने आध्यात्मिक गुरु और पथप्रदर्शक के रूप में इनको पा लिया ।
- पुरुषोत्तमन तंपी** (हल्के स्वर में) आध्यात्मिक गुरु ?
- श्रीकुमारी अम्मा** हाँ, मैं इस बात का अभिमान करती हूँ कि मैं अपने पूर्व-पुण्य के फल से ही ऐसा महान गुरु पा सकी हूँ । ये तो इस सदी के अद्भुत अवतार श्री बालभट्टारक, श्री नारायण, श्री अरविन्द, श्री रमण जैसे यतिवरों के सत्संग और अनुग्रह से घन्य बने हैं ।
- पुरुषोत्तमन तंपी** तुम धोखे में पड़ी हो ! तुम अपनी दशा, कुल और आयु का ख्याल करो ।
- श्रीकुमारी अम्मा** भैया, आप अब भी सन्देह कर रहे हैं । कोई भौतिक इच्छा अब मुझ में शेष नहीं है । इसका यही प्रमाण है कि मैं अपनी बड़ी भारी सम्पत्ति निर्माल्य की तरह छोड़ कर जा रही हूँ ।
- गीतानन्दजी** बड़े सोच-विचार के बाद गीतानन्द ने उपदेश दिया । वह त्रुटिपूर्ण नहीं होगा ।
- पुरुषोत्तमन तंपी** (श्रीकुमारी से) यह उपदेश जो तुम्हारी विशाल संपत्ति को छिन्न-भिन्न कर देता है, स्वीकार करने के योग्य नहीं है ।
- गीतानन्दजी** आज तक के सत्यान्वेषणों से गीतानन्द इस निष्कर्ष पर पहुँच गया है कि सामाजिक मैत्री और पारस्परिक प्रेम के मार्ग में आज की सामाजिक-आर्थिक व्यवस्था ही रोड़े अटका रही है ।

श्रीकुमारी अम्मा इस दूषित सम्पत्ति की नाशकारी प्रेरणा ने ही मुझे ऐसे एक व्यक्ति से, जिसको मैं प्राणों से अधिक प्रेम करती थी, अलग करके एक ऐसे व्यक्ति से बलात् मिला दिया जिसको मैं कभी प्रेम नहीं कर सकती थी ।

गीतानन्दजी जो हुआ सो अच्छा ही हुआ । उस समय की जो घटनाएँ कठोर और दुरदृष्ट दिखाई देती थीं, आज ईश्वर की कृपा जान पड़ती हैं । अगर छोटी माँ सुरुचि की ताड़ना न होती तो क्या राजकुमार ध्रुव को भगवान के दर्शन का सौभाग्य प्राप्त होता ?

पुरुषोत्तमन तंपी सारी बातें समझ गया । लेकिन मिस्टर मेनोन को भी इसका कुछ पता लग गया है ? मैं उनको इधर ही बुला लाता हूँ । (जाने के लिए मुड़ते हैं)

श्रीकुमारी अम्मा मैंने नहीं कहा, ऐसा न समझें । किसी बात को ठीक-ठीक समझने की चेष्टा भी वे नहीं करते । (विमलादेवी, नेबीसा और रमादेवी का प्रवेश) जो कुछ कहती हूँ उस पर ध्यान ही नहीं देते । (पुरुषोत्तमन तंपी जाते हैं)

रमादेवी (घबड़ाती हुई आगे बढ़कर श्रीकुमारी अम्मा से लिपट जाती हैं) हाय ! यह क्या हुआ मम्मी ? काषाय वस्त्र ! यह क्यों ? मम्मी आप क्या करने जा रही हैं ? स्वामी जी, यह क्यों ?

नेबीसा (गीतानन्द को देख कर और पहचान कर) ओह ! यह गीतानन्दजी ! (आदर के साथ-साथ प्रणाम करती हैं)

गीतानन्दजी (दोनों हाथ उठा कर आशीर्वाद देते हुए) डाक्टर नेबीसा को गीतानन्द का आशीर्वाद ! यह जान कर गीतानन्द अतीव सन्तुष्ट हुए कि आप श्री कुमार मेनोन की बहन हैं ।

विमलादेवी (आश्चर्य के साथ) सरसा जीजी, आप स्वामीजी को जानती हैं ?

नेबीसा ये डाक्टर साहब के गुरु हैं । दिल्ली का हमारा घर कई बार इनके पदरज से पवित्र बना है ।

श्रीकुमारी अम्मा विमला, मैं तीर्थ यात्रा पर जा रही हूँ । रमा और उमा को तुम्हें सौंप कर जा रही हूँ ।

विमलादेवी रमा को जिसे सौंपना है उसे—

श्रीकुमारी अम्मा मैं जानती हूँ । उसकी अभिलाषा पूरी होगी । मने सारा भार भैया पर सौंप दिया है । आज ही मुझे मालूम हुआ कि पुष्पांगद भी स्वामीजी के शिष्य हैं ।

रमा और (एक साथ) स्वामीजी के शिष्य ?

विमला देवी

गीतानन्दजी आश्रम की प्रत्येक चर्चा-समिति में पुष्पांगद आया करते हैं ।

श्रीकुमारी अम्मा हृदयांगम आशीर्वादों के साथ रमा को मैं पुष्पांगद के हाथों में सौंप रही हूँ । बेटा, तुम उमा की देख-भाल करना ।

रमादेवी (आह्लाद के साथ) उसे उसके मास्टर पढ़ा रहे हैं । मैं अभी बुला लाती हूँ । (जाने के लिए मुड़ती है)

श्रीकुमारी अम्मा मैं उसको इस समय देखना नहीं चाहती । (रमादेवी ध्यान न देकर भाग जाती हैं) तुम सब मिल-जुल कर प्रेम से रहो, यही स्वामीजी की अभिलाषा है ।

गीतानन्दजी (खड़े होकर) सब प्रकार के भेदभावों को भुलाकर सहोदर भाइयों की भाँति प्रेमपूर्ण जीवन-यापन से क्षेम और ऐश्वर्य प्राप्त होते हैं ।

श्रीकुमारी अम्मा मुझे इस बात का बड़ा खेद है कि मैंने सरसम्मा के पति के प्रति अपमानजनक व्यवहार किया । मेरी तरफ़ से उनसे क्षमा प्रार्थना करना ।

गीतानन्दजी गीतानन्द का अभिवादन भी उनसे कहना ।

नेबीसा उनको इसका पता नहीं था कि आप यहाँ पधारे हुए हैं ।
पता लग जाता तो दौड़ कर आ जाते !

गीतानन्दजी मैं स्वयं उनसे मिल लूंगा । सबको मेरा अभिवादन !

श्रीकुमारी, अम्मा इससे पहले कि कोई विघ्नबाधा उपस्थित हो, मैं विदा लेती
हूँ । तुम सब का भला हो !

गीतानन्दजी लोकासमस्तास्सुखिनो भवन्तु ! हरि ओं ! हरि ओं !!
हरि ओं !!!!

सब एक साथ हरि ओं ! हरि ओं !! हरि ओं !!!

